“मोरा अंगना के जागल भाग!”

स्नेहलता

का काव्य-कर्म!

(भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत:
Intangible Cultural Heritage of India
के अंतर्गत)

संगीत नाटक अकादमी
भारत सरकार
नई दिल्ली

विभा रानी

302/ए, धीरज रेसिडेंसी,
ओशिवरा बस डिपो के सामने
गोरेगाँव (पश्चिम)
मुंबई- 400104
संपर्क- 9820619161/samrathvibha2019@gmail.com

प्रस्तावना

स्नेहलता और उनके काव्य-कर्म पर काम करने के लिए मैंने संगीत नाटक अकादमी में आवेदन किया। संगीत नाटक अकादमी ने अपने अत्यंततम सीमित स्रोत के साथ मुझे इस काम को करने की अनुमति दी। मुझे ऐसे किसी कवि की तलाश थी, जिन्हें मैं भी अपने गाली गीत, महिला सशक्तिकरण व अन्य सामाजिक स्वर के गीतों के साथ गा सकूँ। ऐसे गीत, जिनमें मिथिला की ललनाओं के चुहल भी हों और जिनमें समाज और जन के प्रति चेतना और चेतनता भी हो। स्नेहलता में मुझे मेरे मन की ये तमाम चाहतें दिखी। यह संयोग है या विचित्र दुर्योग कि स्नेहलता की पदावली का संकलन, उनका विवेचन और विश्लेषण अभी तक सम्यक रूप से नहीं हो पाया है। मेरा प्रयास उनके जीवन पर थोड़ी सी चर्चा करते हुए उनके अधिक से अधिक गीतों को सामने लाने का है।

- विभा रानी

भूमंडल के अमर गोद में
मुसकाहट सुन्दर मिथिला के।
ममता भरल सरस रजकण मे
मचलाहट सुन्दर मिथिला के

अनुक्रम

1. **प्रस्तावना**

2. **स्नेहलता- एक परिचय**

3. **स्नेहलता पर विभिन्न व्यक्तित्वो के साक्षात्कार**

4. **स्नेहलता के गीत**
गीतों की विधाएँ और उनकी सूची

5. **तस्वीरें**

6 **अनुक्रम**

8. **निष्कर्ष**

10. **आभार**

11. **विभा रानी- एक परिचय**

स्नेहलता का काव्य-कर्म

1

कैसे हुई शुरुआत?

स्नेहलता आधुनिक काल में हुए मैथिली के प्राचीन भक्ति काव्य धारा के विशिष्ट रचनाकार हैं। इनकी पदावली मिथिला लोक जीवन का कंठहार है। इनके भास्वर वैदेही विवाह संकीर्तन से मिथिला गूंजती रहती है। विभिन्न अवसरों पर भजन कीर्तनों में इनकी पदावली गाई जाती हैं। सबसे पहले तो यह स्पष्ट कर दूं कि स्नेहलता कोई स्त्री नहीं है,जैसा कि उनके नाम से आभास होता है। वे सीता और राम के उपासक थे। सीता से स्नेह रखने के कारण इन्होंने अपना नाम कपिलेश्वर ठाकुर से बदलकर स्नेहलता कर लिया था और बाद में इसी नाम से वे अपनी रचनाएं करने लगे। बिहार के दरभंगा शहर के मुख्यालय लहरिया सराय से 25 किलोमीटर पर दरभंगा- समस्तीपुर मार्ग में कल्याणपुर चौक से पश्चिम प्रसिद्ध कृषि अनुसंधान केंद्र पूसा के मार्ग में 11 किलोमीटर की दूरी पर कुसियारी चौक आता है। इसी चौक से 2 किलोमीटर उत्तर पूर्व की दिशा में दरोडी ग्राम स्थित है। स्नेहलता इसी गाँव के निवासी थे।

स्नेहलता पर काम करने के लिए मुझे सबसे पहले मेरे Facebook मित्र मुकेश सागर ने उकसाया। मुकेश स्नेहलता के पड़ोसी गांव बाबूपुर के हैं और थिएटर के साथ साथ अपने पुश्तैनी व्यवसाय आदि से जुड़े रहे हैं। हमारी थिएटर जनित बातचीत के क्रम में इन्होंने स्नेहलता की जानकारी दी तो मेरी रुचि इस ओर बढ़ी, क्योंकि लोक साहित्य, लोक कथाओं, लोक गीतों और संस्कार गीतों के संकलन, गायन और प्रस्तुतीकरण में मेरी शुरू से रुचि रही है। दूसरे, विद्यापति के बाद मैं किसी ऐसे कवि या कवियों की ओर देख रही थी, जिन्होंने मिथिला के लोगों की धड़कन को समझते हुए उनके हृदय में पैठते हुए ऐसी रचना की हो, जो कबीर या तुलसी के साहित्य जैसा साहित्य होते हुए भी कबीर या तुलसी के साहित्य से परे हो और जो आम जन के अपने कंठहार में बस गया हो। साथ ही, मुझे भी विद्यापति से अलग ऐसे किसी कवि की तलाश थी, जिन्हें मैं भी अपने गाली गीत, महिला सशक्तिकरण व अन्य सामाजिक स्वर के गीतों के साथ गा सकूँ। ऐसे गीत, जिनमें मिथिला की ललनाओं के चुहल भी हों और जिनमें समाज और जन के प्रति चेतनता भी । स्नेहलता में मुझे मेरे मन की ये तमाम चाहतें दिखी।

स्नेहलता और उनके काव्य-कर्म पर काम करने के लिए मैंने संगीत नाटक अकादमी में आवेदन किया। संगीत नाटक अकादमी ने अपने अत्यंततम सीमित स्रोत के साथ मुझे इस काम को करने की अनुमति दी।

*

स्नेहलता की पदावली मुख्य रूप से मैथिली में मिथिला के भाव और राम की भक्ति में मधुर उपासना को व्यक्त करता है, जो मैथिली साहित्य का एक विशिष्ट अंग है। इसमें मैथिली राम काव्य को लोक जीवन से जोड़कर रखा गया है। इनके वैदेही विवाह मैथिली की परंपरागत नृत्य कीर्तनिया का एक जीवंत स्वरुप है। इस नाते ये आज भी लोगों के मनोरंजन के अन्य साधन के रुप में मौजूद हैं। कहा जा सकता है कि स्नेहलता की पदावली भारतीय राम काव्य की परंपरा में मिथिला की विशिष्ट देन है। यह अन्य रामकाव्य की तरह ही भारतीय समाज और संस्कृति के बीच के समन्वय का मुख्य स्रोत रहा है।

मैथिली साहित्य के आधुनिक युग के संक्रांति काल में मैथिली के मनीषी और साहित्यकारजन मैथिली साहित्य की विभिन्न विधाओं की रचनाओं की प्रचुरता को बनाने और उसे संपुष्ट करने में लगे हुए थे। भाषा के रूप में मैथिली की मान्यता और अधिकार के लिए वे आज के मैथिलीचेती की तरह संघर्षरत थे। इसके लिए वे स्थानीय लोक पर्व और दिवसों का आवाहन कर रहे थे और इसप्रकार मिथिला के लोगों के बीच एक जन-चेतना लाने का प्रयास कर रहे थे। विद्यापति पर्व, जानकी नवमी, विवाह पंचमी आदि स्थानीय पर्व हैं, जिनके नाम पर वे भाषाई प्रतिबद्धता को विज्ञापित करने के लिए लोक जीवन में जागरण का मंत्र फूंकने के आकांक्षी थे । इसी समय में मिथिला में दीक्षित संत और भक्त कविगण वैदेही- विवाह की विभिन्न विधियों को केंद्र में रखकर मिथिला के भाव से संपन्न राम- काव्य की रचना की ओर उन्मुख हुए। अपने राम- काव्य की रचना के उपक्रम में वैदेही और अन्य देवी-देवता, जिनमें शंकर, पार्वती और गणेश प्रमुख हैं, इनकी आराधना की ओर भी ये प्रवृत्त हुए। असल में यह देवोपासना का सांगोपांग स्वरूप है, जिसके तहत अपने प्रमुख आराध्य की उपासना के साथ-साथ अन्य देवी-देवताओं की उपासना भी प्रमुख है।

स्नेहलता जैसे संत और भक्त अपने आराध्य की उपासना के कवियों की उसी परंपरा के रचनाधर्मी हुए हैं। इनका कवि- कर्म मैथिली साहित्य की काव्यधारा का पथ प्रदर्शक सिद्ध हुआ। यह संयोग है या विचित्र दुर्योग कि स्नेहलता की पदावली का संकलन, उनका विवेचन और विश्लेषण अभी तक सम्यक रूप से नहीं हो पाया है। मेरा प्रयास उनके जीवन पर थोड़ी सी चर्चा करते हुए उनके अधिक से अधिक गीतों को सामने लाने का है।

*

2016 के आरंभ में मैं दरोडी गांव गई । उनका गाँव देखा। उनका समाधि स्थल देखा और वह स्थान देखा, जहां स्नेहलता विवाह पंचमी के अवसर पर अपना सालाना आयोजन करते थे। दरोडी के ग्रामीणों और घर के सदस्यों से बात करने पर पता चला कि स्नेहलता के पदों का आयोजन वैदेही- विवाह, यानी विवाह –पंचमी के समय किया जाता है।

विवाह पंचमी अगहन माह में होता है। मैथिली के सुप्रसिद्ध लेखक, कवि व समीक्षक तारानंद वियोगी कहते हैं, "यह एक समय था, जब सीता को मिले दुख के कारण मिथिला के लोग अपनी बेटियों का ब्याह सर्दी में, विवाह पंचमी के दिन और पश्चिम यानी अवध या आज के उत्तर प्रदेश में नहीं करते थे। वाल्मीकि और तुलसी रामायण के अधिक प्रचलन में आने के कारण राम का वर्चस्व मिथिला में भी बढ़ा। यहाँ भी ठाकुरबाड़ी बनने लगे।"

तो विवाह पंचमी भी खूब धूम धाम से मनाया जाने लगा। स्नेहलता स्वयं इस दिन के निमित्त सात दिनों का आयोजन करते थे। तो अब बिना इस समय की प्रतीक्षा के स्नेहलता को समझा, जाना या लिखा नहीं जा सकता। मैं बेचैनी से इस समय का इंतज़ार करने लगी। इस बीच स्नेहलता की एक किताब मुझे किसी तरह मिल पाई, जिसके एक गीत ने मुझे सबसे अधिक आकर्षित किया और जिसे मैं अपने गाली-गीत के कार्यक्रम में उनके नाम के उल्लेख के साथ गाती हूँ-

राम लला सन सुंदर वर के,जुनि पढ़ियौ किओ गारी हे,
केवल हास विनोदक पूछियौ, उचित कथा दुई चारी हे।

यह आयोजन विवाह पंचमी के समय शुरु होता है। इसके पहले मैं एक बार अप्रैल-मई में मुकेश सागर के सौजन्य से दरोडी गांव गई। मुकेश के घर पर ही ठहरी। मुकेश अपनी गाड़ी से मुझे दरोडी गाँव लेकर गए और वहां स्नेहलता जी के अन्य संबंधियों से मेरा परिचय करवाया। इसमें कन्हैया जी, जो रिश्ते में स्नेहलता जी के पोते लगते हैं, से भी मुलाकात हुई और उनके दूसरे पोते से भी। इनलोगों ने ही जानकारी दी कि विवाह पंचमी के अवसर पर यह समारोह होगा। देश के अलग-अलग स्थानों से गायक बुलाए जाते हैं। सभी को निमंत्रण चला गया है। मेरी भी इच्छा हुई कि मुझे भी आमंत्रित किया जाए और मैं भी स्नेहलता के साथ साथ अपने अन्य गीत खासकर गाली गीत वहां गा सकूं। लेकिन मैंने इसके पहले खुद यहां आकर इसे देखना और इसमें शामिल होना उचित समझा। इस तरह 2016 में मैं अपनी टीम के साथ यहां आई।

दरोडी एक छोटा-सा गांव है। यहां होटल वगैरह नहीं हैं। इस समारोह में आनेवालों के लिए ठहरने की होटल जैसी कोई व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह पूरे गांव का आयोजन है। इसलिए, सभी के दरवाजे पर लोगों के स्वागत के लिए बिस्तर लग जाते हैं। लोग समारोह देखते हैं और जिस भी दरवाजे पर चाहे, वहां जाकर सो जाते हैं। पुआल के गद्दे और उसके ऊपर बिछी चादर पर लोग अपनी थकान उतारते हैं। घर के लोग उन्हें चाय तथा नाश्ते या भोजन आदि के साथ उनका यथासंभव सत्कार करते हैं। मुझे स्नेहलता के पोते व गायक कन्हैया जी के यहां ठहराया गया। कन्हैया जी की पत्नी बेहद सुंदर, उतनी ही मृदुभाषी, उतनी ही दिलचस्प और जीवंतता से भरी हुई थीं। कन्हैया जी की दो बहनें भी इस समारोह में शामिल होने के लिए अपनी-अपनी ससुराल से आ गई थीं। इन दोनों बहनें ने बताया कि बचपन में वे दोनों राम- जानकी बनती

थीं। उसके बाद जब वे थोड़ी बड़ी हुई तो उस आयोजन में गीत भी गाने लगी थीं। बाद में मिथिला की आम लड़की की तरह शादी होने के बाद यह सब छूट गया।

सात दिनों का आयोजन पहले पाँच दिन और अब तीन दिनों में सम्पन्न होता है। इसमें राम और सीता के विवाह की सारी विधियां मंचित या अभिमंचित की जाती हैं। अपने तीन दिनों के प्रवास में और तीन दिनों के आयोजित इस समारोह में मैं जितना इकट्ठा कर सकती थी, उतने गीत मैंने संकलित किये हैं। वहाँ के लोगों के आश्वासन, मेरे विश्वास और अथक प्रयासों से मैंने कुछ गीत संकलित किये हैं। इसके लिए दरोडी की यात्राएं की। कन्हैया जी तथा अन्यों के साथ हुई बातचीत के कुछ अंश भी इसमें हैं, जिनके माध्यम स्नेहलता को समझने में सहायता मिलती है। कई गीत मैं भी गाती हूं । इनके लिंक किताब के अंत में दिए गए हैं ।

*

स्नेहलता की सारी रचनाएं प्रकाशित नहीं हैं। सिर्फ एक किताब प्रकाशित है, जो मुझे लहेरियासराय, दरभंगा में मिली। स्नेहलता के गायक पोते कन्हैया जी ने बताया कि तीन किताबें हैं- वैदही विवाह संकीर्तन, विनय पदावली और स्नेहलता चेतावनी। परंतु पुस्तकें अप्राप्य हैं। मैथिली के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री योगानंद झा, जिन्होंने साहित्य अकादमी के सौजन्य से स्नेहलता पर मोनोग्राम प्रकाशित किया है, वह मिला। वहां लोगों से बातचीत करके भी बहुत अधिक जानकारी नहीं मिल सकी। स्नेहलता जी के इकलौते पुत्र, जो वहां डॉक्टर हैं, उनसे एक बार मुलाकात हो पाई। स्नेहलता जी की बेटी से मुलाकात हुई। लेकिन, बहुत अधिक बात नहीं हो पाई। जिस घर में स्नेहलता रहते थे और जिस कोठरी में उनका देहावसान हुआ, उस कोठरी को देखने का मुझे मौका मिला। मैं इन सब को अपने इस शोध में देने की कोशिश कर रही हूँ।

साथ ही, यह भी बताना चाहूंगी कि यह इस देश का दुर्भाग्य है कि रचनाकार के निधन के बाद उनके नाते- रिश्तेदार या तो उनकी अहमियत नहीं समझते या समझने पर कुछ इतना अधिक समझ लेते हैं कि उनकी कृतियों को बाहर लाने नहीं देते। नतीजा वह सब जप्त की हुई सामग्री की तरह उनके अपने तहखाने में दबे रह जाते हैं । कन्हैया जी ने दावा किया कि उनके पास स्नेहलता जी के 1000 से अधिक बल्कि,लगभग डेढ़ हजार के करीब गीत उपलब्ध हैं । लेकिन, उन्हें शायद यह लगा कि उन गीतों के जनता तक आ जाने से शायद उन गीतों पर उनका एकाधिकार छिन जाएगा। दिक्कत यह रही कि वे अपनी मंशा में खुलकर भी सामने नहीं आए कि वह आखिर इन गीतों को क्यों नहीं सर्वसाधारण के लिए उपलब्ध करवा रहे हैं या वह इन गीतों के माध्यम से क्या चाहते हैं। जाहिर सी बात है, कोई कितना भी बड़ा कलाकार हो, वह इन डेढ़ हजार गीतों को कभी भी नहीं गा सकता । गायकों, कवियों के साथ एक बात यह भी हो जाती है कि उनकी अगर 10 रचनाएं ज्यादा प्रसिद्ध हो गई तो वह उन रचनाओं में टाइप- कास्ट हो जाते हैं और जगह-जगह उन्हें इच्छा से या मजबूरी से, उन्हीं गीतों को गाना पड़ता है या कविताओं को सुनाना पड़ता है। इसलिए भी डेढ़ हजार गीत कोई भी गायक नहीं गा सकता। लेकिन

डेढ़ हजार गीतों का साहित्य सामने आने पर आज के लिए और भविष्य में जब कभी स्नेहलता जैसी शख्सियत पर लोग शोध करेंगे, उनके बारे में और जानना चाहेंगे, ये गीत उनकी मदद करेंगे।

2

साक्षात्कार व बातचीत

स्नेहलता के बारे में विस्तार से जानने के लिए मैंने दारोडी के अलावा दरभंगा, पटना आदि की यात्राएं कीं। मेरे लिए सबसे प्रमुख जानकारी थी पद्म भूषण से सम्मानित श्रीमती शारदा सिन्हा, जिनहोने अपने सुमधुर कंठ स्वर से स्नेहलता के गीत गाकर उन्हें जन मानस के गले में सुरक्षित कर दिया। उनसे हुई बातचीत के अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों से हुई बातचीत इसप्रकार हैं- विविध साक्षात्कार व बातचीत हैं। ये साक्षात्कार व बातचीत निम्नलिखित के हैं-

सर्वश्री-

1. पद्मभूषण शारदा सिन्हा- प्रख्यात लोक गायक
2. योगानन्द झा- स्नेहलता नामक मोनोग्राफ व मैथिली के लेखक
3. कन्हैया जी - स्नेहलता के गीत गायक व स्नेहलता के पोते।
4. मुकेश सागर, रंगकर्मी व ग्रामीण । इस शोध कार्य के मूल प्रेरणा स्त्रोत।
5. मोहन भारद्वाज (मैथिली के लब्ध प्रतिष्ठ आलोचक। अब दिवंगत)
6. अशोक- (मैथिली के सुप्रसिद्ध कथाकार व संपादक)
7. मिथिलेश जी- स्नेहलता के पोते
8. सीताराम ठाकुर- (वृद्ध ग्रामीण और स्नेहलता के शिष्य व गायक)
9. धवेन्द्र
10. श्रीकांत ठाकुर- स्नेहलता के बेटे
11. शिक्षक पोता
12. दिनेश ठाकुर- स्नेहलता के पोते व गायक
13. सुनैना देवी- स्नेहलता की बहू
14. रेणु देवी, उषा देवी, किरण देवी, लावली कुमारी, शलिनी कुमारी- स्नेहलता की भतीजी व पोतियाँ
15. कई ग्रामीण बूढ़ा बाबा 1,2,3 आदि
16. दैनिक जागरण अखबार को लिखा गया कन्हैया जी का पत्र
17. तिकोने चौक पर स्नेहलता की प्रतिमा स्थापित करने के लिए लिखे गए पत्र का ड्राफ्ट

शारदा सिन्हा

सुपौल जिला, बिहार के हुलास, राघोपुर गाँव में जन्मी शारदा सिन्हा मैथिली और भोजपुरी की अप्रतिम गायिका हैं। राजश्री प्रोडक्शन की फिल्मों के लिए इन्होने गीत गाए हैं और फिल्म 'गैंग ऑफ वासेपुर' के लिए भी। इनकी गायकी के लिए इन्हें बिहार की स्वर कोकिला, बिहार की लता मंगेशकर, मैथिली कि बेगम अख्तर और जाने क्या-क्या कहा जाता है। बिहार की लोक गायकी को इन्होने अनोखी ऊंचाई दी है। शारदा जी के देश भर में कार्यक्रम होते हैं। संगीत नाटक अकादमी के सम्मान से सम्मानित शारदा जी को 2015 में पदम श्री और 2018 में पद्म भूषण से सम्मानित किया जा चुका है। इनके स्वर को प्रसिद्धि देने में जाने-अंजाने स्नेहलता का बहुत बड़ा योगदान रहा है। स्नेहलता के गीत गाते हुए शारदा जी प्रसिद्धि के सोपान चढ़ती गईं। डॉ ब्रज किशोर सिन्हा इनके पति तथा अंशुमान सिन्हा इनके बेटे तथा वंदना भारद्वाज इनकी बिटिया हैं।

शारदा जी से जब बात करने गई, तब इन्होने मेरा ही इंटरव्यू ले डाला। हमारी बातचीत यहीं से शुरू हुई-

शारदा सिन्हा- और बताओ, क्या चल रहा है?

विभा- अभी स्नेहलता पर काम कर रही हूँ। मुझे अपने एक दोस्त और रंगकर्मी मुकेश सागर से स्नेहलता के बारे में पता चला और उनके ऊपर काम करने की उत्सुकता जागी। नतीजा, आज आपके सामने हूँ, उनके ऊपर बात करने के लिए।

शारदा - स्नेहलता जी के बारे में कई जगह कई लोग बोलते थे। मैं सुना करती थी। कहा जाता था कि वे बज्जिका में लिखते हैं। कई बार बात चली तो यह बात निकली कि वह बज्जिका में लिखते हैं। लेकिन हम उसे मैथिली ही समझते थे। हमने जब गाया तो हमें लगा कि हम मैथिली गा रहे हैं। पहले पता भी नहीं था कि इसको लिखा किसने है? बाद में पता चला कि इसको स्नेहलता जी ने लिखा है।

विभा - आपने शुरूआत तो मैथिली गीत से ही की है न? अपनी गीत यात्रा के बारे में थोड़ी जानकारी दें।

शारदा - हां। 1971 में मेरी रिकॉर्डिंग शुरू हो गई थी। मेरा पहला गीत था- 'द्वार के छेंकाई दिअउ हो दुलरूआ भैया... ' यही गाना मेरा सबसे पहले रिकॉर्ड हुआ। एक और गीत था- 'सीता के सकल देख...' इसे अपनी ही शादी में सुना था। उसे भी सीखा और फिर रिकॉर्ड किया। स्कूल में पढ़ती थी तो क्लासिकल सीखती थी। भाग्य ही समझो। घर में गाती थी। घर में चचेरी बहन थी, वह गाती थीं। हमलोग आम के कलम में जाते। गाछी पर बैठे रहते। वहीं गुनगुनाते। सुनते-सुनते बहुत अच्छा लगा। तो उसी में सीख गई। एक जगह शादी में गए। वहाँ सबने पूछा- 'दुआर छेकबेक लूर अई? की बजभी ओएठांम। (दरवाजा छेकना जानती हो? क्या बोलोगी वहाँ?) बोली- 'कोई गीत याद है?' अब नहीं आता है तो अब उसकी चिंता हो गई। उसको आता है हमको नहीं। उसको मिलेगा पैसा, हमको

नहीं। उसी में सीखे वह...। लेकिन घर में दो लाइन, चार लाइन सीखा हुआ बहुत काम आया।

विभा- आपको कैसे स्नेहलता जी के बारे में पता चला?

शारदा- वो गाने में 'सखि स्नेह के जीवनमा...' अर्थ लगा- स्नेह के जीवन में। दोनो अर्थ लगता था। विराम सीता जी का भी आ रहा है- स्नेह स्नेह करके । तो किसी से पूछा कि 'स्नेह जी के छथि?' बताया गया कि स्नेहलता जी। हम समझे कि कोई औरत हैं, क्योंकि स्नेहलता औरत का नाम होता है। रहते थे समस्तीपुर में। 'इनका' (पति का) घर बेगुसराय है। लेकिन जब 'ये' समस्तीपुर कॉलेज में लेक्चरर थे, उसी समय शादी हुई। फिर बाद में ये बी.पी.एस.सी. कंप्लीट करके चले गए एजुकेशन सर्विस में। हमलोग समस्तीपुर में ही रह रहे थे। समस्तीपुर में ही मेरी मुलाकात स्नेहलता जी से हुई। जब मेरा गाना आया तो वहां के लोग बहुत उत्साहित हुए कि गाना आया है। देखिए, लोगों से चर्चा करते-करते कैसे बात बढ़ती है। उसी में किसी ने कहा कि 'स्नेहलता जी क' छै ऊ। भेंट कर' चाहय छथिन। ऊ कहैय छथिन कि हमर गीत के एम्हर-ओम्हर क' देलक...।' तब हमने बात को समझा और तय किया कि हम स्नेहलता जी से मिलेंगे। उस समय दरोडी का एक कार्यक्रम था... शायद यही कार्यक्रम रहा होगा।

विभा - मुझे बताया गया है कि अस्सी साल से यह कार्यक्रम चल रहा है।

शारदा- हां, उस समय तो वहाँ आने-जाने का रास्ता उतना अच्छा नहीं था। एकदम बीहड़ था। पर हम गए वहां। स्टेज पर जाकर शो किया।

विभा - कब गई होंगी? कौन सा साल रहा होगा?

शारदा- अस्सी का ही दशक रहा होगा। उसी समय गई थी, क्योंकि ये सब गाने उसी समय के हैं। 'जादूगरी नैन तोहरे जादूगरी नैन हमर मोहना...', 'जिया बसू, जिया बसू सांवला...', 'पहुनमा राम...', 'सखि स्नेह के जीवनमा' ये सब गाने उसी समय के हैं। वहां सुनकर और अच्छा लगा।

- आप उनसे कहां मिली थीं?

शारदा- स्नेहलता जी समस्तीपुर आए थे तो उन्हें पता चला कि शारदा यहीं रहती है। उन्होंने कहा था कि 'हमर गीत उम्हर क' देलियै।' मैंने कहा कि 'हमको तो कोई बोला कि ये स्नेहलता जी का गाना है।' हमको उस समय नाम-वाम कुछ पता नहीं था। जिसका भी गाना किसी से सुनते तो हम गा देते। लेकिन जब हमें यह पता चला कि ये सारे गीत स्नेहलता जी के हैं तो हमने कहा कि तब तो स्नेहलता जी से मिलना चाहिए। मैंने पहले सोचा कि कोई औरत है। पर वहाँ तो एक सांवले से आदमी थे। वो टीचर थे, स्कूल में फाइन आर्टस् के। उनसे मेरी मुलाकात किसी ने करवाई। कोई एक कीर्तन गानेवाला था। हमलोग उस समय ढूंढ़ते रहते थे कि कहीं से कुछ मिल जाए। रात भर अष्टयाम कीर्तन होता था। उसमें सुना। वह बहुत अच्छा गा रहा है। वे बोलते थे कि वहां जो वह गा रहा है, वहां से पता लगाओ कि वो कहां से गा रहा है। उसमें पता चला कि उनका

ही लिखा हुआ सब गाना है। उसको बुलाकर बात की और कहा- 'भाई, सुनाईए जरा गाना।' हम उस समय छोटे थे, पर नाम-वाम शुरू हो गया था। वे लोग भी कहते थे, 'ये कह रही हैं तो चलो गाओ।' बैठकर गाना-बजाना हुआ, खाना-पीना हुआ। उस समय बड़े सोबर ढंग से सबकुछ हो जाता था। अब तो भारी हो जाता है। सब आदमी का अलग-अलग ढंग हो जाता है। कहीं देर हो गई तो कहते थे कि सबलोग खाना खाकर जाइएगा। खाना बन रहा है। न ही इतना साधन, ना ही कुछ और। लेकिन, हर तरह से सहजता थी। एक छोटा-सा लड़का अपने माइके का था। उसी को ट्रेंड करके रखते थे। कहते थे कि 'चावल तो तुम बना ही लोगे। सब्जी तुम काटकर रख देना, सब्जी हम खुद ही बना लेंगे।' उसके गाने से भी मुझे कुछ-कुछ गाने मिले। मैंने उससे कहा कि मैं स्नेहलता जी से मिलना चाहती हूं। वो उस टीचर को बोले। वो टीचर स्नेहलता जी को बोला। वो समस्तीपुर किसी काम से आए थे। उनको बताया था कि काशीपुर में मेरा अपना मकान है समस्तीपुर में। अब तो टूटा फूटा हाल में है। मैंने उनसे कहा कि स्नेहलता जी को घर पर ले आइए। वो घर पर आए। हमारे हसबैंड भी थे। हमलोग दिन भर वहीं रहे। शाम में गए स्नेहलता जी। खाना-वाना खाए। बहुत ही भले आदमी थे। वो दो-तीन बार हमारे घर पर आए और एक बार मैं दरोड़ी गई। वो जो आए थे उनके साथ में, कौन था ये याद नहीं है। लेकिन वो लोग जो आए थे, वो गाते भी थे उनके गाने। 'जादू भरे नैन...' वो सब गाते थे। हम लिख लेते थे। स्नेहलता जी को याद ही रहता था।

विभा - हमें बताया गया कि वे आशु कवि थे। वहां हम गए तो लोग बताए कि वो बात कर रहे हैं, उसी में से एक-दो गाना लिख देते थे।

शारदा- हाँ। सही कह रहे थे। लोग आकर बोलते थे कि 'बाबा आय एकटा स्वागत छै फलां क' लिख दिअउ।' वो कहते थे- 'अच्छा भ' जेतई।' और वो लिख देते थे तुरत। टाइम नहीं लगता था। बिल्कुल आशु कवि थे। हमारे ऊपर गाना लिखा था उन्होंने। अभी गाना नहीं मिल रहा है। ऐसा बनाया था उन्होंने अंशू, वंदना, राजकिशोर डाल करके। इतना बढ़िया सब। उसी समय सरस्वती जी का गाना गाए थे सरस्वती पूजा में। हमको सरस्वती पूजा में जाना होता था। हमने कहा- 'बाबा एक गाना सरस्वती जी का चाहिए। कैसे होगा?' कहे- 'होगा' -'आज माता हमें बुध का प्यार दीजिएगा न...' ये दिन भर चलता रहता था। और कुछ काम नहीं जानती थी। इनलोगों को खिलाती -पिलाती थी। हम जाकर कुछ-कुछ लेकर फिर चले आते थे कि वो छूटे नहीं। काफी बार आए। उसी में ये गाना हमको मिला। उसके बाद कुछ-कुछ किताबें हमें मिली- स्नेहलता जी की, मोदलता जी की...।

विभा - हमें तो कोई किताब ही नहीं मिली। एक शायद 'वैदेही विवाह' पर...।

शारदा- अब तो बड़े अच्छे फॉर्म में आ गए होंगे।

विभा - नहीं आया। अभी मैं तीन दिन वहां थी। जो भी जिनके पास है, सब दबा के बैठे हुए हैं।

शारदा- मैं उनका नाम ही भूल रही हूं। वही हमको एक बार कहे थे कि 'अपने गाय देलिये हुनकर गीत, हुनकर नाम नय देलियै।' इसी पर हमने उनको बुलाया था और कहा था कि 'बाबा हम तो नहीं जानते थे कि ई आपका गीत है।' लोग उनको जाकर बोले कि आपका गीत गाई हैं और आपका नाम नहीं डाली हैं। आपका गाना गाया। उसी पर उन्होंने कहा था कि 'अच्छा कोनो बात नय। हमर गीत के गाय के तो अमर क' देलही।' उस समय जो कीर्तन होता था न! रात भर उसमें उनका गीत बजता था। विवाह कीर्तन में गाए जाते थे। बीहट में, बेगुसराय में होता था। समस्तीपुर में कई बार रात-रात भर कीर्तन चल रहा है... उसमें मैंने देखा है लोग उसमें राम-सीता पर ही कीर्तन गाते थे।

विभा - आपने पहला गाना कौन-सा गाया होगा?

शारदा- 'बाबा बैजनाथ हम आयल छी भिखरिया...'

विभा- ओ...! ये तो हमलोग भी गाते थे। आप ही का गाया हुआ सुनकर। हमारे यहाँ के सभी लोग कांवर लेकर देवघर जाते थे। हम भी बचपन में एक बार गए थे।

शारदा- उनका गाना 1940 से ही चल रहा होगा। 1951 या 52 में उनका कुछ संस्करण निकल चुका था - पुराने गीत का। पता नहीं कहां मिलेगा वह सब। हमको भी मालूम नहीं है।

विभा - कन्हैयालाल प्रकाशन है लहेरियासराय में। उन्होने ही एक किताब निकाली है। उस किताब का अधिकार उनके पास था। मैं परसों लहेरियासराय भी गई थी वही खोजते-खोजते। उनके पास तीन कॉपी थी। एक को पूरा दीमक खा चुका था। एक ऐसे ही किसी-किसी हालत में मिली तो हमने ले ली। हमने कहा कि जो है, दे दीजिये। उनलोगों ने कहा कि उसके बाद उनकी 'विनय पदावली', 'चेतावनी' छपी हुई है लेकिन नहीं मिली। आउट ऑफ प्रिंट है। शुरू में उन्होंने खुद ही छपवाई। बहुत ही छोटी-सी है।

शारदा- दरभंगा का एक आदमी था, उसके पास में देखे थे। वो गाया था 'मोहि लेलखिन सजनी मोरा मनवा...' विवाह गीत 'जिया बसू हिया बसू...'

विभा - आपने लगभग कितने गाए होंगे स्नेहलता जी के?

शारदा- 'बहुत सारे गीत। जैसे, 'लेना न देना मंगन रहना' टाइप का। उनका गाया था 'निर्गुण' जैसा ही था। उसमें था कि कोई देख रहा है या नहीं देख रहा है, लेकिन ऊपर वाला देख रहा है (ऊपर उंगली दिखाकर) वह रिकॉर्ड नहीं हुआ। स्टेज पर तो बहुत सारे हैं।

विभा - स्टेज और रिकॉर्डिंग में लगभग कितने गीत उनके गाए होंगे?

शारदा- पच्चीस से कम तो नहीं ही गाए होंगे। ज्यादा भी हो सकता है।

'राम जी से पूछे जनकपुर के नारी,
बता द' बबुआ लोगबा देत काहे गारी',
कहथिन स्नेहलता मन में बिचारी
हम सब लगैछी कोय सरहोज कोय साली।
बता द' बबुआ लोगबा देत काहे गारी...'

हमसे धुन नहीं बैठ पा रही थी। नहीं बैठती है कभी-कभी। लेकिन बहुत पॉपुलर गाना हुआ था। उनका हर गाना बहुत ही सुंदर है-

'ई बुड़बक बाबा के पाकल पाकल दाढ़ी,
देखय में पातर खाय भर भर थारी...'

ऐसे-ऐसे गीत थे। हिंदी के भी थे। लोकतत्व के साथ थे-

'रखवाला हो प्रतिपाला तू है लाल लंगोटीवाला...',

'जय जय बजरंगवली कि जय बोलो हनुमान की...'

विभा - मूल तो मैथिली में ही होगी न!

शारदा- हाँ, हाँ! एकदम! 'जिया बसू... ' में बज्जिका मिक्स था। समस्तीपुर की बोली बज्जिका और मैथिली मिक्स है। अपनी गायकी लग जाती है तो वह भी उसमें अंदाज अलग हो जाता है। उस समय उस तरह का रियाज करते थे। उस गाने में उसतरह से काम किया। 'कारी घुंघरारी केश...' कैसा हो गया? सुंदर शब्द था। उसको जगह मिल गई और गा पाए।

(गाकर) कारी घुंघरारी केश मौरिया सोहनमा
दुलहा मौरिया सोहनमा राम...
हिये बसि गेलइय तोरे भाल के चंदनमा राम
हिये बसि गेलइय राम...
तोरे मंद मुस्कनमा राम हिये बसि गेलइय...' ###

योगानन्द झा -

मैथिली भाषा और साहित्य की समृद्धि के लिए प्रतिबद्ध लेखक एवं अनुसंधान में निपुण डॉक्टर योगानंद झा की किताबें हैं- लोक जीवन और लोक साहित्य (1986), आलेख संचयन (2002), मैथिली शाक्त साहित्य (1996), फकीर मोहन सेनापति (अनुवाद, 2002), बिहारक लोककथा (2003) आदि। 1998 से 2002 तक ये साहित्य अकादमी में मैथिली परामर्शदाता समिति के सदस्य रह चुके हैं। पीसी रायचौधुरी कृत 'द फोक टेल्स ऑफ़ बिहार' का मैथिली अनुवाद 'बिहारक लोककथा' पर इन्हें वर्ष 2005 का साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार मिल चुका है। भारतीय साहित्यकार संसद समस्तीपुर, पंडित रमानाथ झा शिखर साहित्यकार सम्मान और आचार्य सुरेंद्र झा सुमन शिखर साहित्यकार सम्मान से सम्मानित डॉ योगानंद झा द्वारा स्नेहलता पर लिखा गया मोनोग्राफ स्नेहलता पर प्राप्त अबतक की संभवत: पहली और आखरी किताब है। अपने शोध के दौरान योगा बाबू से मिलने मैं इनके आवास लहेरियासराय गई, जहां पर उनसे स्नेहलता के बारे में बातें हुई। योगानंद जी ने इस शोध कार्य में पूरा सहयोग दिया, बल्कि हमारे साथ गए स्नेहलता जी के गायक पोते कन्हैया जी से आग्रह भी किया कि वे स्नेहलता जी के अप्रकाशित कार्य मुझे उपलब्ध करवाएं। यहां स्नेह लता पर उनके साथ की गई बातचीत!

विभा- आपने स्नेहलता पर काम किया है, मोनोग्राफ के रूप में। जहां तक मेरी जानकारी है, पुस्तक के रूप में स्नेहलता पर अबतक और किसी ने काम नहीं किया है। इसलिए भी इस किताब के माध्यम से आपका योगदान अप्रतिम है। स्नेहलता के बारे में लिखने के लिए आपके मन में विचार कैसे आया?

योगानन्द- स्नेहलता के बारे में जब मेरे मन में विचार आया, उस समय हमलोग साहित्य के एडवायजरी बोर्ड के मेम्बर हुआ करते थे। एडवायजरी बोर्ड का काम रहता है - मैथिली के जो वरीय साहित्यकार हो गए हैं, जिनका देहांत हो गया है, जो अखिल भारतीय स्तर पर लेखक हैं, उनपर मोनोग्राफ लिखवाया जाता है। स्नेहलता की प्रसिद्धि है। ये हमारे अखिल भारतीय स्तर के रचनाकार हुए। इन्होने एक सम्प्रदाय का निर्माण किया, जिस सम्प्रदाय के अनुयायी एक संत नहीं, अनेकों संत हुए और इसतरह से मिथिला में 'सखी सम्प्रदाय' का आविर्भाव और विकास हुआ। इसमें स्नेहलता का बहुत बड़ा योगदान रहा। स्नेहलता ने राम-सीता के विवाह प्रकरण को लेकर गीतों की रचना की। खासकर फुलवारी प्रकरण से लेकर सीताजी के विवाह प्रकरण तक। इसकी इतनी धूम मची कि अंतरार्राष्ट्रीय स्तर पर जनकपुर धाम और राष्ट्रीय स्तर पर डरोड़ी का नाम हुआ। हमको तो लगता है कि मिथिला के गांव-गांव में और मिथिला से इतर वैशाली और पटना में भी हमने देखा है कि सीता-राम विवाह का उत्सव मनाया जाता है। उसमें स्नेहलता, मोदलता, पद्मलता के गीत ही गाए जाते हैं, जिनलोगों ने खासकर इस सम्प्रदाय में सीता-राम के विवाह गीतों की रचना की है। अयोध्या में भी जो उत्सव होता है, बक्सर में जो उत्सव होता है, उसमें सधुक्करी भाषा के साथ मिथिला की भाषा का निश्चित रूप से प्रयोग

होता है। मिथिला के जो हमारे संत हो गए हैं, जो 'सखी सम्प्रदाय' में, राम भक्ति के भाव के संग जो लोग दीक्षित हुए हैं, उनलोगों के गीतों का गायन निश्चित रूप से होता है सीता-राम विवाह के गायन में। इस तरह की स्थिति बनी है कि स्नेहलता को अखिल भारतीय स्तर का कवि माना गया। दुर्भाग्य की बात है कि मैथिली के लोक साहित्य को इतिहास में स्थान दिया नहीं गया। जब लोक साहित्य की ओर लोग प्रवृत्त हुए तो उस समय भी सखी सम्प्रदाय के बारे में लोगों ने एक निश्चित अवधारणा नहीं बनायी। निश्चित अवधारणा नहीं बनाने के चलते स्नेहलता, मोदलता, पद्मलता आदि जितने सारे सखी सम्प्रदाय के कवि हुए हैं, उनलोगों को प्रश्रय नहीं दिया गया। लेकिन बाद में महसूस किया गया कि ये जो हमारे मुकुटमणि लोग हैं, इनलोगों को भी साहित्य में स्थान दिया जाना चाहिए, क्योंकि इनकी रचनाएं लौकिक दृष्टि से पूर्ण और हमारी साहित्यक दृष्टि से भी बहुत उत्तम कोटि की हैं। यही सोचकर एडवायजरी बोर्ड ने स्नेहलता को अखिल भारतीय साहित्य निर्माता, श्रृंखला में इनका स्थान दिया और चूंकि उस समय मैं काम कर रहा था, हमें कहा गया कि आप स्नेहलता पर शोधपूर्ण काम कीजिए।

विभा - कब से कब तक आपने इसपर काम किया?

योगानन्द- 1998 से 2002 तक।

विभा - स्नेहलता जी से आप मिले थे? कब-कब?

योगानन्द- निश्चित। निश्चित रूप से मिला था। हमारे गांव में नवाह यज्ञ हुआ था। स्नेहलता के गीतों को हमलोग जानते ही थे। मिथिला में किसी भी लड़की-लड़के की शादी होती है, तो उसमें निश्चित रूप से स्नेहलता के गीतों का गायन होता ही है। किसी न किसी प्रकरण में स्नेहलता के गीतों का संदर्भ आता ही आता है।

विभा - क्या जनमानस जानता है कि ये स्नेहलता के गीत हैं?

योगानन्द- जनमानस तो इन्हें लोकगीत के रूप में जानता है, लोकगीत के रूप में प्रयोग करता है, विवाह गीत के रूप में प्रयोग करता है। उनको स्नेहलता से बहुत लगाव नहीं है। लेकिन इनके गीत ही ऐसे हैं कि जितने भी प्रकरण हैं, विवाह की जितनी भी पद्धति, रस्में हैं, करीब-करीब सारी रस्मों में उनके गीत हैं और उन गीतों को लोग गाते हैं।

विभा - स्नेहलता से आप मिल चुके हैं। आपको कब लगा कि ये स्नेहलता हैं?

योगानन्द- 90 के दशक में हमारे यहां एक नवाह हुआ था। उस समय हमलोगों ने अनुरोध करके उनको अपने गांव में नवाह प्रकरण में रामधुनी नवाह के लिए बुलाया था। ये राम और सीता के संबंध में लिखनेवाले हमारे कवि और संत थे। स्नेहलता जी को हमलोगों ने बहुत आदरपूर्वक यहां बुलाया। वो आए हमारे यहां। उनके आने के बाद उनका उचित सत्कार किया गया और उनके आशिर्वचन भी हमलोगों को मिले। 'सीताराम' नाम धुन नवाह के बाद उन्होंने प्रवचन भी करवाया।

विभा - नाम 'स्नेहलता' से शायद भ्रम होता होगा कि स्नेहलता कोई महिला होगी? स्नेहलता जी पुरुष थे। कपिलदेव ठाकुर उनका नाम था। ये स्नेहलता, मोदलता, पद्मलता इसतरह के नाम रखने के पीछे इनकी मंशा क्या रही होगी?

योगानन्द- इसके लिए हमलोगों को सखी सम्प्रदाय में जाना पड़ेगा। सखी सम्प्रदाय में दीक्षित हो जाने के बाद आप महिला हों या पुरुष, आपका वह नाम तब नहीं रह जाता है । गुरू उनका नाम रखते हैं और वही स्नेहलता, कदमलता, पद्मलता, मोदलता जैसे नाम रखे जाते हैं। उसमें लता जोड़ दिया जाता है और यह माना जाता है कि ये लताएं सीता जी की सखियां हैं, जो सीता जी के माध्यम से राम जी की पूजा करती हैं।

विभा - सखी सम्प्रदाय में डायरेक्ट पूजा करने की प्रथा नहीं है। सीता के माध्यम से, सखी माध्यम से हम उनके सखा तक पहुंच सकते हैं?

योगानन्द- जी, निश्चित। सखी के माध्यम से परम पिता परमेश्वर की आराधना की जाती है। राम को परम पिता माना गया है और सीता को उनकी शक्ति। जब भी हम राम के पास पहुंचना चाहते हैं, निर्वाण के नजदीक पहुंचना चाहते हैं, भगवद प्राप्ति चाहते हैं तो हमको वहां तक जाने के लिए आत्मा और परमात्मा का संयोग बिठाना पड़ता है। मनुष्य मात्र, चाहे स्त्री हो या पुरुष, एक आत्मा है, जो परमात्मा का ही स्वरूप है; लेकिन उससे अलग बिखरा हुआ है, उससे विकिरण है। वह विकिरण स्वरूप परमात्मा में आत्मसात हो जाए, परमात्मा में मिल जाए, इसके लिए शक्ति की जरूरत है। और हमलोग शक्ति के माध्यम से ही राम तक पहुंच सकते हैं। सीधे-सीधे परमात्मा तत्व में मिलना नहीं हो सकता। यह काम करते हैं गुरू। इसलिए गुरू एक नया नाम देते हैं। राम और सीता के सखी के रूप में इन्हें नाम दिया जाता है।

विभा - आपने कहा, सखी सम्प्रदाय, स्नेहलता, मोदलता, पद्मलता आदि...। सखी का भाव एक अलग किस्म का भाव होता है, थोड़ा आत्मीय। जब हम आत्मा-परमात्मा की बात करते हैं तो वो भाव बिल्कुल अलग हो जाता है। वह भक्ति से जुड़ जाता है। हालांकि श्रृंगार की अंतिम परिणति भक्ति ही होती है। तो ऐसे में हम क्या कह सकते हैं कि विवाह के गीत लिखकर भक्ति तक की यात्रा स्नेहलता जी या बाकी सभी सखी सम्प्रदाय व्यक्तियों ने की? भक्ति तक की इस यात्रा को आप किस रूप में देखते हैं- श्रृंगार से भक्ति तक पहुंचना या विवाह से भक्ति तक पहुंचना? यानी लौकिक से पारलौकिक तक पहुंचना।

योगानन्द- लौकिक से पारलौकिक तक पहुंचना है असल में। राम तो परम पिता परमेश्वर हैं। भक्त उनतक पहुंचना चाहता है। मिथिला में भक्ति की एक अलग परंपरा स्थापित हुई है। इसलिए भक्त की यह भूमि जानकी की जन्मभूमि है और इसी भूमि को ऐसा सौभाग्य मिला कि जानकी जी का विवाह यहां हुआ और रामचन्द्र को अयोध्या से यहां आना पड़ा। वैवाहिक प्रकरण में मिथिलावासी को सौभाग्य मिला कि उनका रामजी से अपनापा बने। और इसी अपनापे का निर्वाह सदियों से यहां के भक्त लोग करते रहे हैं

और उनकी भावनाओं को जो हमारे संत-कवि लोग हैं, उन्होंने शब्द दिए हैं। वे ही शब्द हमारे विवाह के समय दिखते हैं। हमारे स्नेहलता और अन्य लोग हैं। उनलोगों के गीत हैं।

विभा - दो नाम प्रमुखता से आते हैं- स्नेहलता और मोदलता। दोनों में और दोनों की रचनाओं में क्या फर्क है?

योगानन्द- दोनों की रचनाओं में मुख्य फर्क यह है कि मोदलता जी स्नेहलता से पहले हुए हैं। मोदलता जी जब किशोरावस्था में रहे होंगे, उसके बाद स्नेहलता जी का जन्म हुआ होगा। 15-20 साल का अंतर रहा होगा। उस समय मोदलता जी एक संत थे। मिथिला में शक्ति पूजा की प्रधानता थी। बाद में जब वैष्णव सम्प्रदाय का आर्विभाव हुआ, राम मंदिरों का निर्माण हुआ, तो वहां पर तुलसीदास के रामचरित मानस पर आधारित विवाह प्रकरण का आयोजन होने लगा उत्सव के रूप में। खासकर अगहन शुक्ल पंचमी को विवाह का आयोजन होता था मंदिरों और मठों में, जहां राम और सीता की मूर्ति स्थापित रहती थी। उस आयोजन के क्रम में मोदलता जी एक बार बेगुसराय गए थे। विवाह में एक प्रकरण है- वर - कन्या के हाथ में एक सुपती दिया जाता है। उसमें वर के द्वारा धान का लावा दिया जाता है। उस प्रक्रिया को भांवरी कहते हैं। वेदी के चारों तरफ लड़का और लड़की को घुमाया जाता है। जैसे हमलोग उसे सप्तपदी कह सकते हैं। लड़के और लड़की को घुमाने की एक आध्यात्मिक स्थिति रही है। कहते हैं, ये सात बार जो प्रदक्षिणा करते हैं साथ-साथ तो ऐसा माना जाता है कि दोनों का सात जन्मों तक साथ रहेगा। आध्यात्मिक दृष्टि से पति अपनी पत्नी को संपन्न कर सके। आर्थिक दृष्टि और हर दृष्टि से पति-पत्नी एक- दूसरे के उन्नयन में लगे रहें और यह जनम भर ही नहीं, बल्कि सात जनमों तक एक-दूसरे के साथ निर्वाह करे। यह मिथिला की मान्यता है और भारतीय मान्यता भी है। उसी क्रम में जो प्रक्रिया है विवाह में वेदी अर्थात् विवाह का जो यज्ञ मण्डप है। उस यज्ञ मण्डप के चारो तरफ लड़के और लड़की को घूमना पड़ता है। उस घुमान यानी भांवरी में जो गीत गाया जा रहा था-

‘राम सिया सुंदर प्रदीछाही,
डगमगाता मणि खंभन माही।
कुंवरि कुंवरि कलि भांवरी दैहीं,
नयन लाभ सब सादर लैहीं।।.....

इसमें तुलसीदास लिखते हैं कि राम और सीता भांवरी दे रहे हैं, चारो तरफ घूम रहे हैं मण्डप के। जब वो चारों तरफ घूम रहे हैं तो लोगों का नयन सुख हो रहा है, तो केवल इतना ही संकेत है भांवरी का रामचरित मानस में। इसी लाइन का जब गायन हो रहा था... उसी समय मोदलता... ये एकाएक ध्यानस्त हो जाते हैं। ध्यानस्थ होते ही एक गीत प्रस्फुटित होता है -

‘चारो दुल्हा देत भंवरिया ये,

चारो दुल्हा देत भंवरिया ये...
संग सुहति दुल्हीन नगरिया हे...
चारो दुल्हा देत भंवरिया ये...
रतन जड़ित मणि सूपति सुहरिया
लावा छीरियाबे भरभरिया हे...'

गीत बहुत बड़ा है। ध्यानावस्था में माना जाता है कि परमात्मा के साथ उनका संयोग हुआ। एक गीत गाया। भांवरी का गीत चल रहा था। मानस के आधार पर उस गीत की रचना हुई। बेगुसराय में एक स्थान है बीहट गांव में। उसी स्थान पर उस दिन का कार्यक्रम चल रहा था। वही गीत हमको लगता है मैथिली में प्रथम गीत के रूप में आया। वैसे सखी सम्प्रदाय के गीत मिथिला के कवियों द्वारा बहुत पहले से लिखे जाते रहे हैं, लेकिन मैथिली में वहीं मोदलता जी के द्वारा प्रयोग हुआ।

विभा - हम कह सकते हैं कि स्नेहलता जी मोदलता जी से प्रेरित हुए?

योगानन्द- उनकी प्रेरणा का स्रोत जैसा स्नेहलता जी ने बताया, उनके लोगों ने, उनके शिष्यों ने बताया कि एक बार ये गए थे जनकपुर धाम। जनकपुर धाम में भी राम सीता मंदिर में विवाह प्रकरण किया जा रहा था। कहते हैं, वहाँ उन्हें राम सीता ने स्वप्न दिया । उससे स्नेहलता जी इतने प्रेरित हो गए कि राम-सीता के विवाह का प्रसंग नेपाल में ही क्यों हो रहा है? हमारे भारत में, हमारी मिथिला में क्यों नहीं? जब जानकी जी का नैइहर है तो वहां क्यों नहीं उनका विवाह प्रसंग चित्रित किया जाए। विवाह का असल जगह वस्तुतः नैहर ही है। क्रमशः उन्होने उसका प्रचार करना चाहा। दरोड़ी में उन्होंने स्थापना दी। दरोड़ी में ही आयोजन शुरू किया गया। स्नेहलता जी को जो यह प्रेरणा मिली, जिसपर संत-महात्मा लोग लिख रहे थे। वास्तव में ये भी तो संत ही थे। उन्होंने भी धनुष यज्ञ से लेकर समाज में विवाह की प्रचलित प्रक्रियाओं पर जो रस्में होती हैं, उनपर लिखा कि रामचन्द्र जी के समय में कैसे उन विधियों या रस्मों का पालन किया गया होगा। उस आधार पर उन्होंने गीत लिखना शुरू किया और वे ही गीत बाद में इतने प्रचलित हो गए कि मिथिला के घर-घर में और मिथिला से बाहर जहां कहीं भी राम विवाह होता था, सबमें इन गीतों का गायन होने लगा- चाहे बक्सर, अयोध्या या कहीं भी। इस तरह स्नेहलता जी हमारे सम्पूर्ण भारत में छा गए। जहां कहीं भी राम और सीता का यज्ञ होता था, राम और सीता का विवाह प्रकरण होता था, स्नेहलता अपने गीतों के माध्यम से विराजमान रहते हैं।

विभा - मैं इसे जनमानस से जोड़ कर पूछूंगी। जब हम राम विवाह या सीता विवाह करते हैं तो कहीं न कहीं यह एक धर्म विशेष से, एक सम्प्रदाय विशेष से जुड़ जाता है। लेकिन आपने इसके पहले भी बताया कि स्नेहलता के रचे हुए गीत आम जनमानस में, घर में जो बेटे या बेटी की शादी हो रही है, उसमें भी गाए जा रहे हैं। तो ये जो जन के साथ जुड़ने की बात है, वहां मुझे लगता है कि यहाँ भक्ति नहीं रह जाती है। हमें हल्दी कूटना

है तो हल्दी कूटने की रस्म का गीत गाना होता है। इसको आप स्नेहलता की किस उपलब्धि के रूप में देखते हैं?

योगानन्द- मिथिला में जो भी लोकगीत हैं, विवाह प्रकरण के गीत हैं, उसमें सीता को बेटी ही कहा गया है। सीता यहां की बेटी रही है तो उसमें भक्ति-भाव को अलग करके सीता को पहले बेटी माना गया है । जनमानस में वह बेटी के ही रूप में स्थापित हैं। बेटी की शादी होगी तो उसमें निश्चित रूप से सीता जी का नाम होगा -

'बड़ रे जतन सौ सिया धिया पोसल,
सेहो सिया राम लेले जाए।'

यहां पर भक्ति भावापन्न सीता नहीं है, शक्ति सम्पन्न सीता नहीं है। वह सिर्फ बेटी है। यहाँ कोई भी बेटी होगी तो उसको सीता ही कहा जाएगा। और यही कारण है कि जनमानस से सीता जुड़ी हैं, जनमानस से सीता-राम का विवाह जुड़ा है और जनमानस से हमारे स्नेहलता जी जुड़ते चले गए और पूर्णतः लोकप्रिय हो गए।

विभा - क्या हम ऐसा मान सकते हैं कि मिथिला में सीता हमेशा बेटी ही रही हैं। जगत जननी का स्वरूप खींच देने से सीता के बेटी स्वरूप की स्वाभाविकता खत्म हो गयी है। अगर हम मिथिला में सीता को बेटी के ही रूप में रहने दें, जगत जननी न माने तो?

योगानन्द- यहां के लोग बेटी और बहन का ही रिश्ता रखते हैं। जगत जननी स्वरूप में आरोपित है, वह भक्तिभाव में है क्या? ये वक्त के जो अनेक सोपान हैं, उन सोपानों में अनेक संबंध ईश्वर के प्रति जोड़ना है।

विभा - स्नेह संबंध नहीं जुड़ने से सारी स्वाभाविकत खत्म हो जाती है। किसी को उच्च आसन पर बैठाते ही हम उसकी सारी स्वाभाविकता, उसके दुःख, उसके राग, उसके द्वेष, उसकी खुशी खतम कर देते हैं। जैसे राम के साथ। हम उनके निजी दुःख को भूल चुके हैं। हम राम को सिर्फ राम के रूप में मानते हैं जो हमारे उद्धारक हैं, जो तारणहार हैं, सबकुछ हैं। व्यक्ति की स्वाभाविकता खत्म हो जाती है। इसलिए मैंने कहा कि यहां सीता की स्वाभाविकता बनी रहे। तो क्या हम सिर्फ मिथिला में जगत जननी की कुर्सी से हटा कर के सिर्फ सीता का, बेटी का बोध हम देते रहें?

योगानन्द- बेटी का बोध हमलोग देते हैं। सबसे जो प्रेम तत्व है, मेरा प्रेम तत्व किस रूप में प्रस्फूटित होगा इसका हरेक के भीतर अलग-अलग बोध होगा।

विभा - जगतजननी में तो प्रेम नहीं होगा। राम को अगर जगत पुरुष मानूंगी, अगर देव मानूंगी तो प्रेम नहीं होगा, भक्ति होगी। सीता है अगर मैं बहन या बेटी मानती हूं तो प्रेम आएगा, स्नेह आएगा, लगाव आएगा लेकिन। जगतजननी तो मेरे लिए आराध्या हो गई। माला से पूजा करूंगी, पैर छूऊंगी और खत्म! हमारा दिल नहीं मिलेगा।

योगानन्द- बीच में बाड़ आएगा... मिथिला में बेटी का ही स्वरूप सीता का है, इसमें दो मत नहीं है।

विभा - हम बात कर रहे थे स्नेहलता और मोदलता की। मिथिला में विद्यापति पहले से ही स्थापित हैं। हर कोई जानता है विश्व स्तर पर विद्यापति का इतना बड़ा नाम! स्नेहलता और विद्यापति दोनों की प्रसिद्धि का अंतर क्यों और क्या है?

योगानन्द- साहित्य की धारा में श्रृंगार रस मैथिली के लिए खास करके मूल रस के रूप में है। श्रृंगारिक कविताओं की रचना शुरू से लेकर मध्य तक विद्यापति से लेकर संपूर्ण मध्यकाल तक कहना चाहिए कि श्रृंगारिक कवियों का ही रहा है। श्रृंगार के ही पद रचे जाते रहे हैं। लेकिन श्रृंगार से अब दूरी बढ़ी है। ऐसा नहीं है कि भक्तिपरक रचनाएं नहीं होती रही हैं। भक्तिपरक रचनाएं भी हुई हैं। विद्यापति का मुख्य भाव श्रृंगारपरक रहा है और वह भी खासकर लौकिक श्रृंगारपरक। कह सकते हैं कि लोक शिक्षण या श्रृंगार शिक्षण विद्यापति द्वारा किया गया। उसका आधार अनुशास्त्रीय भी रहा है, जिसको बाद में लोगों ने आत्मा-परमात्मा से जोड़ दिया। खैर यह एक अलग बात है। लेकिन विद्यापति वस्तुतः श्रृंगारिक कवि ही थे। ऐसा हमलोग मान सकते हैं। उन्होंने भक्तिपरक रचनाएं भी की। राम के संबंध में, कृष्ण के संबंध में, लेकिन सीता को विद्यापति ने अपनी रचनावली से अलग रखने की कोशिश की। अलग रखने का कारण था। सीता एक ऐसी अभागन लड़की हुई मिथिला की जिसको विवाहोत्तर काल में कष्ट ही कष्ट सहना पड़ा। विद्यापति का एक पद मिलता है उसमें लिखा है -'सासुक कोर मे सुतल जमाय और समधि विलह से विलहल जाय।' रामचन्द्र जी को जब वनवास हो जाता है तो क्या होता है! जमाई हैं रामचन्द्र जी! वो वन चले गए हैं। वन चले जाने के बाद वन में कहां हैं वो? तो पृथ्वी पर हैं। पृथ्वी की बेटी है सीता। राम की सास हैं पृथ्वी और पृथ्वी की कोर यानी गोद में ही रामचन्द्रजी बैठे हुए हैं। फिर भी सास अपनी गोद में अपने दामाद को लिए हुए है। समधी दशरथ जी हैं। उन्हें लगता है कि मेरा बेटा कहां चला गया है।.... सास की गोद में खेल रहा है, आनंद कर रहा है। तो आपको दिक्कत कहां है? इसी तरह से सीता पर पद लिखा गया है। बहुत ही कारुणिक पद है। कारुणिक पद में विद्यापति ने केवल संकेत किया है कि सीता किन परिस्थियों से गुजरी और जो परिस्थितियां थी वह बहुत ही भयावह थी। परिणाम हुआ कि यहां के लोग, खासकर विवाह के बाद जो घटनाएं हुई सीता के साथ, जिस तरह से उन्हें प्रताड़ित किया गया और जिस तरह से प्रताड़ना सहती रही। उस स्थिति को एक पिता होने के नाते या जनक होने के नाते मिथिला के लोगों ने बहुत ज्यादा प्रश्रय नहीं दिया। स्नेहलता जब आते हैं, वह देखते हैं कि विवाह तक सीता का जीवन बहुत ही उत्तम कोटि का जीवन है। उतने ही प्रकरणों को और उसी प्रसंग पर उन्होंने लिखा।

विभा - तुलसी ने विवाह प्रसंग काफी विस्तार से लिखा है। तुलसी के विवाह प्रसंग का ही विस्तार स्नेहलता के विवाह प्रसंग के गीत हैं या वे सखी सम्प्रदाय के गीत हैं। सखी सम्प्रदाय के जितने भी रचनाकार हैं उनके गीत क्या तुलसी की रचनाओं से आगे बढ़कर आए हैं या तुलसी के घेरे में ही हैं?

योगानन्द- है तो उसी घेरे में। लेकिन दोनों में अंतर है। तुलसी शास्त्रीय विधि से आगे बढ़ते हैं। लता या सखी सम्प्रदाय के लोग लौकिक विधि से आगे बढ़ते हैं। मिथिला और भारतीय पद्धति में विवाह के कुछ प्रकरण ऐसे हैं जहां वेद चुप है और लोक मुखर है। सिंदूर दान वैदिक पद्धति नहीं है। लेकिन वह अगर नहीं हुआ तो शादी ही नहीं हुई। वह अगर धोखे से भी हो गया तो शादी हो गई। लोक को लेकर लता सम्प्रदाय के लोग वैवाहिक प्रकरण में चले हैं और तुलसी हमारे शास्त्रीय पद्धति को लेकर चले हैं। शास्त्रीय पद्धति को उन्होंने बहुत ही ढंग से रखा। हमलोग कह सकते हैं कि इन तुलसी के पदों का ही, तुलसी के मानस का अनुआयी कह सकते हैं। उसका एक विस्तार कह सकते हैं।

विभा - जब हम स्नेहलता के गीतों के तरफ बढ़ते हैं, तो अंग्रेजी में कहते हैं- Teasing Songs, यानि हंसी-मजाक, छेड़-छाड़ के गीत, जिसे हम गाली गीत कहते हैं। मैथिली में इसे डहकन क़हत है। आजकल जिस दौर से हम गुजर रहे हैं वहां इसे गाली, अश्लील, असभ्य और जाने क्या-क्या माना जा रहा है। वैसे में इन गाली गीतों की प्रासंगिकता किस रूप में आगे बढ़ रही है?

योगानन्द- ये गीत प्रासंगिक हैं, क्योंकि खासकर के मिथिला में गाली गीत का गायन वैवाहिक अवसर पर होता है। हंसी मजाक होता है। इससे स्नेह-संबंध बढ़ता है। तुलसी दास ने भी लिखा है। सिर्फ विवाह प्रसंग में लिखा। युद्ध में तो गाली देंगे नहीं। स्नेहलता या जितने भी सखी सम्प्रदाय के लोग हैं, उनका दायरा विवाह है। इसे फेस्टिविटीज कह सकते हैं। उसमें जो गाली गीत गाए हैं या लिखे हैं, मैं उसको प्रासंगिक मानता हूँ। गाली के नाम पर चिढ़ना! ऐह! ये ऐसे कैसे हो सकता है? हाँ, आजकल के गाली गीतों में थोड़ी अश्लीलता दिखती है कभी कभी। लेकिन, यह विचलन तो हर क्षेत्र में है। फिर भी, उसमें प्रयास करते हैं कि थोड़ा कम हो गाली।

विभा - स्नेहलता ने क्या ऐसा लिखा है जो अभद्रता का सीमा पार कर जाए?

योगानन्द- एकदम नहीं। और भी बहुत सारे आचार्यों के हैं। स्नेहलता में भी ऐसा नहीं देखा जाता है। एक शिष्टता है, मर्यादा के भीतर है।

विभा - हंसी-मजाक किसके साथ करते हैं? जो आपके अपने आदमी हैं, किसी अनजान आदमी से तो हंसी-मजाक नहीं करेंगे।

योगानन्द- स्नेहलता कहते हैं-

'खीर स गर्भ रहल जननी के अपने अहां जनै छी,
श्रृंगीक बदला दशरथ के कोना क बाप कहे छी।
हमरा बजैतो लाज लगैये यौ दुलरूआ कोना बाजू।'

गालियों की प्रासंगिकता यही है कि गाली तभी गाली है कि जब जिनको गाली नहीं दिया जाना चाहिए, उनको हम गाली बकते हैं। ससुराल की गाली अति प्रिय होती है। यहां की परंपरा है और उसके द्वारा स्नेह की अभिवृद्धि होती है। उसमें गाली को भी

एक स्नेह संबंधी प्रक्रिया ही मानना चाहिए, क्योंकि वहां पर दो कल्चर एक साथ मिलते हैं। दो परिवार का वहां पर मिलन होता है। दो गांव का मिलन होता है। तब दो व्यक्तियों का मिलन होता है। मिलन से पहले ये गालियां दोनों को जोड़ती हैं। ये तोड़ने के लिए गालियां नहीं है। जहां तोड़ने के लिए गालियां हैं वहां स्नेहलता नहीं है। वहां लता भी नहीं हैं। वहां ये सारे संत लोग नहीं हैं। ये जोड़ने के लिए है। अमर्यादित भी नहीं हैं।

विभा - मर्यादा उलंघन करेंगे तो आप टूटेंगे। जाहिर है कि जब हम गा रहे हैं तो अमर्यादित नहीं है।

योगानन्द- तब वह साहित्य का दोष हो जाएगा। साहित्य का अश्लीलता दोष बहुत भयावह दोष हो जाएगा। स्नेहलता, मोदलता या जो भी लता सम्प्रदाय के संतों ने गालियां दी हैं, वे मर्यादा की सीमा में ही हैं और उन गालियों द्वारा साहित्य का श्रृंगार हुआ है वहां पर। और ये जोड़ने के लिए हैं। इसलिए इसमें कहीं भी काव्य दोष नहीं माना जा सकता है। ###

कन्हैया - स्नेहलता का पोता

कन्हैया जी स्थानीय गायक हैं और स्नेहलता के पोते हैं। चूंकि दरोडी गांव पूरी तरीके से स्नेहलता का ही गांव है, इसलिए उनके सारे वंशज वहीं रहते हैं और सभी इस मायने में उनके रिश्तेदार हुए। कन्हैया जी गंभीर गायक हैं। बहुत सुर में सधे हुए रूप में गाते हैं। उनकी गायकी की अपनी पहचान है और वे बिहार के बाहर भी सरकारी आमंत्रण पर जा चुके हैं और अपनी गायकी की छटा बिखेर चुके हैं। कन्हैया जी के पास स्नेहलता के गीतों का जखीरा है। डॉ योगानंद झा के यहां हम और कन्हैया जी दोनों गए, बल्कि कन्हैया जी ही हमें लेकर गए । डॉक्टर योगानंद झा के साथ साथ उनके घर पर ही कन्हैया जी से भी बातचीत हुई। इसलिए बीच-बीच में योगानन्द जी के भी विचार हैं इसमें। कन्हैया जी और स्नेहलता की गायकी से पहले कन्हैया और स्नेह लता के दादा पोता के संबंध पर भी बातचीत हुई।

विभा - आपका नाम कन्हैया है, लेकिन संगीत और गायकी की दुनिया में आप कन्हैयाजी के नाम से जाने जाते हैं। आप स्नेहलता के परिवार से भी हैं। उनके पोता हैं। इसलिए मैं आपसे गायक के रूप में बाद में बात करूंगी। यह जानना चहुंगी कि एक पोता का दादा के साथ और दादा का पोता के साथ कैसा संबंध रहा? क्या चीज उनकी अच्छी लगती थी। एक-दूसरे के साथ आपलोग कैसे बातचीत या चुहल करते थे?

कन्हैयाजी- बड़े ही मजाकिया किस्म के वो थे। उंगली पकड़ के उनके साथ घूमा करते थे। बचपन से ही कुछ गाने का अभ्यास रहा है। उन्हीं की रचना उन्हीं को सुनाता था। हमारी मां गाती थी तो उन्हीं से सीख-सीख कर हम भी गाते थे।

विभा - आपकी मां स्नेहलता जी के लिखे हुए गीतों को गाती थी या और भी कोई गीत?

कन्हैयाजी- स्नेहलता जी कोई रचना कर के इसको टेप रिकॉर्डर में डाल देते हैं। हमारी मां का मेमोरी पावर बहुत था।

विभा - तो आपकी मां उनके लिए टेप-रिकॉर्डर जैसी थीं?

कन्हैयाजी- हां। हम आठ बजे के बाद भी घर आते थे तो देखते थे कि अगर रेडियो पर उनका कोई गीत बजता था और मां को कोई गीत अच्छा लगता था तो वो कहते थे कि इस गीत को लिख लो। तो मां उनके लिए टेप रिकॉर्डर थीं। हम उन्हीं के गीत सुन-सुन कर उन्हीं को सुनाते थे और उनकी उंगली पकड़कर घूमा करते थे। कभी-कभी वो कहते थे -'पोता, तोरा शादी में हम की करबैय?' हम कहते थे -'बाबा अहां लोकना बैन क' चलबैय।'

विभा - लोकना क्या होता है?

कन्हैयाजी- सहबाला। 'हमरा बियाह में तोय की?' हम कहते 'हम समधी बैन क' चलबैय'। उल्टा जो बोलते थे उनको अच्छा लगता था। बहुत स्नेह करते थे। उनको तोतली आवाज में गाना सुनाते थे, उसकी वजह से बहुत स्नेह करते थे।

विभा - आपकी मां तो उनकी बहू हुई। आमतौर पर मिथिला में बहू और ससुर के बीच काफी पर्दा रहता है। बहू ससुर के सामने आती नहीं हैं। ऐसे में आपकी मां उनके गीतों को कैसे गाती थीं? या कैसे सीखती थीं?

कन्हैयाजी- मुझे याद है कि मेरी मां आंख तक घूंघट करती थी। वो आते थे तो थोड़ा ओट में बैठते थे। वो पढ़कर सुनाते थे। फिर मां गाती थी। हमारी मां को गाने में कभी हिचक नहीं होती थी।

विभा- लता सम्प्रदाय का उद्देश्य क्या रहा?

कन्हैयाजी- लता सम्प्रदाय में उद्देश्य ये रहा कि रूप मूर्ति और लीला और धाम चार चीज है। जिस नाम का हमने चौबीस घंटे अष्टजाम किया है, उस नाम का कोई रूप होगा? भगवान का जितना भी स्वरूप होगा। उसमें सबसे सुंदर दुल्हा का रूप माना गया है। खासकर मिथिला वासियों के लिए। तो स्वरूप हो गया भगवान की जितनी भी लीला हुई है उसमें विवाह की लीला सर्वोपरि मानी गई है। इसलिए जहां-जहां भी रामजानकी मंदिर है खासकर मिथिला में समय निर्धारित नहीं है लोगों का लेकिन अष्टजाम और नवाह के बाद लोग प्रयास करते हैं कि हम सीताराम विवाह भी मनावें। अष्टजाम के बाद विवाह को पूर्ण रूप माना जाता है। नाम, रूप और लीला, जहां पर ये तीनों हो गया वह जगह अपने आप धाम बन जाता है।

विभा - उन्होंने भी इस चीज को प्रश्रय दिया कि मैं जो गा रहा हूं उसको हमारी बहू भी गा रही है। बहुत अच्छी बात आपने कही। आमतौर पर मिथिला में ससुर और बहू के बीच में पर्दे की दीवार है कि वह दीवार कभी टूट ही नहीं पाती। इस संगीत ने ही उस दीवार को तोड़ा।

कन्हैयाजी- जी।

विभा- स्नेहलता आपके दादा हैं। तो दादा के रचे गीतों को गाना आपको कैसा लगता है और किस रूप में अलग लगता है?

कन्हैयाजी- शुरू-शुरू में गांव में लोग जो कुछ गाते थे, हम भी वही गाते थे। स्नेहलता के पद को ही गाते थे। बाद में हमने थोड़ा सा अलग भी गाया। बाद में बहुत सारे लोग स्नेहलता जी के पद गाने लगे। हमको लगता था कि उसकी पारंपरिक धुन बिगड़ रही है तो उसको हमलोग गाते थे। अच्छा लगता था। बाहर में स्नेहलता जी के पोता के नाम से एनाउंसमेंट होता था तो लगा कि क्यों न उन्हीं के गीतों को अच्छे से गाया जाए। गाने के लिए तो हम सब चीज गाते हैं, लेकिन ज्यादातर स्नेहलता जी को ही गाते हैं।

विभा - स्नेहलता जी ने तो दस गाने लिखे नहीं होंगे, बहुत लिखे होंगे। किसी कवि की कोई रचना जब बहुत ही पॉपुरल हो जाती है, तब सब कोई वही गाना चाहते हैं और गाते हैं, क्योंकि वह लोगों के जेहन में बसा रहता है। आपने कोई कोशिश की कि जिन पदों को लोग न गा रहे हैं आप उन पदों को गाएं?

कन्हैयाजी- मेरा प्रयास यही रहता है। ऐसे भी मैं मंच पर पहले से कोई प्लान बना कर नहीं जाता हूँ। गाना तो हमारे पास बहुत है। वहां का सिचुएशन जैसा रहता है, वैसा गाना गाते है।

विभा - कितनी रचनाएं स्नेहलता जी ने लिखी हैं। गिन तो नहीं सकते मगर एक अंदाजा?

कन्हैयाजी- डॉ. योगानन्द जी जब उनके बारे में लिख रहे थे तो इनसे हमको कुछ प्रेरणा मिली गीत कलेक्शन की... नौ सौ से हजार के करीब उनके गीतों का कलेक्शन हमने किया है। यह कहना मुश्किल होगा कि उन्होने कितना लिखा। जहां गए, रचे और वहीं छोड़ दिया।

विभा - सुना कि वे आशु कवि थे। हर समय उनके मुंह से कविताएं निकलती ही रहती थी।

कन्हैयाजी- उस समय उनके साथ में कोई लिखनेवाला होता तो ज्यादा अच्छा रहता। हमारे गांव में कोई आशुलिपिक नहीं था।

विभा - आप कह रहे हैं कि लगभग हजार गीत उन्होंने रचे हैं। सारे के सारे गीत हमारे संस्कार से जुड़े हुए हैं। उनकी किताबें है? उनका कलेक्शन है क्या? वो मार्केट में उपलब्ध है?

कन्हैयाजी- बहुत पहले छपा था। अब वह भी उपलब्ध नहीं है।

विभा - कितनी किताबें छपी थी?

कन्हैयाजी- तीन- 'वैदेही विवाह संकीर्तन', 'विनय पदावली' और 'स्नेहलता चेतावनी'।

विभा - 'स्नेहलता चेतावनी' में किस तरह के गीत हैं?

कन्हैयाजी- मनुष्य को जीवन सुधारने के लिए चेतावनी है उसमें।

योगानन्द झा - चेतावनी में है कि संसार में रहते हुए, लौकिक जीवन में रहते हुए अनेक गलतियां तो करते ही हैं। जिससे इहलोक तो बिगड़ता ही है और परलोक भी बिगड़ जाता है। तो कैसा काम करें, जिससे पारलौकिक सिद्धि भी हो और लौकिक सिद्धि भी हो। वो सब रचनाएं है उसमें।

विभा - उनकी जो किताबें छपी थी। अब आपलोगों की कोई योजना है कि सारी रचनाएं फिर से प्रकाशित हो?

योगानन्द- स्नेहलता जी की रचनाओं के बारे में तो यही बता सकते हैं। पर उनका एक परंध काव्य मिला, उनके एक शिष्य रामलगन ठाकुर हुआ करते थे।

विभा - आपने यह कहा कि उनकी चार किताबें प्रकाशित हैं। आपने यह कहा कि लगभग एक हजार उनकी रचनाएं हैं। आपने यह भी कहा कि किताबें छपी तो लेकिन अप्राप्य है। तो जाहिर है कि नहीं मिलेंगी तो फिर से छपवाना पड़ेगा और जो बची हुई रचनाएं हैं उनको छपवाना भी पड़ेगा। लोकल लोग तो सुन रहे हैं और गा रहे हैं। जो लोकल लोग हैं उन्हें आप जाकर सुना देंगे। लेकिन जो लोग बाहर हैं उनके लिए तो किताबें ही एकमात्र उपाय है। कोई भी रचनाकार हो, उनकी रचना सामने आनी ही चाहिए। तो आपलोगों की क्या योजना है उनकी किताबें छपवाने की?

कन्हैयाजी- असल में संग्रह जो किया गया है, वह किताब छपने के लिए ही किया गया है। जनमानस तक वो पहुंचे। कुछ कारण हैं, इस वजह से नहीं हो पा रहा है।

योगानन्द जी - हमलोग प्रयासरत हैं। उनके जो बेटे और पौत्र हैं, उन्हीं के पास कॉपीराइट है। ये समझते हैं कि स्नेहलता को कोई छापता है तो उनमें उनको लाखों-करोड़ों का कारोबार होगा। मैथिली में जो किताब छपती है उसका हाल आपको मालूम ही है। मैथिली में अपने पैसे से लोग छपते हैं और उसका नि;शुल्क वितरण कर देते हैं। हिंदी में जो रचनाएं हैं, अखिल भारतीय स्तर पर उसकी क्या स्थिति होगी, यह सबको मालूम है। लेकिन हमारे प्रतिनिधि कवि हैं। हमारे प्रतिनिधि संत हैं। हमारे आध्यात्म के साथ हमारे सामाजिक जीवन से जुड़े हुए संत की रचनाएं हैं। कहा जाए अंतराष्ट्रीय स्तर पर मूल बिंदु हैं स्नेहलता। केवल उनके लड़के, जिनका नाम है श्रीकांत ठाकुर। उनके बच्चे हैं आगे की पीढ़ी के, उनमें से कोई नहीं चाहता है कि हमारा जो पिता है वह अखिल भारतीय स्तर का हो। वह केवल मेरा ही पिता है। उसे अपनी ही सीमा में रखना चाहिए। उसकी रचना से हम दो पैसा कमा सकते हैं। यह मनोवृति उनकी जबतक बनी रहेगी तबतक, जबतक उनकी मृत्यु के 50-60 साल नहीं हो जाएंगे। तबतक कोई संस्था ही आगे बढ़े, तभी संभव है, क्योंकि इनका जो 'वैदेही विवाह संकीर्त्तन' है, हमलोग उसका ब्लॉक यूज कर के तीन-तीन बार छाप चुके हैं। इसतरह की परिस्थिति है। और स्नेहलता मोनोग्राफ संस्करण जो मैंने लिखा था, उसके भी तीन बार रीप्रिंट साहित्य अकादमी द्वारा हो चुके हैं। फिर भी उसका डिमांड बना हुआ है। आगे फिर संस्करण जारी करना ही होगा। लेकिन उनके परिवार के कोई समझे तब तो किसी प्रकाशक को दें।

विभा - योगानन्द जी। आप साहित्य से भी जुड़े हुए हैं तो उस एंगल से समझा पाएं तो शायद कुछ बात बने। लेकिन एक बार कहने पर शायद नहीं मानंगे। उन्हें आपको बार-बार समझाना पड़ेगा कि लेखक कभी पैसा नहीं कमा पाएगा। भारतीय भाषा का लेखक वो भी हिंदी और मैथिली का! वह तो कभी नहीं कमा सकता है।

कन्हैयाजी- उसमें एक बड़ी समस्या हो गई थी शारदा सिन्हा को लेकर। कभी उनकी चलती थी और वो जीवित थे उसी समय में शारदा सिन्हा ने उनके कुछ गीतों को टेप करने और गाने के लिए लिया। पांच छह गीत लिए। उन्होंने सौ-पचास रुपए दे दिए, आज के डेट में हजार-दो हजार रुपए हो सकते हैं। इसी को उनके बच्चे भंजा रहे हैं।

विभा - उन्हें ये समझना होगा कि फिल्म, टीवी और म्यूजिक ऑडियो की दुनिया अलग है। प्रिंट की दुनिया अलग है। नही तो लेखक भूखे नहीं मरता। शारदा सिन्हा जी को कितना मिलता होगा, मुझे मालूम नहीं। लेकिन एक लेखक पूरी जिंदगी में एक साथ एक लाख रुपया देख भी नहीं सकता है। चाहे लाखों प्रति किताब छपी हो। मान लीजिए एक किताब का दाम है दो सौ रुपए। उसकी रॉयल्टी मिलती है दस प्रतिशत। तो एक किताब पर उसको बीस रुपया मिलेगा। उसकी कितनी किताब बिकेगी तो उसको एक लाख रुपए मिलेंगे।

योगानन्द झा - वह भी प्रकाशक छाप रहा है और बेचने का हिसाब उसे दे रहा है। प्रकाशक लेखक के प्रति कितना ईमानदार है वह तो वो जाने।

विभा - लेखन सिर्फ समाज के लिए है। हिंदुस्तान में भारतीय भाषाओं के लेखन में पैसा तो है ही नहीं। हम तो पैसा लगा कर छपवाते हैं।

योगानन्द- भारतीय भाषाओं का क्या ! शेक्सपीयर को भी रॉयल्टी और कॉपीराइट पर कहना पड़ा कि जो तुम दे दोगे उसी तो पर हम काम चला लेंगे। बाकी भाषाओं का कहना ही क्या।

विभा - कन्हैया जी, स्नेहलता जी वैदेही विवाह का आयोजन कराते थे। उसका इस साल अस्सीवां आयोजन हुआ। उसको मैंने अटेंड किया। इस अस्सी साल में ये आयोजन और ऊपर की ओर उठा है या नीचे की ओर गया है? कौन सी बात है जो इस वैदेही विवाह को अस्सी साल तक लेकर आया है? उल्लेखनीय रिकॉर्ड है। अच्छा हो या बुरा हो यह बाद की बात है। अस्सी साल से हो रहा है, वह भी बिना नागा, वो भी क्षेत्रीय भाषा के लेखक के ऊपर, यह अपने-आप में बहुत बड़ी बात है। इसको तो विश्व रिकॉर्ड में दर्ज होना चाहिए। लेकिन आज की स्थिति क्या है?

कन्हैयाजी - पहले तो स्नेहलता जी मोदलता जी के सिर्फ विवाह से संबंधित प्रसंग पर आधारित होते थे। अब नए-नए जमाने के कलाकार भी हैं और श्रोता भी हैं। इस हिसाब से अनुरागी लोगों को थोड़ा सा खटकता है। उस हिसाब से उस भाव का अभाव दिखता है।

योगानन्द - स्नेहलता के प्रति जो श्रद्धा है, अभी चौथी पीढ़ी की है युवा पीढ़ी की और अब पांचवीं पीढ़ी आ चुकी है। जो लोग उनके प्रति श्रद्धावान हैं उन्हीं के द्वारा ये अस्सी साल तक चला है। उसका पारंपरिक ढ़ांचा थोड़ा-सा बदला है। कार्यक्रम रंगारंग हो गया है। विवाह वही है। उसमें बढ़ोत्तरी हुई है। उसमें कमी नहीं आयी है। पर है कि पद्य बदल गए हैं।

विभा - मैंने उनका घर भी देखा है। वहां एक चौराहा है। ये योजना बनाई जा रही थी कि स्नेहलता जी की मूर्ति वहां स्थापित की जाए।

कन्हैया जी - उसी जगह उनका दाह-संस्कार हुआ था। वह उनका समाधि स्थल है। वहां पर उनकी मूर्ति स्थापित हो या संग्रहालय बने, इसी उद्देश्य से वहां दाह-संस्कार हुआ था, लेकिन अब तक नहीं हो पाया है। यह दुर्भाग्य है।

योगानन्द झा - उसमें कारण है कि स्नेहलता जी की स्थापित की हुई एक संस्था है 'लोककला संस्कृति संस्था' जिसके माध्यम से यह सब होता है। इस संस्थान की खूबी है कि संपूर्ण गांव को, एक कृषक है गांव में। ज्यादा नौकरिहारा हैं नहीं, जो कैश कमाते हैं। कैश की कमाई नहीं होने पर भी जितने भी परिवार हैं, सारे के सारे इस यज्ञ में शामिल होते हैं। जैसे पोसिंदा को खेत में एक भाग दिया जाता है, उसीतरह से इनलोगों ने बना रखा है कि धान का एक भाग स्नेहलता के कार्यक्रम के लिए निकालकर रख दिया जाएगा और

उसको बेचकर जो पैसा आता है और फिर जो चंदा किया जाता है उसी से कार्यक्रम किया जाता है। और इसतरह से श्रद्धा बनी हुई है स्नेहलता पर।

कन्हैयाजी - किसान वर्ग का चंदा अलग होता है और नौकरीपेशा या किसी और माध्यम से पैसा कमानेवलों के चंदे अलग से होते हैं।

विभा - मैं ये जानना चाहती हूं कि उनकी मूर्ति स्थापना के विषय में अगर कोई काम हुआ हो तो?

योगानन्द झा - मूर्ति स्थापना के बारे में जितना मुझे मालूम है, वह बता दूं आपको। मूर्ति स्थापना के लिए चौबीस हजार रुपया देनेवाले थे उनके बेटे श्रीकांत ठाकुर। सबसे बड़ी बात है कि सिंगल आत्मज हैं। कहना चाहिए कि कुछ पारिवारिक कारण से भी उनका उतना स्नेह नहीं बन पा रहा है अपने पिताजी के प्रति। कारण जो भी हो।

कन्हैयाजी - स्नेहलता स्मृति पर बनाते थे आज के दिन तीसरा दिन तो मंच खाली हो जाता है। स्नेहलता पर चर्चा हो और उस यज्ञ में जो भी त्रुटियां हो। इस संदर्भ में मैंने कहा था स्नेहलता के बेटे तो वो नहीं हैं। वो कपिलदेव ठाकुर के बेटा हो सकते हैं। स्नेहलता के बेटा तो हमलोग हैं, जो गायक कलाकार हैं या आपकी बेटी की शादी में दो-चार गीत स्नेहलता का गाया गया हो तो आपका भी कुछ न कुछ दायित्व बनता है। इस स्तर पर हमने बात की थी। बाद में कुछ ग्रामीण पॉलिटिक्स के कारण स्नेहलता स्मृति बंद पड़ा है। लोग इसपर चर्चा नहीं करना चाहते हैं।

योगानन्द झा - स्नेहलता में सबसे बड़ी खूबी थी कि उन्होंने एक इंडस्ट्री स्थापित की। यह गांव पूर्णतः कृषि पर आधारित गांव था। कृषि कोई सालो भर का रोजगार तो है नहीं, कुछ समय खाली रहता है। उस समय लोग अपने घर में बैठ कर अपना गाना-बजाना, अपनी लीला करते हैं। इन्होंने देखा कि भाई यहां कैश का तो कोई प्रबंध है नहीं। इस गांव के बच्चों, बुजुर्गों या सहकर्मियों में या साथ-साथ जो पैदा हुए थे, उनकी पीढ़ी के लोग थे तो इन तीनों में से किसी पास नहीं था। तो इन्होंने अपने गीतों के माध्यम से और लोगों की भक्ति-भावना को आधार बनाकर एक इंडस्ट्री की प्लानिंग की। वह इंडस्ट्री कैश फेचिंग इंडस्ट्री हो गई, उन लोगों के लिए, जो उन महीनों में बैठे रहते थे, जिस महीने में कृषि का काम नहीं होता था। अगर आर्थिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो वह भी ऑफ सीजन इकॉनोमिक के लिए उन्होंने बहुत बड़ी इंडस्ट्री दी। दुर्भाग्य है कि आज तक वह गांव उनके पदों का संग्रह नहीं कर पाया। स्नेहलता में एक लत थी कि वह लिखा देते थे लोगों को। कोई गया और कहा कि आज मेरी बेटी की शादी है तो इस बार कोई नया पद दीजिए। तो वह लिखा देते थे। लेकिन न तो उन्होंने अपने पदों संकलन किया न कभी लिखा। इसलिए रिसर्चर को बहुत कष्ट से कोई पद मिल पाता है। और ग्यारह सौ पदों की जो चर्चा की है कन्हैया जी ने तो मैं समझता हूं कि इन पदों का संकलन निकल जाए । इनकी जो संस्था है वह स्नेहलता पर ही केंद्रित है, उन्हीं के द्वारा स्थापित है। वह अगर छपाई की व्यवस्था करे तो बेहतर होगा। हमलोग

कॉपीराइट उस संस्था को दे देंगे। वह संस्था केवल स्नेहलता के लिए ही काम करती है तो कहीं कोई प्रॉब्लम नहीं होगी।

विभा - मैं कल गई थी उनके घर, जहां स्नेहलता जी का जन्म हुआ था। मुझे लगा कि उस घर को 'स्नेहलता स्मृति सदन' के रूप में सुरक्षित रख दिया जाए जस का तस। उसमें तोड़-फोड़ न किया जाए। हां, उसमें आवश्यक जो मरम्मत हो कर के... जैसे सदाकत आश्रम है डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का। वैसा ये ऐसा स्थल बन जाए, जहां स्नेहलता पर काम करनेवालों के लिए एक पूरा का पूरा संग्रहालय हो, उनके कपड़े हो, उनके चश्में हो, उनके इस्तेमाल आनेवाला ग्लास या जो कुछ भी हो, उनकी पांडुलिपियां या जो कुछ भी हो। इस विषय में कुछ सोच रहे हैं या उनके परिवार वालों...?

कन्हैयाजी - मैथिली अंतर्राष्ट्रीय समारोह कलकत्ता में स्नेहलता जी को सम्मानित किया गया। उसे लाने के लिए हमने उनलोगों को चलने को कहा, पर हमारे साथ कोई नहीं गया। मैं, मामा जी और स्नेहलता जी की पत्नी गए। शॉल और कुछ पैसा था। स्मृति चित्र था। बाबा के सम्मान के लिए कलकत्ता में स्नेहलता जी की पत्नी की आँखों में आंसू आने लगे। वे बोलीं- 'बउआ, ई समान तोरे हियां ठीक स रैह सकै छै। कोने पहिर क' लैट्रिन चयल जैतये, ई कागज जे देला ई कहीं फेंका जतय। अइके तोरे हियां सुरक्षित रैह सकै छै। हम वह लेकर हम रख लिए।

योगानन्द झा - जहां इसतरह की प्रवृत्ति है, वहां यह आशा करें कि जिस घर में स्नेहलता का जन्म हुआ था, वह घर स्नेहलता संस्थान हो जाए? यह सम्मान हमारे मिथिला क्षेत्र में मधुप जी को मिला, जिन्होंने खुद बगीचा खरीदा था। उनके तीन लड़के थे। उन तीनों लड़के में से दो ने दान नहीं किया। हालांकि एक लड़का मधुप जी के कारण ही वहां तक पहुंच सका, जहां वह नहीं पहुंच सकता था। लेकिन उसने अपनी वह जमीन दे दी मधुप दंपति की मूर्ति की स्थापना के लिए। और सालाना पर्व समारोह करते हैं। यह परिकल्पना श्रीकांत जी नहीं कर सकते हैं। स्नेहलता के देहांत के तीस साल हो चुके हैं। इस तीस साल तक में मूर्ति की स्थापना के लिए उस गांव के लोग चाहकर भी पैसे नहीं जुटा सके। जो वैदेही विवाह का कार्यक्रम होता है उस फंड में से नहीं करवा सके। उनसे हम क्या अपेक्षा कर सकते हैं। हमलोगों का यह दुर्भाग्य है।

विभा - हम इंसान हैं। हम ही अपने दुर्भाग्य भी रचते हैं और मनुष्य ही अपने दुर्भाग्य को दूर भी करता है। हम उम्मीद कर ही सकते हैं कि जबतक उनके ऊपर चार लोग सोचनेवाले हैं, तबतक कुछ न कुछ होता रहेगा। उनकी चीजें आ रही हैं। जैसे आप जुड़े हुए हैं और हम जुड़े, आप हैं। सब-के-सब निःस्वार्थ भाव से जुड़े हुए हैं। एक चीज की जाए कि वर्तमान में उनकी सारी रचनाओं को एक जगह करें और जो-जो मिलता चला जाए उसको जोड़ते चलें।

कन्हैयाजी- हम सब उसी प्रयास में लगे हुए हैं।

विभा - मैं भी वही कह रही हूं। किसी भी रचनाकार का काम है रचना, लिखना। अगर लेखक है या कवि है तो इसका मतलब यह है कि वह उस फॉर्म में है। जैसे मूर्तिकार की मूर्ति है तो वह जीवित है। वैसे ही रचनाकार भी अपनी रचना के माध्यम से जीवित है। उसको लेकर के आपलोग जैसे भी हो उसको सामने लेकर आएं, ताकि यहाँ जो भी आएंगे उनके काम करने का दायरा बढ़ेगा। उससे लोगों को शोध काम करने कन्हैया जी - जी। सही सुझाव है। बहुत सकारात्मक सोच है। निश्चित ही हम सब इसआगे करने की सोचेंगे।

विभा - स्नेहलता ने बहुत सारे गाली गीत लिखे हैं, उनमें से एक गाली गीत आप गा कर सुना दें।

कन्हैया जी -

कोना के दियइ गारी हे सिया साजन,
जिनका जे गारी पढ़े केहन पढ़ता,
हमरा लगैय दोसर सरोकारी,
हे सिये साजन, कोना क दिये गारी,
एक दिन क देखने मिथिला मोहित भेल,
त बचली कोना क‘ अवधपुर क नारी
कोना क दिये गारी हे सिये साजन,
ई बतिया सुनि छक द‘ लगैइह
जौ किये कहैइय हिनकर बहिनी छिनारी,
कोनो क दिये गारी हे सिय साजन,
स्नेहलता अपनौति क‘ कारण
अपने मे करि कतैक उघारी,
कोना क‘ दिय गारी हे सिया साजन। ###

मुकेश सागर:

युवा मुकेश सागर अपनी जमीन से जुड़े रहे हैं। मेरा इनसे परिचय 2011 में शायद हुआ। तब मैं चेन्नई में हुआ करती थी। फेसबुक के माध्यम से ही हम दोनों जुड़े और साहित्य और रंगमंच की बातों पर आ गए। मुकेश तब दिल्ली में रहते थे । बातचीत के क्रम में इन्होंने स्नेहलता के बारे में बताया और अपनी मंशा भी जाहिर की कि मैं चाहता हूं कि कोई स्नेहलता पर काम करे और उनका साहित्य बाहर आए। लोगों को उनके बारे में पता चले। मुकेश ने स्नेहलता के बारे में जितना बताया, उसे सुनकर स्नेहलता के बारे में और भी जानने की इच्छा बलवती हुई। इसके बाद बात आई गई हो गई। 2016 में मैं फिर से मुकेश से मुखातिब हुई और स्नेहलता के बारे में काम करने के लिए समस्तीपुर उनके घर गई। उनके यहां ही ठहरी। मुकेश ही अपनी गाड़ी से मुझे दरोड़ी तक लेकर गए। वहां सभी से परिचय करवाया और फिर हम विवाह पंचमी में आने के वादे के साथ लौट आए। इस शोध कार्य को करने का मूल सूत्र मैं मुकेश को ही मानती हूँ। युवा मुकेश की यह आग मुझे बहुत भाई। प्रस्तुत है उनके साथ हुई बातचीत का एक अंश-

विभा - आपका पूरा नाम क्या है? आपके गांव का नाम क्या है और आप क्या करते हैं?

मुकेश- मेरा पूरा नाम मुकेश कुमार सिंह है और मेरे गाँव का नाम बाबूपुर है। मैं एक छोटे से व्यवसाय के अलावे अपनी पुश्तैनी खेती बाड़ी देखता हूँ।

विभा - आपका गांव स्नेहलता जी के गांव दरोड़ी से कितनी दूर है।

मुकेश- तकरीबन 8 से 10 किलोमीटर

विभा - आप उनके गांव कब जाते हैं?

मुकेश- प्रायः जाता रहता हूँ।

विभा - स्नेहलता जी से क्या आप निजी तौर पर कभी मिले थे।

मुकेश- नहीं।

विभा - स्नेहलता और उनके साहित्य को आप कैसे जानते हैं ।

मुकेश- स्नेहलता जी के संदर्भ में मुझे उनके स्थानीय होने के कारण झुकाव हुआ और फिर उनके गीतों के कारण उनके साहित्य से परिचय हुआ । वो सारे गीत हमारे पारंपरीक गीतों में काफी घुलमिल गए थे इसीलिए उनमें फ़र्क़ कर पाना बहुत मुश्किल था। फिर वही से उनपर और उनके गीतों पर रिसर्च चालू हुआ।

विभा - आप थिएटर से हैं। क्या आपने अपने थिएटर के माध्यम से स्नेहलता पर कुछ किया?

मुकेश- नही। जब मैं थिएटर करता था उस समय उनके विषय मे जानकारी नही थी। और जब जानकारी हुई तब थिएटर छूट चुका था।

विभा - स्नेहलता आपकी नजर में कैसे आए?

मुकेश- मैने उनके विषय मे कहीं पढ़ा और जब दिलचस्पी जगी तब उनपर खोज चालू किया। पहले पढ़ा सुना और भटका फिर आपसे संपर्क किया।

विभा - क्या आपके परिवार के लोगों में से कोई गीत या स्नेहलता के गीत गाता या गाती है?

मुकेश- मेरी माँ और दादी गाती थीं, किसी संस्कार या विवाह के अवसर पर, बिना ये जाने कि ये किसके गीत हैं।

विभा - क्या आपने अपने यहां कुछ सोचा है स्नेहलता के साहित्य को जीवित रखने का?

मुकेश- प्रयास तो है। मेरी कोशिश है कि उनको उचित सम्मान मिले और उनके साहित्य को प्रकाशित किया जाय।

विभा - आप दिल्ली में भी रहे? थिएटर करते रहे। क्या तब आपको स्नेहलता के बारे में जानकारी थी? वहां आपने इनके रचना कर्म को या इनके बारे में लोगों को बताने के लिए क्या क्या किया?

मुकेश- जी हां। दिल्ली में साहित्य अकादमी और रंगमंच के मित्रों से चर्चा किया करता था। खोजता रहा कि कोई ऐसा मिले जो इस काम को उठाए।

विभा - स्नेहलता का मूल्यांकन आप किस रूप में करना चाहते हैं ।

मुकेश- उनका उचित मूल्यांकन अभी नही हुआ है। किया जाना बाकी है। मेरे दृष्टिकोण में वो एक बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे जिन्हें अब तक उचित सम्मान नही मिला। अगर दिला पाया तो वही उनका मूल्यांकन होगा।

विभा - आपके आसपास वैसे कौन से लोग हैं जो स्नेहलता को गाते हुए बड़े हुए हैं ।

मुकेश- सही मायने में उनके गीतों के बिना मैने आजतक एक भी विवाह या मुंडन सम्पन्न होते नही देखा है।

विभा - प्रशासन या राज्य सरकार स्नेहलता को संरक्षित करने के लिए क्या कदम उठा रहे हैं।

मुकेश- सम्भवतः उनको पता भी नही होगा कि इस नाम के कोई व्यक्ति भी हुए थे, जिनके गीत आज भी यहां के जन जन गाते हैं।

विभा - स्नेहलता का गांव और उसके आसपास के गांव और वहां के लोग स्नेहलता के रचनाकर्म को बचाए रखने के लिए क्या कर रहे हैं।

मुकेश- उनके द्वारा आयोजित विवाह कीर्तन मंडली आज भी घूम घूम कर गांव गांव में कार्यक्रम करते हैं। हर साल वे सब मिलकर विवाह पंचमी को एक भव्य कार्यक्रम उनके गांव डरोड़ी में करते हैं। असल में, इसे स्नेहलता जी ने ही अपने जीवन काल में शुरू किया था। हर साल उनके जीवन काल से ही अनवरत होता आया है, जो अब भी जारी है।

विभा - स्नेहलता की अभी भी हजारों रचनाएं अप्रकाशित हैं? वे कहां हैं और उन्हें कैसे प्राप्त और प्रकाशित किया जा सकता है?

मुकेश- उन्होंने अपने गीतों को कभी संरक्षित नही किया। जो भी आया, जिसने भी मांगा, उन्ही को लिख कर सौंप दिया और जिनको मिला उन्होने उसे अपनी मिल्कियत बना ली।

कुछ उनके गांव में और कुछ बाहर के कलाकारों के पास तथा कुछ परिवार में होनी चाहिए।

विभा - आमतौर पर स्त्री रूप धारण करना या स्त्री नाम रखना पुरुषों के लिए बहुत ही हास्यास्पद या अपमानजनक होता या माना जाता है। ऐसे में कपिलदेव ठाकुर ने अपना नाम स्नेहलता क्यों रखा। नाम रखने के साथ क्या उनके हाव-भाव चाल ढाल बात विचार में भी स्त्रियोचित परिवर्तन आए थे?

मुकेश- ऐसी धारणा रही है। किंतु यहां मामला भावनात्मक तौर पर भक्ति और प्रेम से जुड़ा हुआ रहा है। दरअसल कपिलदेव ठाकुर के स्नेहलता बनने के पीछे उनके प्रभु श्रीराम के प्रति, माता सीता के नाते स्वयं को उनके सखा के नाते अपने बहनोई के रूप में स्वीकार करने की भावना थी, जो कालांतर में उनकी रचनाओं की पृष्ठभूमि बनी।

विभा - और भी जानकारी या बातें जो आप यहां हमें कहना चाहे।

मुकेश- उनके संदर्भ में एक बात, जो आपको बतानी आवश्यक है, वो यह कि वे अपनी विलक्षण प्रतिभा के कारण प्रख्यात थे । लोग निमंत्रण पत्र के लिए भी उनसे गीत लिखने का आग्रह करते और वो बिना समय लिए तुरंत उसपर गीत बना कर दे देते। सरस्वती पूजा और अन्य आयोजन के निमंत्रण पत्र उनके गीतों से सजे होते थे। ###

मोहन भारद्वाज व अशोक

मोहन भारद्वाज मैथिली के सुप्रसिद्ध आलोचक रहे हैं। इनकी आलोचना की कई किताबें प्रकाशित हुई हैं। साहित्य अकादमी और बिहार राज्य मैथिली अकादमी से जुड़े रहे एक निष्पक्ष आलोचक के रूप में मोहन भारद्वाज की छवि रही है। मेरे लिए यह एक प्रश्न था कि साहित्य की मुख्य धारा में लोक रचनाकारों को लेकर आया जा रहा है या नहीं। विद्यापति लोक रचनाकार से ऊपर के साहित्यकार थे, शायद अपनी संभ्रांतता और राज कवि होने के नाते या अपने मैथिली के साथ-साथ मुख्य रूप से संस्कृत के ज्ञाता होने के कारण। लेकिन स्नेहलता के पास विद्यापति जैसा प्रभुत्व शायद नहीं था। ऐसे में हम अपने जन कवियों या लोक रचनाकारों को साहित्य की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए कितना काम करते हैं, मेरे लिए उत्सुकता का विषय था। इसी पर मोहन भारद्वाज और मैथिली के यशस्वी कथाकार और संपादक अशोक जी से थोड़ी बहुत बातचीत हुई, जो यहां प्रस्तुत है, हालांकि उस समय मोहन जी बहुत बीमार थे। बावजूद इसके उन्होने मुझसे बात की, जिसके लिए मैं उनकी हृदय से आभारी हूँ।

विभा - मोहन जी, आप मैथिली के सबसे श्रेष्ठ व सम्मानित आलोचक और रचनाकार हैं। स्नेहलता ने बहुत सारी रचनाएं की हैं और उनकी रचनाओं का सबसे बड़ा असर ये रहा कि उनकी रचनाएं जनमानस में हैं। आप मैथिली के आलोचक और लेखक हैं। इस रूप में आप स्नेहलता को और स्नेहलता के साहित्य को किस रूप में देखते हैं?

मोहन भार. - सच्चाई यह है कि उनकी रचनाएं मैंने बहुत कम देखी हैं। और जो देखी हैं, वे आज मुझे याद नहीं। इसलिए मैं विस्तार से या थोड़ा भी विस्तार से कुछ कहने की स्थिति में नहीं हैं। हम चिकित्सा में चल रहे हैं और जिंदा हैं यही बहुत है। क्योंकि जो स्थिति है, घर में बच्चों का नाम भूल जाते हैं।

विभा - मैथिली साहित्य आज जिस स्थिति में है उसको आप किस रूप में देखते हैं?

मोहन भार. - मेरी समझ से आज मैथिली साहित्य चुप है।

विभा - किस रूप में चुप है?

मोहन भार. - कोई काम नहीं हो रहा है। कुछ न कुछ आ रहे हैं नए लोगों की। कुछ पुराने लोगों की छप रहे हैं। लेकिन वह चीज नहीं आ रही है, जो आनी चाहिए।

विभा - एक समय था, जब कहा जाता था कि मैथिली संविधान में दर्ज नहीं है। इसलिए इसका विकास नहीं हो रहा है कि सरकार ने ध्यान नहीं दिया। 2004 से वह स्थिति बदल गई। अब संविधान में दर्ज हो गई।

मोहन भार. - मेरी समझ से अभी जो स्थिति है वह स्वाभाविक है। सामान्य बाजार में, परिवार में या दुनिया में आपने देखा होगा कि जोर-शोर से काम होता है। लेकिन जोर-शोर से काम करने के पीछे उसकी एक इच्छा होती है, आकांक्षा होती है। वही इच्छा जब खत्म हो गई तो उसके बाद काम बंद।

विभा - क्या अब ये मान लिया जाए कि मैथिली में इतना लिख लिया गया है कि अब कुछ बचा ही नहीं है लिखने के लिए।

मोहन भार. - नहीं। कुछ लोग तो थक गए हैं। नए लोग जो आ रहे हैं कुछ अच्छे लोग हैं। लेकिन उनका नयापन कुछ दूसरे ढंग का है। जिनको कोई पहचान नहीं रहा है, समझ नहीं रहा है। उसको स्थान नहीं मिल रहा है।

विभा - ये कह सकते हैं कि नया स्वर है तो वह अपने नए रूप में ही लिखेगा। वह पुराने से ऐसी क्या दिक्कत आ रही है कि नया लेखन है, युवा लेखन है। हम उसे नहीं समझ पा रहे हैं या कथ्य के लेवल पर नहीं समझ रहे हैं या कलेवर के स्तर पर नहीं समझ रहे हैं या शैली के स्तर पर नहीं समझ पा रहे हैं।

मोहन भार. - समझनेवाली समस्या भी नहीं है। समस्या है अपने को बड़ा समझने की। नए लोगों को हम मोजर नहीं दे रहे हैं। पुराने लोगों को ये लोग मोजर नहीं दे रहे हैं या उनकी शिकायत कर देते हैं। इसी चक्कर में साहित्य का रवैया पीछे चला गया।

विभा - आपने तो सभी को परखे हुए हैं? नए लोगों में कौन हैं जो आपको ज्यादा प्रभावित कर रहे हैं। जिनसे एक उम्मीद बनती है कि ये मैथिली को आगे लेकर जाएंगे। या भारतीय भाषाओं के समकक्ष या उससे आगे लेकर जाएंगे।

मोहन भार. - नाम याद नहीं कर पा रहा हूं। लेकिन कुछ लोग हैं। नई चीज लेकर आ रहे हैं और काफी उत्साह से आ रहे हैं और काफी प्रशंसनीय हैं। मैं उनके बारे विस्तार से कहूं तो संभव नहीं है।

विभा - आप अपने लेखन के बारे में बताएं आप अपने लेखन से कितना संतुष्ट रहे। कितना अभी तक करना था नहीं कर पाया या अभी तक करने की प्रक्रिया में है। आपकी अपनी रचना यात्रा।

मोहन भार. - मैथिली के लेखन में व्यक्तिगत मेरी नजर में मैं संतुष्ट हूं। यह जरूर है कि बहुत इच्छाएं बाकी हैं। यह नहीं हुआ, यह नहीं हुआ। लेकिन जो हुआ है वह भी कम नहीं है। इसीलिए मैंने कहा कि जिन भी पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं छपी है, उन पत्र-पत्रिकाओं से रचना निकालकर उसपर कुछ कार्य करने का अभियान चल रहा है। परिवार के लोग कर रहे हैं। जितना भी मैंने लिखा है उसको संग्रह करने का कार्य चल रहा है। यह भी जरूर है कि यह कम नहीं है।

विभा- साहित्य के लोक पक्ष और साहित्य व लोक के अंतरसंबंध पर आपकी राय?

मोहन भार. - अभी तो काफी आया है। साहित्य को जानने के विषय में। वैसे दिखलाने के पक्ष में लोक पक्ष रहा है। लेकिन अभी लोक पक्ष को पॉजेटिव नजर से देखा जा रहा है। लेखन में आ रहे हैं या लिखने में आ रहे हैं। दोनों में संख्या अच्छी है और बहुत संतुष्टप्रद है।

विभा - आज कितने मैथिली लेखक लोक साहित्य में लोक को लेकर या लोक के विविध रंगों को लेकर आ रहे हैं?

मोहन भार. - इस बिंदु पर मेरा कुछ मतभेद है। लोक का अर्थ क्या है। सीढ़ी है, जिसे टारा गया है अभी तक। बड़े लोगों के द्वारा, श्रेष्ठों के द्वारा, धनिकों के द्वारा, विद्वानों के द्वारा। ऐसे-ऐसे जो लोग हैं उनको देखना, गांव-घर में जो लोग हैं उनको देखना। इनकी प्रवृत्ति बढ़ी है। लेकिन प्रवृत्ति बढ़ी है तो उनका महत्व बढ़ गया है बहुत। ऐसा फील हो रहा है। तब यह जरूर है कि उनका हस्तक्षेप बढ़ा है। उसको और थोड़ा विस्तार होना चाहिए। उनको और गहराई में लेना चाहिए। दोनों की आवश्यकता है।###

<u>अशोक</u>

विभा - स्नेहलता पर आप अपनी राय और बातें बताइये।

अशोक- गीत सब बुझते थे सुनते थे, लेकिन यह नहीं पता था कि ये गीत स्नेहलता के हैं। आम जीवन में हमलोग भी सुनते थे 'पहुनमा राघो' गीत बहुत अच्छा गीत है। लेकिन स्नेहलता का लिखा हुआ है और स्नेहलता कौन हैं, वह इधर आकर जाना। अगर आप कहेंगे कि मैं उनके बारे में बहुत कुछ जानता हूं तो हकीकत यह है कि मैं उनके बारे में उसतरह से नहीं जानता हूं। गीत जानता हूँ- 'पहिरे लाल साड़ी, उपारे खेसारी' ये गीत जगदम्बा का था। ये था कि अलग-अलग जिले में अलग-अलग तरह से प्रचलित था। हो सकता है कि मधुबनी परिसर में जो गीत प्रचलित हो रहा हो, सुपौल में हो सकता है, लेकिन सहरसा, पूर्णिया में नहीं है।

विभा - स्नेहलता का नाम तो बहुत है, लेकिन साहित्यक मूल्यांकन नहीं हुआ?

अशोक- हां, नहीं हुआ। उनके ऊपर मोनोग्राफ योगा बाबू (योगानन्द झा) लिखे हैं।

विभा - उनकी रचनाएं लगभग दो-ढ़ाई हजार है। वे मिल नहीं रही हैं। कैसे मिल सकती हैं?

अशोक- नहीं कहा जा सकता।

विभा - मुझे लगता है कि जनकवि विद्यापति भी थे और स्नेहलता भी थे। जैसे विद्यापति का साहित्यक में मूल्यांकन हुआ, उस हिसाब से स्नेहलता का कोई स्थान ही नहीं है। इसका कारण क्या है?

अशोक- नहीं, हमसब तो मानते हैं कि अभी तक विद्यापति का भी मूल्यांकन जिस हिसाब से होना चाहिए था, उस हिसाब से नहीं हुआ है। जो मानसिकता विद्यापति के साथ है वही मानसिकता स्नेहलता के साथ भी है। हम अलग करके नहीं देखते। मैथिली में जो जागरूकता होनी चाहिए, जिस इंटलेक्चुअलिज़्म के साथ बात होनी चाहिए, वह नहीं है। भाषा के प्रति लगाव और समर्पण नहीं है तो कहां से होगा। हम सब मैथिल और मैथिली के बारे में बात करेंगे तो लोग समझते हैं कि ये रूढ़ि की बात कर रहे हैं।

विभा- स्नेहलता को साहित्य की मुख्य धारा से नहीं जोड़ा गया है, विद्यापति की तरह। इसीलिए शायद साहित्यकार भी उनके बारे में कम ही जानते हैं।

अशोक- हो सकता है। लेकिन मैं यह मानता हूँ कि आपका रचनाकर्म आपका सबसे बड़ा कर्म और धर्म है। स्नेहलता का साहित्यिक मूल्यांकन हुआ है या नहीं, इससे अधिक जरूरी यह जानना है कि उनके गीत आज कहाँ तक पहुंचे हुए है। और यह तो सुखद है ही कि क्या पढे लिखे या क्या आम जन, सभी उनके गीत गाते हैं। उनके गीतों के बिना मिथिला की कोई शादी सम्पन्न ही नहीं मानी जा सकती।

मिथिलेश जी

मिथिलेश जी दरोडी गांव के जैसे चलते फिरते इनसाइक्लोपीडिया हैं। खूब बात करनेवाले। एक सेकेंड के लिए भी किसी और को मौका ना देनेवाले। हर बात को अपने फेवर में कर लेने की कला में माहिर मिथिलेश जी से बातचीत कम और जानकारी ज्यादा मिली। इसमें कितना यथार्थ और कितनी बताही है, आप भी अंदाजा लगा सकते हैं-

मिथिलेश- नंददेव जब आए कर्नाटक से तो शिवराम गढ़ में प्रथम राजधानी बना कर मिथिलांचल की भूमि को कब्जा किए। मिथिला के राजा वो हुए। मिथिला का टैक्स वसूलकर दिल्ली भेजना बंद किए। उनके सभा पंडित थे पंडित कामेश्वर ठाकुर और राजपंडित थे उनके पिता चंडेश्वर ठाकुर। उनको बसने के लिए ओयनी गांव दिया गया था। राजपंडित और सभापंडित के लिए। नंददेव जब टैक्स वसूल कर दिल्ली भेजना बंद किए तो नंददेव को कैद कर के ले गया बादशाह दिल्ली। और कामेश्वर ठाकुर अपनी विद्वता का परिचय दिए, वह चतुर विद्वान थे। उन्हें मिथिला का शासक नियुक्त कर दिया गया। ओयनवार वंश जो कहते हैं, कामेश्वर ठाकुर का बेटा भोगेश्वर ठाकुर राजा हुए। भोगेश्वर ठाकुर का बेटा विरेश्वर ठाकुर राजा हुए। विरेश्वर ठाकुर का बेटा दानेश्वर ठाकुर राजा हुए। जिसके बाद उनके बेटा वीरसिंह देव राजा हुए। वीरसिंह देव का बेटा हरिसिंह देव राजा हुए, जिन्होने नेपाल विजय किया। उनके बेटा कृति सिंह राजा हुए। कृति सिंह निःसंतान हो गए तो भोगेश्वर के भाई भवसिंह का बेटा देवसिंह राजा बने। देवसिंह के बेटा शिवसिंह राजा बने। शिवसिंह के दरबार में विद्यापति रहते थे। विद्यापति का जन्म और शिवसिंह का जन्म एक ही समय में हुआ था।

विभा - विद्यापति भी अप्रतिम प्रतिभा के धनी थे और स्नेहलता भी थे। आपके दृष्टि में विद्यापति और स्नेहलता में क्या अंतर है?

मिथिलेश- जितने भी भारतीय श्रृंगारिक कवि थे, उनके आराध्य देव हैं राधा-कृष्ण और उनकी कीड़ा। प्रेम और माधुर्य का जो श्रोत बहा, स्नेहलता जी की आराधना, उपासना, पूजा अर्चना उसी कृष्ण के पहले अवतार राम के साथ हुई। जो राम, वही कृष्ण। सिद्ध कर दिए दक्षिणेश्वर में। लीला प्रसंग। आप तो पढ़े-लिखे लोग हैं, हम तो अनपढ़ हैं। कहां आसुरी प्रवृति धरफराए हुए रहता था धरती को। बाबाजी गए राजकुमार मांगने दशरथ जी से। लाए तो बक्सर में ताड़का वध हुआ। इधर धनुष यज्ञ रचाया। सीता के विवाह का प्रसंग हुआ। एक चिट्ठी विश्वामित्र को भी गया था। वो अपना चेला को लेकर वहां से आए। प्रेम और माधुर्य इस मार्ग में भी श्रृंगार, वीर सबकुछ है। इस साल अर्जुन मिश्र गा रहे थे शायद कुछ... तिवारी जी द्रवित हो गए थे और बाध्य होकर इनको बोलना पड़ा राधा-कृष्ण की उपासना में। भक्ति और माधुर्य की धारा पर गंगा बहा दिये, जिसमें कृष्ण नटुआ हो गए हैं। महादेव कैलाश छोड़ कर उगना के रूप में नौकरी किए। ब्रह्मलोक हिलने-डोलने लगा।

विभा - प्रेम और माधुर्य की उपासना विद्यापति ने भी की और स्नेहलता ने भी ?

मिथिलेश- सर्वत्र तो यही बात देखते हैं। एक-एक शब्द में, एक-एक पंक्ति में। इसके सिवा दूसरा चीज तो नहीं देखते हैं।

विभा - आपको कितना सानंध्यि मिला उनका?

मिथिलेश- कभी एक घंटा, कभी दो घंटा, कभी दो दिन तो कभी तीन दिन तो कभी चार दिन।

विभा - आप उस समय कितने वर्ष के थे?

मिथिलेश- 1964 से लेकर 1993 तक में 25-50 बार। यहां कम, बन्नीपुर में ज्यादा। उनका जब बुलाहट होता था, कभी ओयनी में, कभी बनास में, कभी पचरूखी में, कभी रजवारा में। कभी कहीं तो कभी कहीं, लोगों के बोलते ही लोग दौड़ पड़ते थे कि स्नेहलता जी आ रहे हैं, यह सौभाग्य की बात है।

विभा - आपने जैसे कहा कि उनको क्या चीज चाहिए, आपको पता चल जाता था। कैसे?

मिथिलेश- वो नहीं पकड़ पाएंगे। हरिदास अकबर को कहे थे अकबर तेरे लिए तानसेन.... बैजू बावरा । संगीत जिसके लिए है, उसके लिए तानसेन। आप वहां बैठी हुई थी। आपके पास रडार है, कैमरा है। सबकुछ है। हमारे पास में कुछ भी नहीं है। हमको किसी से मतलब था? हम अपना तेल जलाकर भजन सुन रहे थे। ये कैसे हो जाएगा? जबरदस्ती। ये तंतर-मंतर की बात नहीं है।

विभा - अबतक तो हम केवल यह जान रहे थे कि यह आयोजन केवल स्नेहलता के गांव दरोडी में ही होता है। लेकिन यहां आने के बाद पता चला कि आप भी इसे करवाते हैं। आप बताएं कि आप कबसे करवा रहे हैं और करवाने के पीछे आपका मकसद क्या है या था, जबकि बगल में ही दरोडी गांव उनका पैतृक स्थल है, वहां हो ही रहा है। दूसरा हमको यह भी बताएं कि आपके यहां और दरोडी गांव के अलावा कितने जगह वैदेही विवाह महोत्सव होता है? पहली बात तो ये कि आपके यहां जब शुरू हुआ तो किस उद्देश्य से शुरू हुआ। आपके गांव और दरोडी में कोई खास दूरी का फर्क नहीं है। कम दूरी में भी होना चाहिए ऐसी जरूरत क्यों महसूस हुई?

मिथिलेश- 51 बरस पहले हमलोगों के पिता जी के समय से ही भगवान के विवाह पंचमी दिन मनाया जाता है शुभ अवसर पर।

विभा - मेरा सवाल यह है कि आपके बगल के गांव में हो ही रहा है तो पास में ही क्यों? उद्देश्य क्या था?

मिथिलेश- उद्देश्य तो यही है कि जितनी भी व्यवस्था भगवान की कृपा से चलती है। हमारे जो पूर्वज मनाते आ रहे हैं हम भी मनाते आ रहे हैं।

विभा - और कहां-कहां यह समारोह होता है?

मिथिलेश- अभी कल्याणपुर में भी चल रहा है। समस्तीपुर में दस दिन चलता है।

विभा - समस्तीपुर और उसके आस-पास ही होता है या और कहीं भी होता है?

मिथिलेश- यहां से जनकपुर तक होता है।

विभा - स्नेहलता जी ने अपना नाम बदलकर, स्नेह में पड़कर स्नेहलता रख लिया। स्नेहलता सुनने में किसी लड़की का नाम लगता है। लड़की मन में माना जाता है कि उसमें कोमल भावना ज्यादा होती है। इसीलिए लड़की के नाम से रखना, कोमल भावना को और अधिक अभिव्यक्ति देना। ऐसे में आपके घर परिवार या आप-पास में लड़कियों, बच्चियों की कमी नहीं है। ऐसी कितनी बच्चियां हैं, जिनको संगीत की शिक्षा दी जा रही है? स्नेहलता को गानेवाली यहाँ की कोई लड़की है या नहीं? अगर नहीं है तो क्यों नहीं है?

मिथिलेश- महिला लोगों को उसतरह का माहौल नहीं दिया गया। उन लोगों को प्रोत्साहित नहीं किया गया। ऐसे शादी, ब्याह हर फंक्शन में स्नेहलता जी को गाया जाता है।

अन्य ग्रामीण

विभा- दरोडी गाँव में राम-सीता विवाह आयोजन का उद्देश्य क्या रहा?

बूढ़ा बाबा1 - उद्देश्य यही रहा होगा कि हम भी भगवान का विवाह का उत्सव मनाएंगे। इसी ख्याल से पूर्वज लोग किए होंगे।

बूढ़ा बाबा2 - संत लोग के अनुसार सियाराम का अंक होता है 108- 54 सिया का और 54 राम का। कैसे होता है? ये बरतल्ली में राम शब्द का र और आकार और म ये तीनों का अंक खोजिएगा तो उतना नंबर पर मिलेगा। उसी तरह से सीता का है। दोनों को मिलाकर 108 होता है। ऊँ शब्द का भी 108 है और सियाराम का भी 108 है। लेकिन केवल राम और केवल सिया का 54 और 54 है। सिया राम को मिलाइए तब पूर्ण ब्रह्म प्राप्ति होगी। इसीलिए अंक लोग के हिसाब से भी सियाराम के विवाह करने के बाद भी आप उनको ब्रह्म मान सकते हैं। उससे पहले वो अंश है। पूर्ण ब्रह्म तब होते हैं जब सियाराम का विवाह हो जाता है। तो इसीलिए विवाह मिथिला में हुआ था और पूर्ण ब्रह्म राम मिथिला में ही बने थे। उसके पहले वे पूर्ण ब्रह्म नहीं थे।

विभा- अपने और स्नेहलता जी के बारे में कुछ और बताइये।

बूढ़ा बाबा2 - हमको दर्शन नहीं हो रहा था तो सबसे अलग पूल पर आकर बैठे। उसके बाद कीर्तिन में इसका भजन सुने। मन तो एकदम विचलित था। फिर वहां चले गए कि ये कौन नया गीत गा रहा है। मेरी उम्र उन दिनों 12-15 वर्ष रही होगी। स्नेहलता और मेरे बाबूजी- जगदीश ठाकुर, बाबा सूर्यदेव ठाकुर, गुरूजी बाबा राजाराम ठाकुर, श्री आनंदलाल ठाकुर 'नंद', रामलगन ठाकुर नारद जी, श्री अनिरुद्ध ठाकुर संत जी, श्री अक्लू ठाकुर 'नेता जी', श्री रामोदार ठाकुर 'दयालु'। ये सब इनकी मंडली में गाते थे।

विभा - आपकी नजर में स्नेहलता कैसे थे? कैसा गाते थे?

बूढ़ा बाबा-2 वाद्य और ताल-तुरूम के साथ उनका स्वर ऐसा मिल जाता था कि पूछिए मत। और भीतर से इतने भावुक थे। भाव का प्रदर्शन बाबा को बांध लेता था और उनके साथ पचास हजार आदमी को। बाबा झूमे तो लोग झूमते थे मदमस्त होकर। ….. स्नेहलता जी का जो धूआं उठ रहा था चिता से। दो मकान के बीच से होकर वो मण्डप पर जा रहा था। वो बात हमको फिर खींच लिया। देखिए हमलोग इधर जला रहे हैं ये चले गए अपनी जगह पर।

सीताराम ठाकुर-

स्नेहलता के शिष्य बुजुर्ग सीताराम ठाकुर धर्म, दर्शन आदि पर बहुत बातें करते रहे। लेकिन, जिस सीता की आराधना वे सब करते रहे, उसी सीता रूपी कन्याओं के सांस्कृतिक विकास में कोई भी आगे आता नहीं दिखा। मेरे लिए यह प्रसन्नता की बात होती कि स्नेहलता का ही पुयारा गाँव दरोडी है, लेकिन वहाँ से एक भी बालिका या स्त्री नहीं निकलीं, जो स्नेहलता के गीतों को मंच पर गाती हों। उनकी पोतियाँ उषा देवी और किरण देवी ने यह कहा कि जब वे छोटी थीं तो राम-सीता की झांकी में वे ही राम सीता बनती थीं, लेकिन, बड़ी होने और शादी होने पर सब छूट गया। अब वे केवल राम-सीता विवाह आयोजन के समय यहाँ आती हैं।

विभा- आपके यहाँ क्यों एक लड़के को गाने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है मगर लड़की को नहीं?

बूढ़ा बाबा (सीताराम ठाकुर) - जिनपर सरस्वती महारानी सवार हो गए उसको...

विभा - मंच पर गाना क्या इतना खराब है?

सीताराम ठाकुर- हमलोग इतनी खुली मानसिकता के नहीं हैं कि अपने घर की बच्ची और महिला को कहें कि जाओ मंच पर गाओ। इसलिए इसको बढ़ावा देना पड़ेगा, तब जाकर बात बनेगी।

विभा - स्त्रियॉ, लड़कियों पर सरस्वती सवार नहीं होतीं?

सीताराम ठाकुर- वे तो खुद ही सरस्वती हैं। लेकिन परमब्रह्म जो हैं....

इसी विषय पर और कई के भी विचार आए। लेकिन, किसी के भी विचार में अपनी लड़कियों को गायिका बनाने की उत्सुकता नहीं दिखी।

बूढ़ा बाबा2 - जो प्रोफेशन में आईं, ऐसी बहुत सी लड़कियां हैं। वे कन्हैया जी के स्तर की गाती है। कोई-कोई उससे भी बेहतर गाती है। लेकिन जो प्रोफेशन में नहीं आ सकी, वह पारिवारिक माहौल पर भी निर्भर करता है। मेरी एक भतीजी है रागिनी। कन्हैयाजी उसको भी सिखाए। इतना बढ़िया स्वर । लेकिन, हमलोग जिस परिवार में शादी करेंगे वह परिवार कभी मंजूर नहीं करेगा कि वह मंच पर गाए।

विभा- आखिर क्या खराबी है मंच पर गाने में?

बूढ़ा बाबा2 - विभा जी आप ब्याही गई मुंबई में इसलिए.....

विभा - नहीं हम ठेठ मधुबनी के ही हैं। हमारी ससुराल भी वीरपुर के बसंतपुर ब्लॉक में ही है। एकदम ठेठ गांव। फूस का घर था पहले। लड़की की भावना को समझना पड़ेगा। आज आप उसी लड़की को डॉक्टर, इंजीनियर तो बनाते हैं। एक लड़की को एमबीए पढ़वाते हैं बाहर भेज कर। कलकत्ता, दिल्ली भेजकर कोर्स करवाते हैं। उसके बाद ट्रेनिंग करवाते हैं। वैसे ही, लड़कियों को कला के क्षेत्र में क्यों नहीं भेजते? जब गांव ये स्वीकार कर चुका है कि एक लड़की बाहर जाकर डॉक्टर-इंजीनियर बन सकती है तो उसके कलाकार बनने पर रोक क्यों? आज से 60-70 साल पहले शारदा सिन्हा और विध्वासिनी देवी को कितना

संघर्ष करना पड़ा होगा। और लड़कियां विंध्वासिनी देवी क्यों नहीं हो पा रही है अगर उसकी रुचि है तो? सिनेमा देखना सबको अच्छा लगता है। सीरियल देखना सबको अच्छा लगता है। सीरियल में काम करनेवाली सब लड़की अच्छी लगती है। लेकिन वो लड़की मेरे घर की क्यों नहीं हो सकती?

मिथिलेश- मानसिकता बदलने की जरूरत है।

विभा - तो कौन बदलेगा। इतना बड़ा खजाना है स्नेहलता का! जो स्नेह में भरकर पुरुष से स्त्री हो गए। ये बहुत बड़ा प्रेम भाव और सखी भाव है जो जीव को ब्रह्म से जोड़ता है। जीव से ब्रह्म की उपासना होती है। अपने घर में लड़कियों में, महिलाओं में प्रतिभा है। उस दिन सभी महिलाओं के मन में था कि काश हम भी गाते इस मंच से।

बूढ़ा बाबा1- अस्सी साल से यहाँ विवाह आयोजन हो रहा है। आपने उसको भीतर से माहौल दे दिया। अब लड़कियों के लिए घर-घर से वह माहौल मिलना चाहिए। हर लोगों वह माहौल मिलना चाहिए।

विभा - उस दिन लड़के सब नाच रहे थे। वहीं बच्चियाँ थीं, उनके चेहरे पर भी था कि वे भी नाचें।

मिथिलेश जी- आपने तो नचवा दिया सभी को अपने साथ।

विभा- हर बार तो मैं नहीं रहूँगी न! आप आगे आइये। अगर आपका संरक्षण रहेगा तो किसी की हिम्मत नहीं है कि उसको कोई कुछ करे। सबसे बड़ी बात। हम महिला हैं तो ये बात कचोटती रहती है। हम भी इसी जगह के हैं। लेकिन उसमें से निकलकर आना होगा।

मिथिलेश जी- हमलोगों के मंदिर में 51 सालों से हो रहा है। उसमें हर आदमी को होता है कि मेरा प्रोग्राम है यह। इसलिए प्रोग्राम सुंदर हो जाता है। ये नहीं है कि उनका मंदिर है, उनका प्रोग्राम है। ऐसा नहीं है। पूरे भाव से लोग रहते हैं।

विभा - जैसे ही हम पहुंचे हमें लगा कि हम अपनी ही जगह पर पहुंच गए हैं। जिसतरह की जगह हम खोज रहे हैं, उस जगह पर पहुंच गए।

मिथिलेश- पूर्वजों द्वारा मनाया जा रहा है तो हमलोग उसी भाव से करते हैं। जितना अच्छा से अच्छा हो सके। हर साल कोशिश करते हैं।

विभा - दो-चार बालिका स्नेहलता को भी आपलोग डेव्लप कीजिए।

मिथिलेश- जरूरी भी है। लेकिन आप अब कब आएंगी?

विभा- जिसदिन आप कहेंगे कि आज स्नेहलता का गायन आपके यहाँ की कोई सुनीता, सुधा या कोई और कर रही है। वंदना मिश्रा और अन्य तो अपनी जगह बनाए हुए हैं। आपके घर-परिवार, मोहल्ले, बिरादरी की गा रही हों। एक दिन का पूरा विवाह प्रसंग उनलोगों से गवाइए। कन्हैयाजी के संरक्षण में सिखाइए। वे बहुत ही समर्पित और सुलझे हुए हैं। किसी तरह की कुरूपता या अश्लीलता के खिलाफ हैं। तो उनके यहां से जो भी निकलेगा,

गंगा की तरह निर्मल होगा। एक काम हम आप पर सौंपकर जा रहे हैं। थोड़ा चैलेंजिंग है, लेकिन चैलेंज का अपना मजा होता है।

धवेंद्र

हमें धवेन्द्र का परिचय किसी ग्रामीण द्वारा कुछ इस तरह से करवाया गया-
ये लड़का! धवेंद्र नाम है इनका। कलकत्ता में सर्विस करते हैं। इतना भावुक है कि हमें इसकी भावुकता से भय लगता है। इनके पिता जी भी भावुक थे, भावुकता में उनका हार्ट फेल कर गया। इसकी भावुकता से भी भय लगता है। उस दिन इतना भावुक हो गया कि एक गीत रच दिया वहां बैठे-बैठे। स्नेहलता के बारे में अमर गीत। न उसके पहले कभी गीत लिखा न उसके बाद लिखा।

धवेन्द्र- मुझे प्ररेणा मिली इस कविता तक पहुंचने की। हमारे आराध्य, स्नेहलता जी हैं। इनलोगों के साथ में मेरा भी घर है। पोता-पोती सब बराबर एक साथ खेलते हुए यहीं रहते थे। स्नेहलता जी बारे में मैं बता दूं आपको जब वो बन्नीपुर से आते थे, विवाह पंचमी से दस दिन पहले आ जाते थे। उनका आना हमलोग समझ जाते थे कि अब विध शुरू हो गया है। हमलोग दौड़-दौड़ कर उनके आगे-पीछे करने लगते थे। कालांतर में हमलोग भी बढ़ते गए। 1984 में मैंट्रिक पास कर गए। बगल में ही रहता था। उनकी कविता करने की शक्ति जो थी, कहीं भी रहते, शौचालय जाते, मुंह धोते या जो भी करते, उसी बीच उनको कोई कविता या गीत आ जाता था। मैं चूंकि नजदीक में रहता था। वो तुरंत हमको बुलवाते थे। वे बोलते थे और मैं लिखता था। एक उम्र के बाद उनका हाथ कांपने लगा था। उनकी लिपि लगभग-लगभग चित्रलिपि सी बन गई थी, जिसको कुछ ही लोग पढ़ सकते थे। चूंकि मैं उनको लिखता था, इसलिए उनकी चित्रलिपि को भी पढ़ लेता था। कन्हैया जी और हम जो उनसे जुड़े रहते थे, वो पढ़ लेते थे। यही लिखते-लिखते हमें लिखने की प्रेरणा मिली। मैं एक छोटी-सी घटना और उनसे जो मेरी आत्मीयता थी उसको दर्शाता हूं। मैं उनको देखकर छुप जाता था कभी-कभी। हम बच्चे थे, खेलने जा रहे होते थे। वो हमें पकड़ लेते थे और कहते थे कि ये लिखो। उस समय हमको अच्छा नहीं लगता था। वो बहुत गुस्सा करते थे। गुस्सा इतना करते थे कि कुछ कह भी देते थे। लेकिन, उनका जो आंतरिक स्वभाव था कि अगर कुछ बुरा कह देते तो इतना पाश्चाताप करते थे कि वे खाना भी नहीं खाते थे। दिन भर में दस बार मिल कर हमको आशीर्वाद देते थे। हमारे भविष्य के बारे में वो इतना चिंता रखते थे कि जो भी मिल जाए, हमारे बारे में कहते थे-ये पढ़ा-लिखा पोस्ट ग्रेजुएट है इसको कहीं एम्पलाई करवा दीजिए। इतनी आत्मीयता बढ़ गई थी। उसी का परिणाम था कि हमको भी लगा कि शायद मेरा सबसे नजदीकी, जो सबसे ज्यादा मेरे लिए सोचता रहा हो। सबसे ज्यादा मैं जिसके बारे में सोचता रहा हूं, वो प्यार, वात्सल्य सबकुछ मिला। तो कुछ दो-चार पंक्तियां हमारे मन में भी आ गई, जिसको हमारे कलाकारों ने हाथों-हाथ ले लिया। आज भी इस यज्ञ से जोड़ दिया गया है उन पंक्तियों को। मुझ जैसे अकिंचन अज्ञानी को भी लोग

याद कर लेते हैं। उन्हीं की कृपा है कि हमने भी कहीं रोजी-रोटी पा ली है। किसी भी परिस्थिति में इस यज्ञ को छोड़ना नहीं चाहता जीवनपर्यंत। अपनी उपस्थिति दर्ज करवा ही देता हूं।

विभा - आप कोलकाता में रहते हैं और पोस्टग्रेजुएट हैं। किस विषय से ग्रेजुएशन किए?

धवेन्द्र- एनसिएंट हिस्ट्री से।

विभा - इस गीत के बाद भी आपने और कुछ लिखा या?

धवेन्द्र- इससे जो हमें प्रसाद मिला, इसके बाद मैं कुछ और कविताओं को लिख चुका हूं। मेरी कविता 'दैनिक सन्मार्ग' में पुरस्कृत हुई है। उसे मैंने अपने बच्चे के नाम से दिया था। मेरे बच्चों को पुरस्कृत किया गया था। कविता मेरी थी। यह प्रसाद मुझको मिला। जब समय मिलता है तो एक-दो पंक्ति जोड़ लेता हूं। ये सब उन्हीं का दिया हुआ प्रसाद है।

विभा- उस गाने की कुछ पंक्तियाँ?

धवेन्द्र- अंतिम पंक्ति है -

'मिथिला रोबे फूल क' रोबे मिथिला वासी गे
रोबे मिथिला वासी
सीताजी संग रोबे दुल्हा राम गे बहिना
लतिका स्नेहिया के गाम
हमरो दरोडी भेल विरान गे बहिना
लतिका स्नेहिया के गाम
पहिले गीतक सूर्य अस्त भेल
सूखल काव्यक गंगा गे
पहिले गीतक सूर्य अस्त भेल
सूखल काव्यक गंगा गे,
दोनों आत्मा भेल एक ठाम गे बहिना
लतिका स्नेहिया के गाम
हमरो दरोडी भेल विरान गे बहिना
लतिका स्नेहिया के गाम

मेरे बाबा सूर्यदेव ठाकुर पहले चले गए और तुरंत ही ये भी गए।

विभा - सूर्यदेव ठाकुर जी कौन थे और आपके कौन थे?

धवेन्द्र- मेरे दादा थे। स्नेहलता जी रचते थे और सूर्यदेव जी और धुन पर काम करते थे।

विभा- आप उस समय जरूर उनको देखते रहे होंगे। तो किस तरीके से उन दोनों का काम होता था।

धवेन्द्र- जैसे उन्होंने लिखा। उस समय उनके साथ जो मंडली थी, सारे निश्छल भाव के साथ काम करते थे। करीब एक दर्जन लोग भजन मंडली के रूप में बैठ कर विधिपूर्व भजन गाया करते थे। उनके बीच एक-दूसरे के प्रति गहरा सम्मान और आदर की भावना होती

थी। हंसी-मजाक तो उनकी मंडली की जान थी। मगर उससे आदर भाव और मान-सम्मान में कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे कभी-कभी ऐसा लगता था ईश्वर ने इन सभी लोगों को इस धरती पर एक साथ कीर्तन गाने के लिए ही भेजा है और वह भी एक ही गांव दरोडी में।

विभा - गीत बनाने की, धुन बनाने की प्रैक्टिस के समय उनलोगों में क्या बातचीत होती थी। क्या प्रोसेस होता था?

धवेन्द्र- ये लोग अलौकिक प्रतिभा के धनी थे। कभी-कभी ऐसा होता था कि कुछ लय अपनी तरफ से बना देते थे। उसको सीधे लेकर वो गा दिया करते थे। कभी-कभी बाबा सूर्यदेव ठाकुर कहते थे कि इस धुन पर बनाना चाहिए। तो उसपर अविलंब पूर्ति कर देते थे। कभी-कभी धुन पहले बन जाती थी और गीत बाद में बनता था। कभी-कभी गीत पहले तो धुन बाद में।

बूढ़ा बाबा3 - अलग से भी होता था। दरभंगा में ऑल इंडिया संत सम्मेलन होता था तो बाबा सूर्यदेव ठाकुर को भी बुलाया जाता था। स्नेहलता जी को भी आमंत्रण आता था। दरभंगा के लालबाग में होता था। बाबूजी बैठे हैं और बाबा गा रहे हैं वहीं से रचना कर-कर के पुर्जा बढ़ा रहे हैं। वो ये नहीं कहते थे कि इसपर ये बना दीजिए और उसपर वो बना दीजिए। भारत सरकार की बौद्ध मंडली से भी जुड़े हुए थे।

एक बार गए सकड़ी। सकड़ी में हमारे सियाराम बाबू ने हनुमान मंदिर बनाया हुआ था। उसमें सरकार को बुलाकर ले गए और बोले- आप ही उदघाटित करिए। तो स्नेहलता जी ने गीत बना दिया-

'हनुमान अहां क' घोर थिक सकड़ी'

बूढ़ा बाबा3 – धवेंद्र बोले- 'बाबा इस धुन पर एगो गीत बना दीजिए।' पता नहीं, याद इनको होगा कि नहीं। इनको कहे- 'बउआ! अभी त सरस्वती नहीं हैं यहां पर।' और बस चार कदम आगे बढ़े कि बोले- 'हो पोता! सुनो-सुनो।'

विभा - आपको कैसे पता चलता था कि उनकी पान खाने की इच्छा हो रही है।

बूढ़ा बाबा4- अंतरचेतना की आवाज से। जैसे राम खट्टा बेर खाएँगे तो उनका पेट खराब हो जाएगा- ये बात शबरी ही समझी। बैर को चखकर देती थी। आपका छोटा प्रोजेक्ट है, आत्मीय बात कीजिए। आप स्नेहलता के ऊपर खोज करने के लिए चले हैं। आपका अपना स्नायुमंडल कितना मजबूत है? आपका रडार माइक्रोस्कोप कितना मजबूत है? आप किससे पूछिएगा।

बूढ़ा बाबा2 - देखिए, असली जीवन आदमी का प्रकट होता है इसी में। कैसे उठते हैं, कैसे बैठते हैं कैसे बतियाते हैं। क्या रूप है? इसी का खोज वो कर रही हैं।

बूढ़ा बाबा4- वो लेखक थे। हमेशा अंतर्चिंतन में डूबे रहते थे। वो बोलते नहीं थे, जिनसे उनको प्रकाश मिला। इनको तो एक बाबाजी फुसला कर लेते जा रहा था बाबाजी बनाने के लिए। एक जमींदार उनको पकड़कर रख लिए। बाइस सौ बीघा का स्टेट दामोदर नारायण चौधरी, वहीं पर एक (भुवनेश) भुवनी बाबू भी जमिंदार थे, जिनका लड़का सी.एम. आर्ट में सुरेन्द्रनाथ सुमन हिंदी के विभागाध्यक्ष थे। उनकी लिखी हुई कविता मैट्रिक में पढ़ाई जाती है। इसी मंच पर बैठे हुए थे। उनका रसगुल्ला खाने का मन हुआ। मैंने एक प्लेट रसगुल्ला लेकर उनके आगे रख दिया। एक-एक कर खिलाकर मुंह पोंछकर तब गए। एक ग्लास चाय पिलाए। फिर अपना पनबट्टा में से पान निकालकर खिलाए। हम और क्या बताएं जो घूरा के पास में बैठकर लोग करते हैं। जीवन स्तर की बात घूरा के पास क्या बतियाएंगे।

रामास्वामी वैंकट रमण राष्ट्रपति थे। वो पूछते हैं- निरंतर प्रयास कितना देर करते हो? प्रैक्टिश? 18 घंटा खुले आंख में और 6 घंटा सांस के थिरकन में। 24 आवर्स। तब वो भी हाथ जोड़कर प्रणाम कर लिए। वो भी लेखक थे और कवि थे। वो दैविक सत्ता के अवतरित देह थे। सामान्य देह थोड़े ही थे? लक्ष्मण जीव थे राम ब्रह्म थे। रहते थे तो इसी वेष-भूषा में। मोटिया धोती, कुर्ता पहनते थे। लेकिन सामान्य देह तो नहीं थी। जैसे एकाग्रता के प्रतीक अर्जुन थे, वीर वज्र सम्राट भीम थे, धृतराष्ट्र सब के सब थे। लेकिन 24 आवर्स अणु-परमाणू से रिलेशन वही। कृष्ण कौन थे? 18 घंटा अलफावेट ललाट गांधीजी का चलता था, चर्चिल कभी उनके नजदीक नही जाता । वह कहता कि जो उसके नजदीक जाता है, वह उसी का होकर रह जाता है। दूसरी बात! बैठते थे तो मास्टर से नुकाकर सभा में। कॉपी कलम हमेशा रखते थे जहां कहीं भी हों- 24 आवर्स; सोए हुए में भी और जगे हुए में भी।

जिस कुल में जन्म लिए, इस कुल के इस समाज के लोगों को देखिए। आज वो हाईस्कूल से रिटायर शिक्षक हैं। भर रात बैठते थे उस मंच पर। यहां के कल्चर को देखिए, माटी-पानी को देखिए। गरीब अमीर सब को झांकी मारकर देख लीजिए। इसी में जो सत्य हो, जो क्रीम हो आप निकाल लीजिए। इसी कुल के थे। बहुत दिन कर्म क्षेत्र उनका अलग रहा लेकिन लौटकर यहीं आकर मरे। 1993 में उनका शरीर त्याग हुआ है। रसगुल्ला खिला कर उनको पान खिलाते। उसके बाद उनके पैर-जांघ पर हाथ रखकर दबाते हुए जांचते और पूछते थे कि आप धरफराए हुए क्यों हैं? मिथिला अनाथ हो जाएगी। विरौली इंस्टीच्यूट में प्रभारी थे डॉ. विजय कांत झा। वो रोते और कहते पुनास का लेखक रामानन्द शर्मा साहित्याचार्य कहते स्नेहलता चले जाएंगे मिथिला अनाथ हो जाएगी।

अपने घर के बात थिकए, कहबैय केकरा,
के सुनतै, सब लागै बहिर अकान सन।
जेकरा काने नैय

आय लगइह वैदेही क‘ नईहर बड़ झुझूआन सन
प्रसव वेदना बस मिथिला के धरती टा सहने छथिन

सीता की मां तो यही हैं न? (धरती छू कर) मिथलांचल के भूमाता।
प्रसव वेदना बस मिथिला के धरती टा सहने छथि,
जनक विदेह सिया सन बेटी, शक्ति रूप पाने छथि।
एतैय छला उगना विद्यापति
शंकर मंडन वो वाचसपति
सब घर लागै सुनसान सन।
सब घर लागै सुनसान सन।
आय लगइयैह वैदेही के नईहर बर झुझुआन सन।

बेटा आय बिका रहलै हन मिथिला के आंगन में
हकन्न कानैय छथि जनक माथ धरि बेटी केर जनमने
दर्शन वो न्याय जे छल बजै गप शप करैत
छल छल हंसैत
दर्शन वो न्याय जे छल बजैत गपशप करैत खल खल हंसैत
मुंह लागैय झुरी झमान सन।
आय लगैइयह वैदेही क‘ नैइहर बड़ झुझुआन सन।

बहिनी हमर रघूकुल के पुतहू
जिनके से दुनिया जुराय तखन परवाहे की।

आप सोच सकते हैं कि नीचे का भाव क्या रहा होगा।

कुछ रचना में तो हिंदी ऐसा-ऐसा है कि हमलोग आश्चर्य करते हैं। ये सब कहां से लाए ये कोश। लेकिन जो गुढ़ हिंदी था शुरूआती दौर में उकेरे गाना में। बाद में वो अवस्था को पाते गए तो कुछ हल्कापन आया।

एक लाइन पर बोलने लगे - ‘झूकि जैइयौं अवध सरकार लली मोरी छोटी है।‘ जब माला पहनाया जाता है वहां उनसे कहते हैं कि आप झुकिए। लली मतलब सीताजी छोटी है। रामजी झुके और तब सीता जी ने माला पहनाया।

श्रीकांत ठाकुर (स्नेहलता के इकलौते पुत्र)

विभा - स्नेहलता आपके पिता थे। आप उनके पुत्र हैं। जन्म से आपका उनका साथ रहा है। आपको उनकी रचनाओं को सुनकर या बैठकर देखने का मौका मिला कभी कि बाबूजी क्या लिख रहे हैं। या वो दिखाते हों कि देखो हम क्या लिख रहे हैं।

श्रीकांत- वो हमको कहते थे। आज बहुत कमजोरी महसूस हो रही है। वे कहते कि तुम अगर रामायण पढ़ते तो तुम भी कवि हो जाते। लेकिन न रामायण हमने पढ़ा और न हम कवि हो सके।

विभा - रामायण क्यों नहीं पढ़े?

बाबा2- इतना व्यस्त रहते थे दिनचर्या में। ये भाई में अकेले थे। असल में वे गृहस्थी तो करते नहीं थे। गृहस्थी सब इन्हीं को संभालना पड़ता था। ये भी अगर कविता पढ़ने लगते तो गृहस्थी कौन करता?

श्रीकांत- होता है। गृहस्थी जब आ जाती है, नमक से लेकर लकड़ी तक जोड़ना पड़ता है। अब हमें नौकरी मिल गई, रोजगार कर लिया तो गृहस्थी चला लें। एक होता है किसी के कारण भी हमें करना पड़ता है। जैसे स्नेहलता जी का आर्थिक स्वरूप कुछ उस तरह से नहीं था। वो कोई नौकरी या काम नहीं करते थे तो उनका भी जिम्मा उठाना पड़ता था।

विभा- क्या कभी ऐसा होता था कि आपस में कुछ अनबन हो जाए?

श्रीकांत- 15 से 18 बीघा जमीन के वह मालिक थे। सुबह सात बजे तक 50-60 मरीज आ जाते थे। वे होमियोपैथी और आयुर्वेदिक दोनों दवाई देते थे। वे राम का नाम बेचकर के पैसा कमाना नहीं चाहते थे।

विभा - राम और सीता जी पर लिखते थे। इसलिए?

श्रीकांत ठाकुर- पेशेवर हो गए हैं, जो लोग कीर्तन करते हैं। वो पहले से पैसा तय कर के जाते हैं। इसीलिए वे बोलते थे कि भगवान का नाम बेचकर के पैसा कमाना ठीक नहीं है। उन्होने पैसे को कभी तरजीह नहीं दी। पैसा की तरजीह देते तो मुझे लगता है कि वह लेकर किसी को दे ही देते।

विभा- कोई यादगार पल?

श्रीकांत ठाकुर- सटत हटत संतोष न आवत
चरण कमल प्रणाम सिय
उठत निरंत उठिएते
प्रेम पतंग करें दिपक सौं
जरत न बनत
न बनत जियत

विनोबा जी आए हुए थे तो रेवती जी यही गीत गाए। रेवती जी उन्हीं के सान्निध्य में रहते थे। क्योंकि वहां की जो रचना इस तरह की थी, कि विनोवा जी आंख कड़ा कर लिए। उसकी अंतिम पंक्ति थी-

'स्नेहलता मन प्रीत असल कहू
चरण कमल पर रामसिये के...'

ये सुनते ही विनोबा जी नाचने लगे। इतने बड़े विद्वान आदमी! कितने भाषा का ज्ञान जानकार थे!

विभा - विनोबा जी से मतलब आचार्य विनोवा भावे?

श्रीकांत ठाकुर- जी हां।

विभा - वाह! क्या बात है! ###

<u>स्नेहलता का शिक्षक पोता</u>

शिक्षक पोता - उनके पास कोई भी आए रचना के लिए। वो कहते थे कि कलम-कागज लाए हो? ... और वो शुरू कर देते थे। इस तरह की रचनाएं जाने कितनी कर डाली। हमलोगों के पास भी इसका संग्रह नहीं है। किसी से दो रुपया कभी नहीं मांगे। अपने जीवन में शुरूआत से ही ये ऐसे थे। शुरू में इन्होने गांव छोड़ दिया। एक गांव है बन्नीपुर, वहां आश्रम खोल दिया। ये दो-चार-दस बच्चों को ट्यूटर के रूप में पढ़ाते थे। उनको उस गांव के लोग देवता से ज्यादा महत्व देते थे। पूजा करते थे। ये साल, दो साल, चार साल पर कभी आते थे। यहां भी उनके गुण की पूजा होती थी। इतने सरल स्वभाव के थे कि उनकी सबके साथ निभती थी। बहुत उदार थे वे।

विभा - आप जब उनसे मिलते थे तो आपके साथ उनका किस तरह का व्यवहार होता था?

शिक्षक पोता- हमारे बाबा थे।

विभा - आप दोनों बाबा-पोता में किस तरह से बात होती थी? आप क्या करते हैं?

शिक्षक पोता- हम टीचर हैं। हमलोग कभी-कभी उनके साथ बैठते थे। वह हर समय चिंतनशील रहते थे। वो कहते थे -'बउआ, बउआ एक काम करो, थोड़ा लिखो तो।'... बातचीत किए, हालचाल पूछे और कहते- 'गाना लिखो।' लिखवाकर रख लेते। उनसे हमलोग लाभ नहीं ले पाए। उनमें जो गुण था उस गुण का हमलोग सदुपयोग नहीं कर पाए। अगर ये जानते आज के डेट में जो शोधार्थी लोग घूम रहे हैं, जितने लोग चाह रहे हैं, वह अगर हमलोग संकलन करते तो आज हमारा गांव मालोमाल हो जाता। आज वो धरोहर खोजने से भी नहीं मिलेगा। उस बात को हमलोग समझबे नहीं किए कि क्या चीज हैं ये।

विभा - आप मालोमाल होते, यह अलग बात है। इस जगह को जो विश्व के मानचित्र पर जो स्थान मिलता वो एकदम अलग बात है।

शिक्षक पोता- वो स्थान है, जितना भी वो छोड़कर गए हैं, उससे इस गांव का नाम हो रहा है। स्नेहलता के गांव से इस गांव को लोग जानते हैं।

विभा - जब भी आप उनके पास बैठते थे तो हाल-चाल पूछने के बाद वो कहते थे कि काम कीजिए?

शिक्षक पोता- हां। आए और वो बोलना शुरू कर दिए और हम लिखना शुरू कर दिए। उन्हें ये प्रतिभा... जैसे तुलसीदास थे, उन्हें तुलसीकृत रामायण पर कभी एकाएक रात को एहसास हुआ और वह शुरू कर दिए। वैसे ही गॉड गिफ्टेड मिला उनको। वो शिक्षा में नन-मैट्रिक थे। लेकिन प्रतिभा गॉड गिफ़्टेड ही कही जाएगी। आप आते, दो-चार रचना डिक्टेट करते, हम लिखते जाते। गूढ़ हिंदी। उनकी पुरानी रचना सब देखिएगा तो आपको लगेगा कि कहां से ये इतने हिंदी शब्द ले आए? शब्दकोश का भंडार था उनके पास। जो बहुत बड़ा विद्वान होगा, वही कर सकता है ये सब।

विभा - आपको कभी ऐसा नहीं कहा कि आपको म्युजिक पसंद है कि नहीं?

शिक्षक पोता- हमारे गांव का एक-एक बच्चा पहले उनके पैर पर अपना सर रगड़ता था। इतने सरल स्वभाव के थे कि वो अगर वो जीवित रहते तो आपको पता चल जाता।

विभा- जब उनका स्वर्गवास हुआ तो उस समय सबलोग कैसा फील कर रहे थे?

शिक्षक पोता- उस समय जो जहां था और जिसको जैसे ही जानकारी मिली, भागा-भागा आ गया, खासकर के गांव की सभी बेटी सब चली आई।

दिनेश ठाकुर- पोता

विभा- स्नेहलता से आपको क्या मिला?

दिनेश ठाकुर- इस फैमिली को इस रूप में दिया है, जिसका लाभ हमलोगों को आज तक मिल रहा है और भविष्य में भी मिलेगा। क्या कहा जाए! ऐसी चीज दिए, जिसका मूल्यांकन नहीं हो सकता।

विभा - हमलोग दो-तीन दिन से आपके पास आ रहे हैं। जो बात अभी तक नहीं बता पाए हैं, अगर कुछ वैसी बात हो तो बताइए?

दिनेश ठाकुर- हमारे यहां वैदेही विवाह मनाया जाता है। यह अस्सीवां अधिवेशन है। हमारा गांव शुरू से कीर्तन प्रेमी है। ये लोग एक बार कहे कि हम जनकपुर देखेंगे जानकी विवाह। तो पैदल उस समय चले गए। आज से अस्सी साल पहले वहाँ और लोगों की क्या स्थिति रही होगी यह सोचनेवाली बात है। ये लोग पैदल गए गाते हुए। वाद्य यंत्र के साथ नाचते-गाते। एक सूर्यदेव चाचा थे जो उनकी रचना गाते थे और नाक से गाते थे और उनमें इतना भाव था कि वो रेडियो स्टेशन में कोई वाद्य यंत्र बजाना नहीं जानते थे। एक बार रेडियो स्टेशन में चयन हो रहा था और सूर्यदेव चाचा वहां गए। वहां बड़े-बड़े गायक सब पहुंचे। उसमें से एक गायक ये थे जो सिर्फ नाक से गाते थे और ताली बजाते थे। सिर्फ इन्हीं की रचनाओं पर। और रेडियो स्टेशन में उनका चयन इसी रूप में हो गया। एक फटीचर के वेष में गए थे। आधा लूंगी पहने हुए आधा देह पर रखे हुए। गरीब परिवार के थे। वो रिटायर किए और पेंशन भोगी स्वर्गवास किए।

विभा - कहीं न कहीं वो रचना उन लोगों को पसंद आई होगी।

दिनेश ठाकुर- वो रचना थी-

मोरा राघव कनेक मुस्का द', नयनमा मानि ना,
कनि मौरिया क' लड़ हटवा द नयनमा मानि ना।

विभा - ये वह रचना है जिसे सूर्यदेव जी ने रेडियो स्टेशन में गाया था?

दिनेश ठाकुर- जी।

विभा - आपको उनकी कोई रचना याद है, जिसे आप गुनगुनाते हों या आपसे लिखवाया हो।

दिनेश ठाकुर- (एक वृद्ध की ओर इशारा करके) इनसे पूछिए। ये बताएंगे। हाल की रचना इस गांव से संबंधित गाया था, शायद आपने सुना हो-

हमरा दरोडी लागे धाम गे बहिना,
जहां सिया राम के विवाह।
मठशाला क' तीन कुण्ड पर
मठमौनियन स्कूल गे
मठमौनियन स्कूल गे।

ताहि बिच पोखरे लीलार गे बहिना,
जहां सिया राम के विवाह।

उस यज्ञ स्थली का वर्णन उन्होने किया।

विभा - उनकी किसी रचना के साथ आपको ऐसा लगा हो कि इसने दिल को छू लिया?

दिनेश ठाकुर- रचना तो इतनी है कि... जो भी सुनिएगा उसमें खासियत ही नजर आएगी। वे इस जगह के जनमे, पढ़े-लिखे पले-पुसे इस मिट्टी के थे। कर्मक्षेत्र उनका रहा बन्नीपुर- यहां से दस कोस दूरी पर। आना-जाना गांव में उनका था। बाद में चलकर गांव में इस जगह के लोग ज्यादा नजदीक में रहे। हम सबके साथ एक दिन, दो दिन, चार दिन मुलाकात हुई तो हुई।

विभा - जब मिलते थे तो क्या सब बातचीत करते थे?

दिनेश ठाकुर- वो वहां बैठे रहते और हम यहां बैठे रहते थे। आपको कह रहा हूं तो आप कंसेंट्रेट होकर सुनिए। उनसे मेरी कोई बातचीत नहीं होती थी। उनको पान खाने की इच्छा होती थी तो मैं पान लगा कर दे देता था।

विभा - जब आपको बुलाते थे या या आप जब उनके पास पहुंचते थे तो क्या सब बात करते थे?

दिनेश ठाकुर- कहीं खेल रहे होते तो बुलाते- 'बउआ सुन'।' आते थे तो कहते- 'बैठ'। की हालचाल छै? हमर एगो काम क' देब'?'

'हं बाबा। बोलिअव।'

'तनि लिखू त'।

वहां से शुरू हो जाते थे। हमलोग दनादन लिख देते थे।

विभा - जब आपको काफी देर तक लिखवाते थे तो आपको मन करता होगा कि यहां से भाग जाएं।

दिनेश ठाकुर- ऐसा नहीं था। ज्यादातर उनसे स्वीकृति लेकर जाते थे। पूछते थे अब और बाबा? वे कहते- 'अच्छा ठीक है। जाओ।'

एक बार वहां गए तो भोजपुरी गीत गा रहे थे-

रामजी से पूछे जनकपुर की नारी,
बता द बबुआ
लोगवा देत काहे गारी, बता द बबुआ।

भगवान को खासकर के मिथिला में लोग उनको गाली क्यों देता है? क्योंकि वे हमारे दामाद हैं। शादी करने आए हैं, तो हंसी-मज़ाक चल रहा है।

विभा - आप उनको क्या बोलते थे?

दिनेश ठाकुर- बाबा।

विभा - वो आपको बाबू कहकर बुलाते थे?

दिनेश ठाकुर- हां। ###

सुनैना देवी - स्नेहलता की बहू

विभा - आपका नाम क्या हुआ?
सुनैना देवी- सुनैना देवी।

विभा - आपका स्नेहलता जी के साथ ससुर और पुतौह बहू का कैसा संबंध रहा?
सुनैना देवी- हमलोग उस समय नए थे तो उनके सामने कभी नहीं निकले। उनके मरने के बाद ही निकले।

विभा - उनका खाना-पीना ?
सुनैना देवी- खाना-पीना पोता-पोती के द्वारा भेज देती थी।

विभा - कभी आपको बोले हों कि समय पर खाना नहीं मिला?
सुनैना देवी- नहीं।

विभा - शादी-विवाह में आपलोग गीत गाते ही हैं और वो गीत लिखते थे। वो कभी बोले कि ये गीत लो और गाओ?
सुनैना देवी- मेरी ननद सीखे हुई हैं । वही उनका सब गीत गाती है।

विभा - उनका कोई गीत जो आप लोगों को बहुत अच्छा लगता हो? और आप उसको गाती हों हमेशा।
सुनैना देवी- एक पोती गाती । वह स्कूल गई हुई है अभी। अगर रहती तो गाकर सुना देती।
###

रेणु देवी- स्नेहलता की भतीजी

विभा - आपका क्या नाम हुआ ?
रेणु देवी- रेणु देवी

विभा - स्नेहलता आपके कौन थे?
रेणु देवी- चाचा।

विभा - चाचा थे तो उनके साथ बहुत सारी बातचीत होती होगी?
रेणु देवी- बच्चावाला प्यार दिए खूब अच्छा से। अगर किसी दिन बच्चा उनको प्रणाम नहीं करता था तो वह कहते थे 'आय हमरा गोर दुखाय छै। आय हमरा कोय नयि गोर जतलक हन।' सब बच्चा धांय-धांय उनके पैर गिरता था। बच्चा सबको इतना प्यार देते थे। अगर एक लाइन याद पड़ा कि वो कहते थे- 'लिखो।'

विभा - आप भी उनके गीत लिखती थीं?
रेणु देवी- नहीं। जो गायक हैं, कन्हैयाजी, रामभरोसा- वही सब लिखते थे। बेसी दिनेश भैया। उन्हीं को बुलाते थे। वह अपने भी कागज पर लिख लेते थे। तब कहते थे गाने के लिए।

विभा- आपने भी विवाह-शादी में उनके गीत गाए होंगे। उनका कोई गीत सुनाएं जो आपको बहुत अच्छा लगता हो।

रेणु देवी- हरि धिया जानकी हे
बाबा के दुलारी धिया जानकी बेटी हे
आहे बाबा देलन डालबा रे बिनाय हे कि
फूलवा लोरहे फुलवरिया जैयबय हे
आहे बाबा देलन डालबा रे बिनाए रे कि
फूलवा लोरहे फुलवरिया जैयबे हे
हाथा लेल डलबा सहेलिया संग हे
आहे फुलवा ले डाला भरि जाए
हे गिरजा के पूजनमा करबैय है
फुलवा ले डाला भरि जाये
कि गिरजा के पूजनमा करबैय हे
फूलवा लोढते बेटी अलसाय गईला हे। ###

शालिनी ठाकुर- स्नेहलता की पोती

विभा - क्या नाम है आपका?
शालिनी ठाकुर- शालिनी ठाकुर।

विभा - स्नेहलता कौन थे आपके?
शालिनी ठाकुर- दादा जी।

विभा - उनसे मिली होंगी?
शालिनी ठाकुर- हमलोग बहुत छोटे थे, उसी समय वह चल बसे। ###

विभा - आपका नाम?
पायल - पायल कुमारी...
विभा - आपका नाम क्या है?
लाडली- लाडली कुमारी।

विभा - आपके दादाजी को लोग ढूंढ़ते-ढूंढ़ते कहां से लोग आते थे। जैसे हमलोग 2500 किलो मीटर दूर से आए हैं। आपको नहीं लगता है कि आपको अपने दादाजी के लिखे हुए गीतों को गाना चाहिए। हालांकि वो नाम के मोहताज नहीं है। आपके दादाजी का जो लिखा हुआ गीत है - आपको नहीं लगता है कि आपको गाना चाहिए। आपके दादाजी के नाम को और ऊपर लेकर जाएं।

विभा - लाडली आप क्या बनोगे पढ़कर? आपको क्या अच्छा लगता है?

लाडली- गीत गाना या लिखना।###

दैनिक जागरण, समस्तीपुर (एडीशन) के दिनांक 11.03.2012 के
पेज नंबर 4 पर श्री राजीव कुमार झा लिखित लेख 'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी' में चर्चित सांस्कृतिक विभूतियों के सम्बन्ध में कुछ और जोड़ने के लिए सम्पादक, दैनिक जागरण समस्तीपुर (एडीशन) के नाम श्री कृष्ण कुमार 'कन्हैया', लोक कला संस्कृति संस्थान, डरोड़ी का पत्र।

"सम्पादक के नाम पत्र
सेवा में,
सम्पादक महोदय,
दैनिक जागरण समस्तीपुर (एडीशन)
विषय - श्री राजीव कुमार झा का 'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी' शीर्षक लेख में चर्चित सांस्कृतिक विभूतियों के सम्बन्ध में कुछ और....।
(पेज नं0 - 4 दिनांक 11.03.2012)

महाशय

श्री राजीव कुमार झा जी के लेख पढ़ा और समस्तीपुर जिला में पैदा हुए स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों एवं सांस्कृतिक विभूतियों की चर्चा से उत्साहित एवं गौरवान्वित हुआ। श्री झा इसके लिए बधाई के पात्र हैं। किन्तु यह देखकर आश्चर्य हुआ कि सांस्कृतिक विभूतियों में लोकगीतकार 'स्नेहलता' की चर्चा नहीं की गई है।

श्री स्नेहलता समस्तीपुर जिला के कल्याणपुर प्रखंडान्तर्गत डरोड़ी गाँव के निवासी थे। विद्यापति के बाद मिथिलांचल ही नहीं सम्पूर्ण उत्तर बिहार का शायद ही कोई घर हो जहाँ कि महिलायें जन्मोत्सव से लेकर विवाहोत्सव तक संस्कारों के अवसर पर अथवा किसी भी पर्व त्योहारों के समय स्नेहलता के गीतों को नहीं गाती हों। उत्तर बिहार का शायद ही कोई गाँव मिले जहाँ राम जानकी विवाहोत्सववव स्नेहता के गीतों के बिना होता हो। आप यदि गौर से सुने तो उत्तर बिहार के वर और कन्या को राम और सीता का प्रेतिरूप मानकर महिलायें स्नेहलता के गीतों से विवाह संस्कार पूर्ण करती है। उत्तर बिहार का हर नारी और पुरुष स्नेहलता के बीतों की मधुरता का कायल है। ऐसी सांस्कृतिक विभूतियाँ जो अपने जीवन काल में ही जन-जन के कंठ से प्रवाहित होने लगे बहुत कम पैदा होते हैं। मगर कहावत मशहूर है 'घर को योगी जोगरा आन गाँव के सिद्ध।'

मिथिलांचल की लोक संस्कृति को समृद्ध बनाने में समसामयिक अन्य गीतकारों से उनकी तुलना नहीं की जा सकती। कहा जाता है कि उत्तर बिहार में वेद मंत्रों के बिना संस्कार पूरे हो जाय तो हो जाय मगर स्नेहलता के गीतों के बिना पूरे नहीं होते। आप सरस्वती पूजा, शिवरात्री, होली, रामनवमी, जानकी नवमी, झूला, कावरगीत, विश्वकर्मा पूजा, नवरात्रा, दिवाली, छठ और राम जानकी विवाहोत्सव में ध्यान देकर सुने तो आधे से अधिक गीत स्नेहलता के सुनेंगे।

स्नेहलता ने उत्तर बिहार में प्रचलित लोक गीतों के सभी विधाओं सोहर, समदाऊन, झूमर, कजरी, पूरबी, पराती, महेशवाणी, नचारी, डोमकछ, समा चकेवा, होली-फाग, चैतावर का प्रयोग प्रचूर संख्या में और सिद्धहस्त ढंग से किया है। उनके गीत हमारे सांस्कृतिक धरोहर हैं। स्नेहलता के गीत जाति साम्प्रदाय से ऊपर उठकर आत्मिक उन्नयन का मार्ग प्रशस्त करते हैं। यही कारण है कि वे सभी जाति सम्प्रदाय में समान रूप से समादृत हैं। उनके गीत मधुरोपासना का प्रतिनिधित्व करते हैं फलतः नारी पुरुष भेद से भी मुक्त है। वे हम सबके साझा सांस्कृतिक पहचान बन चुके हैं। वे सबके हैं।

कृप्या भूल सुधार के रूप में उक्त बातों को अलग से प्रकाशित करने की कृपा की जाय।

विश्वासभाजन

कृष्ण कुमार 'कन्हैया'

लोक कला संस्कृति संस्थान, डरोड़ी"

स्नेहलता की मूर्ति दरोडी के तिकोने चौक पर बिताने के लिए स्थानीय प्रशासन को लिखे गए पत्र का ड्राफ्ट।

लोक कला संस्कृति संस्थान (इप्का)
ग्राम-विदेहनगर डरोड़ी, पत्रालय - करूआ हजपुरवा
जिला - समस्तीपुर, मो0 नं. 9934093976

सेवा में,
विषय :- लोकगीतकार 'स्नेहलता' की मूर्ती कल्याणपुर चौक स्थित तिकोने घेरे के अन्दर स्थापित करने की अनुमति के सम्बन्ध में अभ्यावेदन।
महाशय,

उपर्युक्त विषय की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करते हुए निवेदन है कि लोकगीत कार स्वर्गीय स्नेहलता विद्यापति के बाद उत्तर बिहार खासकर मिथिलांचल में सर्वाधिक लोकप्रिय गीतकार हुए। उनके जीवनकाल में ही उनकी लोकप्रियता जन-जन के कंठ में स्थापित हो चुकी थी।

मिथिलांचल की लोकसंस्कृति को समृद्ध बनाने में समसामयिक अन्य गीतकारों से उनकी तुलना नहीं की जा सकती है। स्नेहलता के संस्कार गीतों के बिना कोई भी संस्कार पूरे नहीं होते हैं। कहा जाता है कि 'उत्तर बिहार में वेद मंत्रों के बिना शादी-विवाह, उपनयन, नामाकरण, जन्मोत्सव आदि हो सकते हैं किन्तु स्नेहलता के गीतों के बिना नहीं।' इसी प्रकार उनके गीतों के बिना सरस्वती पूजा, शिव विवाह, होली, रामनौमी, जानकी नौमी, झूला, कावर, देवीपूजा, छठ आदि कोई भी पर्वनहीं मनाया जाता।

स्नेहलता ने अपने गीतों में प्रचलित सभी विधाओं सोहर, सामदाउन, झूमर, कजरी, पूरबी, पराती, महेशवाणी, नचारी, डोमकछ, सामाचकेबा, होली-फाग, चैतावर का प्रयोग सिद्धहस्त तरीके से किया है। उनके गीत हमारे सांस्कृतिक धरोहर हैं। स्नेहलता के गीत जाति-सम्प्रदाय से ऊपर उठकर आत्मिक उन्नयन का मार्ग प्रशस्त करते हैं यही कारण है कि वे सभी जाति-सम्प्रदायों में समान रूप से लोकप्रिय हैं। उनके गीत मधुर उपासना पधति का प्रतिनिधित्व करते हैं। फलतः नारी-पुरुष भेद से भी मुक्त है। वे हम सब के साझा सांस्कृतिक पहचान बन चुके हैं। वे सबके हैं।

ऐसे घर-घर में लोक प्रिय और जन-जन के कंठ से प्रवाहित लोक गीतों के गीतकार का जन्म समस्तीपुर जिला के कल्याणपुर प्रखंडान्तर्गत डरोड़ी गाँव में हुआ था। उनके द्वारा स्थापित जानकी विवाहोत्सव, अब गाँव-गाँव में मनाया जाता है।

अतएव हम उनकी मूर्ती कल्याणपुर चौक पर तिकोने घेरे के अन्दर स्थापित करना चाहते हैं। अतः अनुरोध है कि कल्याणपुर चौक पर (तिकोने घेरे के अन्दर) मूर्ती स्थापना की अनुमति देने की कृपा की जाय।

विश्वासभाजन

नाम
पदनाम-पता
हस्ताक्षर

4

भक्ति काव्य धारा के विशिष्ट रचनाकारों का परिचय (मिथिला)

हिंदी साहित्य की भक्ति काव्य धारा में सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई, घनानंद, रैदास आदि आते हैं। लेकिन ध्यातव्य हो कि इन सभी ने अपनी-अपनी भाषा में अपना साहित्य रचा, जिनके काव्य कर्म ने आज की आधुनिक हिंदी की रीढ़ को खड़ी करने में अपने मज़बूत कंधे दिए। मैथिली में विद्यापति आदिकाल में ही हो गए। उन्हें एक साथ भक्त और शृगारी दोनों कहा जाता है। हमारे शिक्षक बताते थे कि विद्यापति को पढ़नेवाले युवा उन्हें शृगार का कवि मानते थे तो वृद्ध जन भक्त।

आधुनिक मैथिली भक्ति काव्य धारा की बात करें तो मैथिली साहित्य से पहले जन की भाषा रही है। इसलिए जनमानस के हृदय में बैठा हुआ कवि ही भक्त और उनके भाव ही भक्ति के भाव होते हैं। इसलिए स्नेहलता, मोदलता, पद्मलता आदि के नाम प्रमुखता से आते हैं। श्री योगानंद झा कहते हैं- "स्नेहलता हमारे अखिल भारतीय स्तर के रचनाकार हुए। इन्होने एक सम्प्रदाय का निर्माण किया, जिसके अनुयायी एक संत नहीं, अनेकों संत हुए और इसतरह से मिथिला में 'सखी सम्प्रदाय' का आविर्भाव और विकास हुआ। इसमें स्नेहलता का बहुत बड़ा योगदान रहा।" वे आगे यह भी कहते हैं - "मिथिला के हमारे संत 'सखी सम्प्रदाय' में, राम भक्ति के भाव के संग दीक्षित हुए । उनलोगों का गायन सीता-राम विवाह के गायन के रूप में होता है। दुर्भाग्य की बात है कि मैथिली के लोक साहित्य को इतिहास में स्थान दिया नहीं गया। जब लोक साहित्य की ओर लोग प्रवृत्त हुए तो उस समय भी सखी सम्प्रदाय के बारे में लोगों ने एक निश्चित अवधारणा नहीं बनायी। निश्चित अवधारणा नहीं बनाने के चलते स्नेहलता, मोदलता, पद्मलता आदि जितने सारे सखी सम्प्रदाय के कवि हुए हैं, उनलोगों को प्रश्रय नहीं दिया गया। लेकिन बाद में महसूस किया गया कि ये हमारे मुकुटमणि हैं। साहित्य में इनका स्थान होना चाहिए, क्योंकि इनकी रचनाएं लौकिक दृष्टि से पूर्ण और हमारी साहित्यक दृष्टि से भी बहुत उत्तम कोटि की हैं।"

नाम 'स्नेहलता' से शायद भ्रम होता है कि स्नेहलता कोई महिला होगी। इसके लिए हमलोगों को मिथिला के सखी सम्प्रदाय में जाना पड़ेगा। सखी सम्प्रदाय में दीक्षित हो जाने के बाद महिला या पुरुष, उनका मूल नाम नहीं रह जाता। गुरू उनका नाम रखते हैं और वही स्नेहलता, कदमलता, पद्मलता, मोदलता जैसे नाम रखे जाते हैं। उसमें लता जोड़ दिया जाता है और यह माना जाता है कि ये लताएं सीता जी की सखियां हैं, जो सीता जी के माध्यम से राम की पूजा करती हैं। यह पूजा सखी के माध्यम से परम पिता परमेश्वर की आराधना है। राम परम पिता हैं और सीता उनकी शक्ति। जब भी हम राम यानी निर्वाण के नजदीक पहुंचना चाहते हैं, तो वहां तक जाने के लिए आत्मा और परमात्मा का संयोग बिठाना पड़ता है। मनुष्य मात्र, चाहे

स्त्री हो या पुरुष, एक आत्मा है। वह परमात्मा में मिल जाए, इसके लिए शक्ति के माध्यम से ही राम तक पहुंच सकते हैं। पहुँचाने का काम करते हैं गुरू। इसलिए गुरू एक नया नाम देते हैं। राम और सीता के सखी के रूप में इन्हें नाम दिया जाता है।

जब हम आत्मा-परमात्मा की बात करते हैं तो यह श्रृंगार से बिल्कुल अलग होकर भक्ति से जुड़ जाता है। हालांकि श्रृंगार की अंतिम परिणति भक्ति ही होती है। तो ऐसे में हम कह सकते हैं कि विवाह के गीत लिखकर श्रृंगार से भक्ति तक की यात्रा स्नेहलता जी या बाकी सभी सखी सम्प्रदाय के कवियों ने की। यह लौकिक से पारलौकिक तक पहुंचना है।

मिथिला में भक्ति की एक अलग परंपरा स्थापित हुई है। भक्त की यह भूमि जानकी की जन्मभूमि है और इसी भूमि को ऐसा सौभाग्य मिला कि जानकी का विवाह यहां हुआ और रामचन्द्र अयोध्या से यहां आए। वैवाहिक प्रकरण में मिथिलावासी को सौभाग्य मिला कि उनका रामजी से अपनापा बने। और इसी अपनापे का निर्वाह सदियों से यहां के भक्त लोग करते रहे हैं और उनकी भावनाओं को मिथिला के संत-कवियों ने शब्द दिए हैं।

मिथिला के सखी सम्प्रदाय में दो नाम प्रमुखता से आते हैं- स्नेहलता और मोदलता। दोनों और दोनों की रचनाओं में क्या फर्क है, इसके बारे में योगानन्द जी कहते हैं- “मोदलता जी जब किशोरावस्था में रहे होंगे, जब स्नेहलता जी का जन्म हुआ होगा। 15-20 साल का अंतर रहा होगा।"

मोदलता जी संत थे। मिथिला में शक्ति पूजा की प्रधानता थी। बाद में जब वैष्णव सम्प्रदाय का आर्विभाव हुआ, राम मंदिरों का निर्माण हुआ, तो वहां पर तुलसीदास के रामचरित मानस पर आधारित विवाह प्रकरण का आयोजन होने लगा उत्सव के रूप में। उस आयोजन के क्रम में मोदलता जी एक बार बेगुसराय गए। विवाह में एक प्रकरण है- विवाह मंडप में धान का लावा छिड़ियाने यानी बिखेरने का। वर- कन्या के हाथ में एक सुपती दिया जाता है। उसमें वर के द्वारा धान का लावा दिया जाता है। उस प्रक्रिया को भांवरी कहते हैं। वेदी के चारों तरफ लड़का और लड़की को घुमाया जाता है। इसे सप्तपदी कह सकते हैं। लड़के और लड़की को घुमाने की एक आध्यात्मिक स्थिति रही है। कहते हैं, सात बार की यह प्रदक्षिणा दोनों के सात जन्मों तक साथ-साथ रहने की है। आध्यात्मिक दृष्टि से पति अपनी पत्नी को संपन्न कर सके। आर्थिक दृष्टि और हर दृष्टि से पति-पत्नी एक- दूसरे के उन्नयन में लगे रहें और यह जनम भर ही नहीं, बल्कि सात जनमों तक एक-दूसरे के साथ निर्वाह करे। यह मिथिला की मान्यता है और भारतीय मान्यता भी। मोदलता जी गाते हैं-

‘राम सिया सुंदर प्रदीछाही,
डगमगाता मणि खंभन माही।
कुंवरि कुंवरि कलि भांवरी दैहीं,

नयन लाभ सब सादर लैहीं।।....."

तुलसीदास अपने "रामचरित मानस" में राम और सीता की शादी के समय के ज्योनार में मिथिला की स्त्रियों द्वारा गाली गाए जाने का उल्लेख करते हैं-

"पंच कँवल करि जेवन लागे, गारि गान सुनी अति अनुरागे।।
-----जेवंत देहिं मधुर धनी गारी। लै लै नाम पुरुष अरु नारी।।
समय सुहावनि गारि बिराजा। हँसात राऊ सुनि सहित समाजा।।"

मोदलता में भी भांवरी और मिथिला की स्त्रियों द्वारा हास-परिहास के प्रसंग हैं।

'चारो दुल्हा देत भंवरिया ये,
चारो दुल्हा देत भंवरिया ये...
संग सुहति दुल्हीन नगरिया हे...
चारो दुल्हा देत भंवरिया ये...
रतन जड़ित मणि सूपति सुहरिया
लावा छीरियाबे भरभरिया हे...'

योगानन्द जी कहते हैं- "ध्यानावस्था में माना जाता है कि परमात्मा के साथ उनका संयोग हुआ। एक गीत गाया। मानस के आधार पर उस गीत की रचना हुई। वही गीत संभवत: मैथिली में प्रथम विवाह गीत के रूप में आया। वैसे सखी सम्प्रदाय के गीत मिथिला के कवियों द्वारा बहुत पहले से लिखे जाते रहे हैं, लेकिन मैथिली में वहीं मोदलता जी के द्वारा प्रयोग हुआ।"

स्नेहलता की प्रेरणा का स्रोत रहा- जनकपुर धाम में राम सीता मंदिर में विवाह प्रकरण। कहते हैं, वहाँ उन्हें राम सीता ने स्वप्न दिया । उससे स्नेहलता जी इतने प्रेरित हो गए कि राम-सीता के विवाह का प्रसंग को दरोड़ी में ही शुरू किया गया। स्नेहलता जी को जो यह प्रेरणा मिली, जिसपर संत-महात्मा लोग लिख रहे थे। वास्तव में ये भी तो संत ही थे। उन्होंने भी धनुष यज्ञ से लेकर समाज में विवाह की प्रचलित रस्मों पर गीत लिखे, अपने तत्कालीन प्रचलित रस्मों के आधार पर यह कल्पना करते हुए कि राम-सीता के समय कैसे उन रस्मों का पालन किया गया होगा। ये गीत बाद में इतने प्रचलित हो गए कि मिथिला और मिथिला से बाहर घर-घर में इन गीतों का गायन होने लगा- चाहे बक्सर, अयोध्या हो या कहीं भी। इस तरह स्नेहलता जी हमारे सम्पूर्ण भारत में छा गए। जहां कहीं भी राम और सीता का यज्ञ होता, राम और सीता का विवाह प्रकरण होता, स्नेहलता अपने गीतों के माध्यम से विराजमान रहते हैं।

स्नेहलता के रचे हुए गीत जन मानस में हैं, जहां जन के जुड़ने से यह भक्ति के पीढ़े से उतरकर जन की गोद में समा जाता है। हल्दी कूटने से लेकर सिंदूरदान और विदाई गीत तक आते हैं। मिथिला में विवाह प्रकरण के गीतों में सीता को बेटी कहा गया है। जनमानस में वह

बेटी के रूप में स्थापित हैं। इसलिए आज किसी भी बेटी की शादी होगी तो उसमें निश्चित रूप से सीता का नाम होगा -

'बड़ रे जतन सौ सिया धिया पोसल,
सेहो सिया राम लेले जाए।'

यही कारण है कि जनमानस से स्नेहलता जुड़ते चले गए और पूर्णतः लोकप्रिय हो गए।

मिथिला में विद्यापति पहले से ही स्थापित हैं। हर कोई जानता है विश्व स्तर पर विद्यापति का इतना बड़ा नाम! स्नेहलता और विद्यापति दोनों की प्रसिद्धि का अंतर मूल रूप से मैथिली साहित्य की धारा में श्रृंगार रस के रूप में है। श्रृंगारिक कविताओं की रचना शुरू से लेकर मध्य तक विद्यापति से लेकर संपूर्ण मध्यकाल तक श्रृंगारिक कवियों की रही है। ऐसा नहीं है कि भक्तिपरक रचनाएं नहीं होती रही हैं। विद्यापति का मुख्य भाव लौकिक श्रृंगारपरक है। कह सकते हैं कि लोक शिक्षण या श्रृंगार शिक्षण विद्यापति द्वारा किया गया। उसका आधार अनुशास्त्रीय भी रहा है, जिसको बाद में लोगों ने आत्मा-परमात्मा से जोड़ दिया। विद्यापति वस्तुतः श्रृंगारिक कवि ही थे। उन्होंने राम और कृष्ण को लेकर भक्तिपरक रचनाएं कीं, लेकिन सीता को विद्यापति ने अपनी रचनावली से अलग रखने की कोशिश की। अलग रखने का कारण था। सीता एक ऐसी अभागन लड़की हुई मिथिला की जिसको विवाहोत्तर काल में कष्ट ही कष्ट सहना पड़ा। विद्यापति का एक पद मिलता है उसमें लिखा है -'सासुक कोर मे सुतल जमाय और समधि विलह से विलहल जाय।' पृथ्वी की बेटी है सीता। राम की सास हैं पृथ्वी और पृथ्वी की कोर यानी गोद में ही रामचन्द्र बैठे हुए हैं। फिर भी सास अपनी गोद में अपने दामाद को लिए हुए है। समधी दशरथ को लगता है कि मेरा बेटा कहां चला गया है।.... सास की गोद में खेल रहा है, आनंद कर रहा है। सीता पर लिखा गया पद बहुत ही कारुणिक है, जिसमें विद्यापति ने केवल संकेत किया है कि सीता किन भयावह परिस्थियों से गुजरी। उस स्थिति को एक पिता या जनक होने के नाते मिथिला के लोगों ने बहुत ज्यादा प्रश्रय नहीं दिया। स्नेहलता देखते हैं कि विवाह तक सीता का जीवन बहुत ही उत्तम कोटि का जीवन है। इसलिए उन्होने उतने ही प्रकरणों और प्रसंगों लिखा।

सखी सम्प्रदाय के जितने भी रचनाकार हैं उनके गीत तुलसी से प्रभावित हैं, लेकिन दोनों में अंतर है। तुलसी शास्त्रीय विधि से आगे बढ़ते हैं। लता या सखी सम्प्रदाय के लोग लौकिक विधि से। मिथिला और भारतीय पद्धति में विवाह के कुछ प्रकरण ऐसे हैं जहां वेद चुप है और लोक मुखर है। सिंदूर दान वैदिक पद्धति नहीं है। लेकिन वह अगर नहीं हुआ तो शादी ही नहीं हुई। वह अगर धोखे से भी हो गया तो शादी हो गई।

स्नेहलता के गीतों की तरफ बढ़ते हैं, तो अंग्रेजी में कहते हैं- Teasing Songs, यानि हंसी-मजाक, छेड़-छाड़ के गीत, जिसे हम गाली गीत कहते हैं। मैथिली में इसे डहकन क़हते हैं। आजकल जिस दौर से हम गुजर रहे हैं वहां इसे गाली, अश्लील, असभ्य और जाने क्या-क्या

माना जा रहा है। वैसे में इन गाली गीतों की प्रासंगिकता किस रूप में आगे बढ़ रही है, यह भी विचारणीय है। योगानन्द जी कहते हैं- "ये गीत प्रासंगिक हैं, क्योंकि खासकर के मिथिला में गाली गीत का गायन वैवाहिक अवसर पर होता है। हंसी मजाक होता है। इससे स्नेह-संबंध बढ़ता है। तुलसीदास ने भी लिखा है। सिर्फ विवाह प्रसंग में लिखा। युद्ध में तो गाली देंगे नहीं। स्नेहलता या जितने भी सखी सम्प्रदाय के लोग हैं, उनका दायरा विवाह है। इसे फेस्टिविटीज कह सकते हैं। उसमें जो गाली गीत गाए हैं या लिखे हैं, वे प्रासंगिक हैं।" हंसी-मजाक किसके साथ करते हैं? जो आपके अपने आदमी हैं, किसी अनजान आदमी से तो हंसी-मजाक नहीं करेंगे। स्नेहलता कहते हैं-

'खीर स गर्भ रहल जननी के अपने अहां जनै छी,
श्रृंगीक बदला दशरथ के कोना क बाप कहे छी।
हमरा बजैतो लाज लगैये यौ दुलरूआ कोना बाजू।'

गालियों की प्रासंगिकता यही है कि गाली तभी गाली है कि जब जिनको गाली नहीं दी जानी चाहिए, उनको हम गाली बकते हैं। ससुराल की गाली अति प्रिय होती है। यहां की परंपरा है और उसके द्वारा स्नेह की अभिवृद्धि होती है। इस तरह गाली भी एक स्नेह संबंधी प्रक्रिया ही है, क्योंकि वहां पर दो कल्चर एक साथ मिलते हैं। दो परिवारों का मिलन होता है। दो गांवों का मिलन होता है। तब दो व्यक्तियों का मिलन होता है। मिलन से पहले ये गालियां दोनों को जोड़ती हैं। ये तोड़ने के लिए गालियां नहीं है। जहां तोड़ने के लिए गालियां हैं वहां स्नेहलता नहीं है। वहां लता भी नहीं हैं। वहां ये सारे संत लोग नहीं हैं। ये जोड़ने के लिए है। अमर्यादित भी नहीं हैं। मर्यादा उलंघन साहित्य का दोष हो जाएगा- साहित्य का अश्लीलता दोष। स्नेहलता, मोदलता या लता सम्प्रदाय के संतों की गालियों द्वारा साहित्य का श्रृंगार और ये जोड़ने के लिए हैं। इसलिए इसमें कहीं भी काव्य दोष नहीं माना जा सकता है। ###

स्नेहलता के गीत:

भक्त कवि स्नेहलता द्वारा अपनी 'कामना और लोभ' का समर्पण करते हुए कहते हैं- 'जहाँ काम तहाँ राम नहि, जहाँ राम तँह राम'। वे कहते हैं, "जब कामनाएं समाप्त हो जाती हैं तो राम आरम्भ हो जाते हैं। काम का सम्बन्ध प्रायःरूप से होता है और लोभ का सम्बन्ध धन वैभव से।" कामी पुरुष स्त्री के रूप पर मुग्ध रहता है, और लोभी धन वैभव पर। परन्तु दोनों का सम्बन्ध 'भोग' से है। कहते हैं मनुष्य जीवन भर अधिक से अधिक 'भोग' की चिंता और प्रयत्न में रत रहता है। अमर्यादित भोग से 'रोग' उत्पन्न होता है जो नरक का प्रत्यक्ष मार्ग है। मनुष्य केवल भोग हेतु स्वर्ग चाहता है, क्योंकि वह 'भोग-लोक' है। इस संसार में जो 'भोग' उसे प्राप्त हो सका, उसके लिए स्वर्ग पाना चाहता है। नरक में कष्ट ही कष्ट है, जिससे वह भयभीत रहता है। मगर यह भोगेक्षा और नरक का भय संसार बन्धन का कारण है। जबतक मनुष्य स्वर्ग की अपेक्षा और नरक के भय से मुक्त नहीं होता, राम में उसकी रूचि नहीं होती।" भक्त इन दोनों योग और क्षेम को भगवान को अर्पित कर स्वयं को भी उनकी शरण में सौंप देता है। तुलसीदास कहते हैं-

कामिहि नारि पियारि जिमि, लोभी को प्रिय दाम
तियि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहुँ मोहि राम।

भक्त स्नेहलता ने अपने आराध्य के समक्ष इस तरह अपने को समर्पित किया है-

अहीं पर हम किशोरी जी, अपन राम धार धैने छी।
जेना राखी जहाँ राखी, सकल स्वीकार कैने छी।।
जखन अपने के नैहर में, जनम थिक हे हमर बहिनी।
अहाँ पर अछि हमर दाबी, तेकर अधिकार पौने छी।।
पहिरले मौड़ मँगटीका, महावर लाल चरणन में।
जनक आंगन में मडवा पर छँटा गुलजार कैने छी।।
परम प्रिय होयत बेसी के, एम्हर पाहुन ओम्हर बहिनी।
अपन बुधियार कैने छी युगल दरबार धैने छी।।
मिलन के प्रेम बन्धन में, लपेटल 'स्नेहलतिका' से।
रहू सन्मुख सदा एहिना, तेकर इकरार कैने छी।।

भक्त स्नेहलता अपनी आराधिका को रिझाने हेतु कोई भी त्याग करने के लिए सदा तत्पर हैं-

मेरे रोने से तुमको जो आए हँसी,
ते मैं रो रो के तुमको हँसाया करूं।

स्नेहलता उलाहना भी देते हैं-

मिथिला के सुधि कने लिए हे किशोरीजी बहुत दिन भेल।
आब पलक उघारू हे बिसारि किए देल।।

नीचक विभव देखि इन्द्र ललचैला हे, नयन सुख लेल।
आब ओहे थिक मिथिला दुरलभ भेल, नून तेल।।
अपन अचार शुचि केकरो न भावे, बुझू परलई झमेल।
सिखी अनकर चाल भेल लोग बकलेल।।
जप तप संयम विवके बुद्धि विधा, सिये। सब चलि गेल।
कहय लतिका सनेह देखू नैहरक खेल।।

स्नेहलता ने हिन्दी और मैथिली में अपने गीत रचे हैं। उनका समर्पण और रचनाजनित प्रतिबद्धता भी काव्यमय स्वरूप में प्रस्फुटित होता है। शोध के दौरान मिले गीत यहाँ दिए जा रहे हैं। इन गीतों को देखने पर उनका वर्गीकरण कुछ इस तरह से किया जा सका है-

1 भक्ति गीत
   - गणेश वंदना
   - सरस्वती वंदना
   - शैव पदावली गौरी वंदन सहित
   - कृष्ण लीला
   - सीता राम वंदना
2 दरोडी गीत
3 मिथिला महिमा
4 सीता महिमा
5 ब्याह के गीत (अलग-अलग रस्मों के)
6 समदाओन
7 सोहर
8 देशभक्ति गीत
9 विज्ञान गीत
10 अन्य विविध गीत

1

समर्पण वाक्य

संतशिरोमणि सदा सरलचित सीताराम उपासी
रामचन्द्र शुभ नाम रामप्रिय श्रद्धाभक्ति हुलासी
मठाधीश गरिमा गुण गौरव गाहर ग्राम निवासी
रामचरितमानस के मधुकर हरिपद प्रीति पियासी
भाव सुमनमय छोट पुस्तिका भक्त समाजक दर्पण
स्नेहलता लतराय चरण पर सादर कयल समर्पण

2

रचना के लिए-

एहि रचना के आदि मे अछि राखल किछु हेतु
व्यक्त करै अछि से प्रथम श्रद्धाभक्ति समेतु
ग्राम डरोड़ी वाटिका जे थिक नगर विदेह
सीताराम विवाह में लतरल लता सिनेह
ललित लता लग लँगोटिया साथी राजाराम
आपस केर सहयोग सँ जीवन सफल ललाम
कृपा किशोरिक कुंज मे हमरो लेलन्हि खीचि
सीता संग निवाहती कृपा वारि सँ सीचि
आदि इजोरिया पक्ष छल पावन माधव मास
हुनक लिखल एक पत्रिका आयल हमरा पास
पढ़ि आमन्त्रण पत्रिका उमड़ल प्रेम अथाह
मित्रक घर आयोज्य अछि जानकि जन्म उछाह
किछु कारणवश यज्ञ मे लै नहि सकलहुँ भाग
भेल हृदय में प्रेरणा रचना मे अनुराग
सित नवमी वैशाख दिन मध्य दिवस सुखधाम
कमल उठाओल हाथ मे पूर भेल मनकाम
एहि कारण ई पुस्तिका आयल सभक समक्ष
क्षमायाचना स्नेह के त्रुटि सकल प्रत्यक्ष

3

मानस महिमा

राम चरित मानस की महिमा सकल विश्व ने गाया
मगर संतोष न आया।

चरित के कारण राम-राम थे
मानवता के ज्ञान धाम थे
उसका जीवन सफल हुआ जो राम चरित अपनाया।।मगर0।।
राम चरित मानस सागर है
निर्धन मन का रत्नाकर है
दिल का झोली भरा रत्न से जिसने खोल लगाया।।मगर0।।
राच चरित रसिया बजरंगी
जिसको दास बनाया-
अपने पीछे साथ लगाकर राम से भेंट कराया।।मगर0।।
राम चरित को चरित में लाकर
पढ़कर, सुनकर, गुनकर, गाकर
बना राम जो इस मानस में 'स्नेहलता- लतराया।।मगर0।।

4

अन्तरेच्छा

चाह नहीं इहलोक सधे,
नहीं चाह मुझे सुरलोक सिधाऊँ।
चाह नहीं सुख सम्पति की,
नहि चाह कभी अनिमादिक पाऊँ।।
योनि अनेक मिले तो मिले,
मंजूर मुझे सब योनि में जाऊँ।
'स्नेहलता' नित चाह यही,
मिथिला में रहूँ मिथिले की कहाऊँ।।

भक्ति गीत

5

श्रीगणेशाय नमः

जय गजवदन गणेशजी जय जय जय सुखसार
विध्नहरण मंगलकरण सकल सिद्धि दातार
जय जय वरदे शारदे विमल बुद्धि आगार
सानुकूल रहु दासपर दियऽ विवेक-विचार

6

बन्दौं गणपति पद विघ्न विनाशी
सब सुखराशि सब सिद्धि के दातार हे।
मंगलकरन जगवदन सगुन निधि
शिवक दुलारू लाल गौरीक कुमार हे।
उदर प्रलम्ब मुख मोदक मधुर प्रेमी
नेमी राम नाम के अनन्य गुणागार हे।
जयति गणेश तोसे मांगे सखि स्नेह दया
धन्य धन्य धन्य प्रभु मूशक सवार हे।

सरस्वती वंदना

7

माता सरस्वति हे, कहिया हरब अज्ञान।।0।।
हम सन्तान अहाँ छी माता, हमरा सभके बुद्धि विधाता
अपने कला से खान।।0।।
बड़-बड़ आस लगा कऽ अयलहुँ, भेलहुँ कृतारथ दर्शन पयलहुँ
पुरल सकल अरमान।।0।।
विद्या बिना बड़ दुःख कटै छी, ताकू कने हम साँचे कहै छी
ममताक नाता लिअऽ मान।।0।।
लतिका स्नेह पर अँखिया उठाबू, पूत कपूतो के नहि भटकाबू
अपने कृपा के निधान।।0।।

8

माता सरस्वति हे, कहिया हरब अज्ञान।।0।।
हम सन्तान अहाँ छी माता, हमरा सभके बुद्धि विधाता
अपने कला से खान।।0।।
बड़-बड़ आस लगा कऽ अयलहुँ, भेलहुँ कृतारथ दर्शन पयलहुँ
पुरल सकल अरमान।।0।।
विद्या बिना बड़ दुःख कटै छी, ताकू कने हम साँचे कहै छी
ममताक नाता लिअऽ मान।।0।।
लतिका स्नेह पर अँखिया उठाबू, पूत कपूतो के नहि भटकाबू
अपने कृपा के निधान।।0।।

9

दिअऽ कने करुणा के कोर, माता शारदे।।
शिशिरक अंत वसंत पधारल मदनक सेन बटोर।
तरुणी तरुवर पतझड़ लेलक पहिरल हरित पटोर।।
अमुआके डारिपर कुहकय कोइलिया पपिहा मचाबय शोर।
मुसकैत कलिपर चलि अलि गुंजत झुकि-झुकि चूमत ठोर।।
दुरस पवन बहइछ सखि रसे रसे मधुरितु भेल विभोर।
मगन सुमन सब गगन नहारथि रुसल हमर विचचोर।।
एहन सुखद दिन वीणक धुनि सुनि प्रकृति हँसत चहु ओर।
स्नेहलता अविवेक हरण करु एक भरोसा तोर।।

10

उठाय जननी हे, उठाय जननी
तनि ताकू आब नजरि उठाय जननी।
दुनिया के आशा मे जीवन गमाओल
ज्ञानक बिना शान्ति कहियो ने पाओल
ठगि लेल माया महान ठगनी हे।।0।।
पओल जगतमे न संकट निवारण
रहलहुँ अहाँ माता अधम उधारन
सूझय न मारग अन्हार जननी हे।।0।।
सब जग सराहथि माता के ममता
माता के देखल अपरिमित क्षमता

अपने के महिमा अपार जननी हे।।0।।
माता सरस्वती! बीतल से बीतल
स्नेहक करेजा करू आब शीतल
काटू अविद्या छिपाड़ ठगनी हे।।0।।

11

माता शारदा के शरणि´ जा जा मनुआँ।।टेक।।
क्षीर-नीर के भेद बताबथि जनिकर हंस सवारी
जिनका पदरज मणिसँ होयत मानस के उजियारी
मेटय जीवन के दुर्गनि´।।0।।
विद्या अओर अविद्या फेंटल ई जग गोरखधंधा
ज्ञानी भवसँ पार उतरता, मरत ज्ञान केर अंधा
मूरख, काज न अयतौ दुनिया।।0।।
तीन भुवन सुर-नर-मुनि-ज्ञानी तोरेटा गुण गायब
कृपा अहाँके पाबि केओ जन, जीवन केर फल पाबय
सुमिरब हरदम तोर चरणि´।।0।।
विद्यादानी गिरा भवानी शारद वीणापाणी
उर अंतर मे ज्योति जराबू स्नेहलता अज्ञानी
गाबथि हरदम तोर भजनि´।।0।।

12

शिव-पार्वती रचना

बम भोला हमरा चाकर रखता कहबनि हे गौरी।।
भांग निशामेबेमत रहता रखतनि के झोड़ी।
हम तऽ हरदम हाजिर रहबनि दुनू कर जोड़ी।।
बाघ-बड़द-मुस-मयुर-साँपमे उठतनि हरहोरी।
बिनु हमरे नहि झगड़ मेटायत भगता घर छोड़ी।।
नित उठि फूल अकोनक आनब बेलपात तोरी।
बाबाके सिंगार सजायब नाचब भय भोरी।।
जखने कहता पीसि पिआयब भांग-धथुर तोड़ी।
स्नेहलता लतराय चरण पर लतरब बलजोड़ी।।

13

बम भोला हमरा चाकर रखता कहबनि हे गौरी।।

भांग निशामे बेमत रहता रखतनि के झोड़ी।
हम तऽ हरदम हाजिर रहबनि दुनू कर जोड़ी।।
बाघ-बड़द-मुस-मयुर-साँपमे उठतनि हरहोरी।
बिनु हमरे नहि झगड़ मेटायत भगता घर छोड़ी।।
नित उठि फूल अकोनक आनब बेलपात तोरी।
बाबाके सिंगार सजायब नाचब भय भोरी।।
जखने कहता पीसि पिआयब भांग-धथुर तोड़ी।
स्नेहलता लतराय चरण पर लतरब बलजोड़ी।।

14

गौरी हमर कसुरबा हे
माफ करथि शंकर सौं कहबनि हमर कसुरबा हे
अपन शुभाशुभ कर्म दोषसँ सभटा भोग भोगइ छी
जेहि विधि रखने छथि बमभोला तेहिना हमहुँ रहइ छी
जे जीवनमे कहियो ने देखल, से सभ आब देखइ छी
बितल घड़ी सभी याद परैयै, तदपि ने चेत रखै छी
जनिका-जनिका अप्पन बूझल, से विरान भय गेला
आइ बुझइ छी अइ दुनिया मे, सब स्वारथ के खेला
थाकल तन-मन थाकल पैरुख, आब होइछ पछतावा
स्नेहलता बुझि पड़ल आब जे, हमर अपन छथि बाबा

15

जय हो शंकर दानी, जय हो शंकर दानी।
एक अधम पर पलक उघारू, अपन टहलुआ पानी।।
हे दानी, एक अहीँ दुःखभंजन
दे दानी, आब सहल बड़ गंजन
भवसागर के बीच भँवर मे, डगमग नाव पुरानी।।
हे दानी, तीन भुवन यश गाबय
हे दानी, चारि पदारथ पाबय
जे बेलपात-धथूर चढ़ाबय, आँक-गंगाजल आनी।।
हे दानी, देखल जग के खेला
दे दानी, सब स्वारथ के मेला
हाय-हायमे जीवन बीतल, कहब की, अपन कहानी।।

हे दानी, आयल द्वार भिखारी
हे दानी, बुधि-बलहीन अनारी
स्नेहलता केर सबटा जानथि गौरी रानी।।

16

भोला बाबा हमर बड़ दानी, खुशामद अनकर की?
जे केओ दुःख कर जोड़ि कहै छनि
अधमक पाप न याद रहै छनि
पाथर पिघलि भेल पानी।।0।।
कनक कनैल आँक नित लायब
विजया बेलक पात चढ़ायब
ढारब गंगाजल आनी।।0।।
नित उठि भोरे चरण दबायब
मधुर नचारी गाबि जगायब
आनि देब दतमनि-पानी।।0।।
स्नेहलता पदपर लतरायब
जे कहता से टहल बजायब
पूजब कलपतरु मानी।।0।।

17

गौरी अहाँ के महेश।
भरिसक छथि किछु मति के विशेष।।
अनका करथि शिव रंकसँ नरेश।
अपना लै चाही भांग धथुर हमेश।।
गौरी कोना पोसथिन कातिक गणेश।
सह-सह करै छनि विषधर शेष।।
घर परिवार के ने करै छथि उदेस।
सेच ने फिकिर धयने जोगीके भेष।।
कहथिन स्नेह छथि एहने महेश।
छोड़ता ने चालि सब, पाकल छनि केश।।

18

गौरी कोना कऽ रहबइ हे, पर्वत ऊपर बाघ साँप् लग कोना
डाकिन सापिन भूत भयंकर प्रेत पिशाच पड़ोसी
सब मिलि जग संहार करै छथि तैओ सब निर्दोषी
खसत जखन चट्टान बरफ के अंगना बीच अनेको
माथ-कपार कोना कऽ बाँचत अस्पताल नहि एको
एको चुटकी अन्न न घर मे कोना जियब की खायब
नहि खेती नहि सर्विस करता कहति-कहति मरि जायब
तेसर आँखिमे आगिक ज्वाला कंठमे भरल हलाहल
स्नेहलता एक हरियर रहता सिचथि सदा गंगाजल

19

गौरी कोना रहैछी ये, भंखर सनकहबा संग गौरी कोना।।0।।
पर्वत ऊपर वास अहाँके बरफक बीच बसेरा।
सासु-ससुर नहि पास-पड़ोसी भूत-प्रेत संग डेरा।।
बेटा एक, मुँह हाथीके, दोसर पूत षडानन।
खेत-पथार न खरची घरमे अपनो छथि पंचानन।।
मूसक दुश्मन साप, साप के दुश्मन मोर भयंकर।
सदा बाघ बसहा के दुश्मन वाहन पोसल शंकर।।
कनक-कनैल जहरमे मातल, तै पर भांग पिबै छथि।
स्नेहलता घर कोना चलै छनि अपने कोना जिबै छथि।।
एहन सावनमे बमभोला भंगियया बेसी खैयो ना।
ऊँच शिखर पर लागल हिड़ोला धीरे मचकैयो ना।
अति सुकुमारी कोमल गिरिजा हिनक सुधि लियौ ना।
बसह बाघम्बर भुजंग के डोरी गाबे हर हर ना।
भीड़ पड़य फुफकारय वासुकि स्नेह बिसरैयो ना।

20

बाबा अधिक भंग जनि पीबू, जग मे हँसी करैये लोक।।
पाँच जनामे मुख तेहत्तर, घरमे एक न दाना।
अपने मुखिया भीख मँगै छथि, और के कोन ठेकाना, जगमे।।0।।
साँप-मयुर-मुस-बड़द-बाघमे अजबे सब संघाती।
राति अन्हरिया हरपट उठलनि, घरमे दिया न बाती, जग मे।।0।।
बहुतो दीन कटै अछि कौहर, भरले भवन भरै छी।

जानि रूप अपने शंकर छी, एना किअए बिसरै छी, जग मे।।0।।
जतबे नशा पचय से पीबू, आयल आब बुढ़ारी।
स्नेहलता के स्नेह मे राखू स्नेहसिंधु त्रिपुरारी, जग मे।।0।।

21

शिवक संग होरी खेलथि पारवती।
लाल गुलाल गाल मलि गौरी, रूसल जानि करत विनती।
शिव रिसिआय शिवा तन तोपथि अबिर बनाय अपन विभुती।
पिचकारी हँसि गौरि चलाबथि, रंगसँ भीजल बुढ़बा जती।
शिव छोड़ल गंगाधार पिचकारी, शिव सनकाह न ठीक मती।
शिवगण भागि चढ़ल गिरि ऊपर, हँसी-खेल भय गेल विपती।
दौड़ि शिवा, शिव गर लपटायलि, चतरि गेल झट स्नेहलती।

22

होरी खेलथि सदाशिव-गौरि, शिखर पर फागुन मे।
डिम-डिम डिम-डिम डमरू बजाबथि साँप रहल फन जोरी।
डंफ घहराय बाघ सुनि नाचय, बसहा के फुजि गेल डोरी।
भांग-धथूर पीबि सब सनकल, भेल सभक मति अति भोरी।
हिलि-मिलि रंग परस्पर डारथि, गाबथि सब जन मिलि होरी।
स्नेहलता परबत के ऊपर होय रहल महा झिकझोरी।

23

परबत पर शिवजी खेलथि होरी।
अपनहि हाथ भांग पिबि भोला, सबके पियाबथि बरजोरी।
भूत-पिशाचिनि-डाकिनि-शाकिनि, गाबथि फाग भेल भोरी।
झोंकल शंभु अबीरक बदला, विभुति उठा झोरी-झोरी।
सबके आँखि-कान-मुँह भरि गेल, आपस उठल कपरफोड़ी।
स्नेहलता शिव रूसि पड़यला, गौरी मनाबथि करजोरी।
देखि तपस्या घोर अति भेला प्रकट महेश।
धाय धयल रानी सहित चरण कमल मिथिलेश।।

24

भागु-भागु भागु सखि छोडु ई नगर हे।
भूत-प्रेत संग अनला गिरिजा के वर हे।
नहि छनि बाड़ी-झाड़ी नहि छनि घर हे।
भांग ओ धथुर पर करथिन गुजर हे।
झोखरल अंग-अंग तनमे ठठर हे।
खाक लेपि अयला भोला देह मे उजर हे।
संग कोना रहथिन धिया कण्ठमे लहर हे।
सौंसे देह साप करे सहर-सहर हे।
कहथिन स्नेहलता जनि करु डर हे।
विधना के लीखल सभसँ ऊपर हे।

25

किछिओ ने लेल विचारी, हिमाचल
नारद बाभन से कैलनि इयारी, वर खोजि अनलनि भिखारी हिमाचल
ओहि भंगिया के बाड़ी ने झाड़ी, पर्वत के ऊपर घराड़ी हिमाचल
भांग-धथुर के करथिन पुछारी, बसहा बड़द असवारी हिमाचल
ककरासँ बजथिन गौरी बेचारी, नहि शिव के बाप-महतारी हिमाचल
कपिलदेव गाओल नचारी, मोर धिया रहती कुमारी हिमाचल।

26

बौरहवा के बरिया तमे सब बात अनोखी दैया
अपने दुलहा बूढ़ बड़द पर भांग-धथुर खेबैया
संगी साथी नंगटे धायव बात न केओ सुनबैया
भूत-प्रेत सभ चलल बराती भूते चँवर डोलैया
भूते नाचय ढोल बजाबय भूते-प्रेत गबैया
क्करो मूँह सातसँ ऊपर आँखि न एक तकैया
लंगड़े-लुल्ले-लोथ अनेको कुबड़ा के पुछबैया
ककरो मुँह श्वान-गीदर सन केओ मुखहीन देखैया
केओ-केओ लुल्हा कूदै-भागय जेना बेंग भदवैया
गज सन पेट सीक सन गर्दनि घेघक तौल अढ़ैया
स्नेहलता धनि शंकर के गण विविध वेष बनबैया।

27

कोना परिछब गे दाइ।
वर के तरफ हमरा तकलो ने जाइ।।
बिच्छू के घौड़छा मउरिया सजाय।
बिढ़नी के घोड़छा लवड.ी बनाय।।
अयला पहिरि मुण्डमाला जमाय।
गर्दनिमे साप रहि- रहि फुफुआय।।
ओढ़ना बघम्बर विभूति रमाय।
एँड़ीमे देखियनि फाटल बेमाय।।
स्ंगमे भूत-प्रेत अनलनि बजाय।
फरके परान सुखय लगमे के जाय।।
नरद कतऽ आइ रहला नुकाय।
बभना के मारितौं चानी तकाय।।
इहो थिका महादेव त्रिभुवन राय।
चलु कपिलदेव झट परिछू जमाय।।

28

हम नहि जानल गे माई।
एहन बूढ़ वर नारद लौता झूठे कैल बड़ाई।।
तीन लोक के ठाकुर कहि-कहि हमरा देल पतियाई।
चारिम पनमे भिखमंगा के आनल बैल चढ़ाई।।
एक दिस गौड़ी के मुँह तकइ छी, एक दिस बूढ़ जमाई।
मन होइयै जे एही संतापे, मरि जइतौं किछु खाई।।
नहि, नहि, हम नहि गौरी बिआहब, जगमे होयत हँसाइ।
जानि-बूझि कऽ एहन धियाके कोना कऽ देब भसाई।।
स्नेहलता भन सुनु हे मैया शंभु के लाउ चुमाई।
करम बाँटि की हुनकर लेबनि, पुरुबक छनि कमाई।।

29

सखि देखिते बनैत।
जेहन देखल हम शिव के अबैत।।
मुँहमे न दाँत एको फकफक हँसैत।
अचरज देखल सिर गंगा बहैत।।
तीन गोट आँखि देखल टकटक तकैत।

गरदनिमे लटकल विषधर-करैत।।
बूढ़े बड़द एक दुब्बर टगैत।
तेहि पर चढ़ल बूढ़ भांग छकैत।।
देखल कपिलदेव बड़ के अबैत।
नांगड़-लुल्ह सब भटभट खसैत।।

30

जनि पूछू हाल चाल।
तोहरो जमाय मैना परम कंगाल।।
अपना जे पाँच मुख बड़ विकराल।
कातिक के छओ मुख खाइ लय बेहाल।।
गौरीजी के कहु हम कओन हवाल।
गणपति के सौंसे देहमे पेटे विशाल।।
एकेटा मुँह से तऽ होइ अछि काल।
जै घर तेरह मुँह तकर कोन हाल।।
हमरा देखैत दौड़ल भूत-वैताल।
पेट दिस ताकि-ताकि बजबय ताल।।
सुनि-सुनि मैना पीटथि कपार।
बजर पड़ौ नारद पर देलक भौजाल।।
जनि राखू मैना मन मे मलाल।
कहे कपिलेश भोलादानी दयाल।।

31

चन्द्र बदन मृग लोचन भवानी के पूजब हे-2
भवानी के पूजब भवानी के पूजब भवानी के हे-2
चन्द्र बदन मृग लोचन भवानी के पूजब हे-2
मैया के द्वारे ओरहूल पिपर ... भवानी के पूजब हे-2
चन्द्र बदन मृग लोचन भवानी के पूजब हे-2
मलिया के द्वारे लाली लाली फूलवा
तहि पर भौंड़ा मररायें भवानी के पूजब हे-2
चन्द्र बदन मृग लोचन भवानी के पूजब हे-2
मलिया के बाग में ओरहूल पिपर भवानी के पूजब हे-2
मलिया के बाग में लाली लाली फूलवा
तहि पर सुग्गा मररायें भवानी के पूजब हे-2

मईया के द्वारे सिंगहबा गरजे
सेहो देखि जिया घबराये भवानी के पूजब हे-2
चन्द्र बदन मृग लोचन भवानी के पूजब हे-2
अंचरा पसारी मैया तोसे वर मांगब
शेरा नुका ल भवानी के पूजब हे-2
चन्द्र बदन मृग लोचन भवानी के पूजब हे-2
स्नेहलता लतरायब भवानी के पूजब हे-2

रास

32

गिरि कैलास के स्वर्ण शिखर पर रास रचल त्रिपुरारि।।
तैंतिस कोटि देव सब बैसल, धन-धन होथि निहारि।
पुरुष भेष केर मध्य सुशोभित गद्गद् शैलकुमारि।।
विष्णु मृदंग रमापति गाइनि ताल देथि मुखचारि।
सुरपति-शारद वीण बजाबथि राग समय अनुहारि।।
सौंथ फाड़ि मुखचन्द्र सजाओल नयन कयल कजरारि।
अंग-अंग सजि-साजि सम्हारल शिव भेला सुन्दर नारि।।
सुरसरि धार समिटि घर गेली रूप धयल पनिहारि।
स्नेहलता ताण्डव शिव नाचथि तन-मन विरति बिसारि।।

33

पराती

जागु रे मन, शिव छथि गौरीक संग।
भाल विशाल बाल शशि शोभित तेहि बैसल सिर गंग।
गौरीक कोर मे गणपति किलकथि कातिक भरल उमंग।
स्नेहलता अनुपम छवि निरखथि, भेल सकल भय भंग।

34

अपने के नाम भोला औढरढरनमा से
दुःख मोरा दूर करु, पूर करु मनमा
पूतक उछाह छल दशरथ घरबा
देश ओ विदेशवा मे पड़ल हकरबा

मन मोरा रहि गेल कौशल्या अंगनमा से।।0।।
बचबा के छीनि हम लेल निज कोड़बा
चितबा चोराय लेल राम चितचोरबा
हमरा लगाय देल साँचे कोनो टोनमा से।।0।।
पूर्ण ब्रह्म हेतु चाही आदिशक्ति बेटिया
दुहुक मिलन देखि जूड़ हैत छतिया
करब जमाय ओहे हमरो परनमा से।।0।।
देह कँ भुलाय भेला जनक विदेहिया
हरियर- हरियर लतिका सनेहिया
रामजी जमाय होथि दियऽ वरदनमा से।।0।।

35

कहल महादेव हे जनक करु पुत्रेष्ठी यज्ञ
आदि शक्ति सर्वेश्वरी आदि पुरुष सर्वज्ञ

अब जाय करू हे जनक यज्ञ, ओहिसँ सर्वेश्वरि अवतरती।
अपनेकँ कन्या बनि रहती, असली माता हुनकर धरती।।
ई धुनष हमर कारण बनते, मिथिलामे दुहुक मिलैबामे।
थिक निकट भव्य ई समय नृपति, करती बिलम्ब नहि अयबामे।।

एतबा कहि औढरढरन भेला अन्तर्धान
एम्हर, यज्ञ के जनकजी लगला करय विधान

पाबि शिवक वरदान मगन मन, सकल प्रबन्ध करय लगला।
विप्र-सचिव-गुरु-बन्धु बजाओल, घटना सलक कहय लगला।।
शतानन्दजी कहल जनक सौं, राजन् एतबा काम करू।
ऋषि-मुनिगण अबिलम्ब बजाबू, यज्ञ भूमि के नाम धरू।।
सभटा सभ सल्तनत करायब, यज्ञ और अभ्यागत के।
भाइ कहल हम भार गछै छी, सभक सुपास-सुस्वागत के।।

36

पावक गंगा लछुमना पावन निर्मल नीर
यरूभूमि निर्धारिते सकल सिद्धिप्रद तीर
बनल वेदिका यज्ञ के जानि समय अति अल्प
जनक-सुनयना व्रत-व्रती कयलि सुता संकल्प

सित वैशाखक पंचमी ग्रह-नक्षत्र अनुकूल
कयल यज्ञ आरंभ जत सुर बरसाओल फूल
बरस बीति सित पंचमी आयल माधव मास
देखि विफलता यज्ञमे भेला जनक उदास
जगतविदित सभी माय के बेटी अति प्रिय होय
पुरल न निज मनकामना कहथि सुनयना रोय
पंचमीसँ पंचमी, बरिस दिन बीतल, छुछ पड़ि भेल अरमान, माइ हे।
ठकि लेल मुनि सभ, ठकि लेल नारद, झुठ भेल शिव वरदान।।
विधि विपरीत मोर, यज्ञ विफल भेल, करत मखोल जहान।।
जौं नहि राम, जमाय बनायब, हति लेब अपन परान।।
लतिकासनेह, हिया बिच मुरुझायल, विरहक ताप महान।।
देखि सुनयना के विह्वलता, शतानन्द कर जोड़ि कहल।
धरु मन धीर, यज्ञ जनि छोड़ू, सिद्धि निकट अछि आबि रहल।।
यज्ञारंभक दिनसौं, बरिस पूरि गेल आइ मुदा
यद्यपि पावन परम पंचमी, लौकिक ऋद्धि-सिद्धिप्रदा
षष्ठी स्वर्गक और सप्तमी, बैकुण्ठक थिक सिधिदायक
गेलोकक फल देत अष्टमी, धीरज धरु हे नरनायक
आदिशक्ति साकेतसँ अओती, नवमी पूर करत मनके
रानि सुनयना सुता खेलओती, रहता मगन जनक सन के

अति प्रकाशमय वेदिका अति आह्लादित धार
गिरि कानन आनन्दमय शीतल सुखद बयार
दसो दिशा लखि शकुन शुभ अछि हमरा विश्वास
नवमी तिथिमे हे नृपति अवस पुरत अभिलाष
शतानन्द के सुनि प्रिय वाणी
लगला यज्ञ करय मुनि ज्ञानी
सुनि प्रिय वचन मगन नृपरानी
सुखइत धान पड़ल जनु पानी

37

अहाँके दरस लागि रकटल मोर अँखिया हे
मोर मन के बेटी
कतऽ जाय रहली नुकाय हे मोर मन के बेटी
बटिया तकैत मोर छतिया सुखायल हे मोर।।0।।
आबि कहु एक बेर माय हे।।0।।

एहन सरस भूमि नैहरा बनाबू हे मोर।।0।।
एहि लागि मिथिला सिहाय हे।।0।।
लतिका सनेह पाबि अहाँ अइसन धिया हे।।0।।
रामजी के करब जमाय हे।।0।।

शतानन्द के स्वप्नमे शंभु देल समुझाय।
कंचन हल निर्माण कय धरती जोतू जाय।।
से जानल नृप जनकजी जोतय चलला धाय।
फारक तरसँ प्रकट भय सुता देल मुसकाय।।

38

श्रीकृष्ण पनिघट लीला

करि सोलहो सिंगार, गोपी चलल हजार
लेल गगरी सम्हारि, पनिघटवा पर।।
नन्दलाला के बजा लेब, अपना लग कऽ बैसा लेब
तब करब सजाय, पनिघटबा पर।।1।।
कोइ कहे इठलाय, लेब लग मे बैठाय
देव सड़िया पेन्हाय, पनिघटबा पर।।2।।
हुनका छल से बुलायब, आइ औरत बनायब
करब असली उपाय, पनिघटबा पर।।3।।
कृष्ण राधा के बनायब, हाथ मुरली धरायब
मोर मुकुट सजायब, पनिघटबा पर।।4।।
हरि जयता सिठिआय, जैतेन्ह महिरम बुझाय
हम सब थपड़ी बजायब, पनिघटबा पर।।5।।
मिलि गोपी समुदाय, लेल गगरी उठाय
सब सोझे चली जाय, पनिघटबा पर।।6।।
लीला गाबे कपिलेश, मजा पनिघट के लेब
देखब हरि के फरेब, पनिघटबा पर।।7।।

39

जयबइ आजु सामर गोरिया हे यमुना के तीर।।
नन्द के लाला मुरलीवाला नाम जकर यदुवीर।।
छल से बजायब लग मे बैसायब करब अपन तदवीर।।
फाड़ि मांग, टीका पहिरायब एक चीर।।

सब गोपी मिलि रास मचायब होयता श्याम अधीर।।
गगरी भरि-भरि चलि-चलि देबनि तनिक न तकबनि फीर।।
कपिलदेव होशियारी राखब बुड़बक जाति अहीर।।
सुनु आगू के बयान लीला सरस महान
हरि परम सुजान परिघटबा पर
पुनि गेली यमुना तीर गोपी भेली अधीर
आजु नहि यदुवीर पनिघटबा पर।।1।।
देखि गोपी समुदाय हरि रहल नुकाय
एक सोचल उपाय पनिघटबा पर।।2।।
भेष नारि के बनाय मिलि गेल यदुराय
नहि पड़ल बुझाय पनिघटबा पर।।3।।

40

नारी रूप मे कृष्ण वचन

कहे सुनु सखी मोर छीपल हैत हितचोर।
सुनु हमरो निहोर पनिघटबा पर।।
सब चीर-चोली लाउ सब जल धसि जाउ
हरि के छल से बजाउ पनि0।।
देखि ककरो ने साथ लग औता यदुनाथ
हम धय लेब हाथ पनि0।।
सखि हँसत भभाय थिक असल उपाय
देखब जाय न पराय पनि0।।
सब सुनि तदवीर सखि देल चोली-चीर
धसि गेल सब नीर पनि0।।
चीर-चोली के समेटि लेल अंग मे लपेटि
कहथि करैत रहु भेट पनि0।।
हरि देल पिहकार गेला कदम के डार
गोपी धुनथि कपार पनि0।।
पूछे यशोदा के लाल कहु अपन हवाल
हमरा बूझल गमार पनि0।।
गोपी कहथि कर जोड़ि सुनु हमर निहोर
नहि लेल किछु तोर पनि0।।
सुनु लाला बुधियार दिअऽ सड़िया हमार

गुण मानब तोहार पनि0।।
कहे कुमर कन्हाइ सुनु गोपी समुदाइ
इहे हमर कमाइ पनि0।।
सब गोपी हरजाइ कहियो खेबा न चुकाइ
आइ एके बेर पार पनिघटवा पर।।
सुनु कुमर कन्हाइ खेबा केहन चुकाइ
कोन तोहरो कमाइ पनि0।।
बाजी बात न सम्हारि करी उल्टे अराड़ि
हम करी घटवारि पनि0।।
गेली गोपी खिसिआय कहब यशोदा के जाय
करब तोहरो उपाय पनि0।।
सुनु गोपी हमर बात साड़ी भेटत परात
तावत भीजु सारीरात पनि0।।
आउ जलसँ बहार मांगु हथबा पसार
करु सेवा के करार पनि0।।
गोपी जनि कदराउ छोड़ु लाज न लजाउ
तखन साड़ी लेने जाउ पनि0।।
गोपी करथि विचार छौड़ा परम छिनार
आइ कयलक उघार पनि0।।
सभ गोपी हिया हारि भेली जल से बहार
कान्हा देल हहार पनि0।।
गोपी सकल लजाय गेली लाजे कठुआय
एको चलल न उपाय पनि0।।
जब देखल यदुवीर गोपी परम अधीर
छोड़ि देल चोली-चीर पनि0।।
सब प्रमुदित भेल अपन चीर चीन्हि लेल
लीला गायब कपिलदेव पनि0।।
कहे हरि घर जाउ गोपी सब दिन आउ
खेबा एहिना चुकाउ पनिघटवा पर।।

41

राम सीता वंदना

लालसा

यही लालसा एक दिल में है बांकी।
न भूलें कभी राम सीता की झांकी।।
रतन मणि मय सिंहासन पर, बिछा हो नव कमल सुन्दर
विराजित हों प्रिया प्रीतम, दिले गलबाहिं हिल मिल के
मधुर मुसुकान हो मुख में, नशे में यों लड़े चितवन
न सुध बुधि हो किन्ही को भी, कहाँ तन है कहाँ है मन
बहे धार निर्मल आनन्द सुधा की।
न भूलें कभी राम सीता की झांकी।।
त्रिलोकी नाथ रघुनन्दन, हृदय नन्दन कौशिल्या के।
धरोहर शम्भु गौरी के, पतित पावन अहिल्या के।।
बियहुती मौड़ हो शिर पर, नयन कारे ओ कजरारे।
यही रघुनाथ सीतावर, हदिन बैठे धनुष धारे।।
रहे रूप आँखों में मोहन छटा की।
न भूलें कभी रात सीता की झांकी।।
करोड़ों चन्द्र की छवि भी, जिन्हें नित पद-कमल ताके।
वही सीता जनक तनया, विराजे वाम में आके।।
अरूण ओ श्याम रंग मिलकर, हरितिमा जोति छहरावे।
रहिक-जन-मन चकोरों को, अमिय शशि बनके बरसावे।।
चुरा ले ये झांकी, सुप्रीतम प्रिया की।
न भूलें कभी राम सीता की झांकी।।
अहो सरकार पिय प्यारी, दया इतनी बना रखियो।
कि अन्तिम काल मैं देखूँ, ओ सन्मुख हो मुझे लखियो।।
रहे आँखें तुम्हीं ऊपर , ओ मन को तू चुरा लेना।
जो निकले प्रोण इन तन से, तू झट उंगली धरा लेना।।
कहें ‘‘स्नहे-लतिका‘‘ ये मंगनी सदाकी।
न भूलें कभी राम सीता की झाँकी।

42

त्रेता मे साकेत मे, एक दिन भेल विचार।
मर्त्यलोक मे हे प्रिये, लेब मनुज अवतार।।
भूतल पर घोर अनीति बढ़ल, मिटि रहल धर्म मर्याद सकल।
सुर सन्त धेनु द्विज व्याकुल छथि, भय रहल जीव बर्बाद सकल।।
इर्ष्या द्वेष विरोध परस्पर, दुर्दिन नाचथि राति दिना।
विकल प्राण जन-जन्तु कराहथि, त्राहि-त्राहि सुख शान्ति बिना।।
भेल अधर्मक राज धरातल, पर त्यागथि ग्यान-ध्यानी।
व्यथित भक्त के आर्त्तनाद सुनि, मन होइछ हमहूँ कानी।।
यावत् नहि अवतार लेब हम, चैन कहाँ कनिको मन मे।
पड़ि गेल हृदय दराड़ि देखि, दुःख कल्प बितै अछि क्षण-क्षणमे।।
चलु ककरो सन्तान रूपमे, मानव बनि, निश्चय निर्भय।
करत क्रुद्ध भय युद्ध मरत सभ, अन्त काल पाओत परिचय।।
हम दशरथनन्दन बनि आयब, जनकनन्दिनी बनब अहाँ।
मिथिला बीच विवाहक लाथे, संग हैब संग चलब जहाँ।।
करब सहाय हुनक जे जगमे, धरम धुजा धयने रहता।
एहि विधि नव संसार बसायब, लतरायब पुनि स्नेहलता।।
उद्भव-स्थितिकारिणी अहिंक हाथ संहार।
बिना शक्ति नहि भय सकत सफल हमर अवतार।।
मनु शतरूपा भेला दशरथ-कौशल्या अवध मे जाय
भेलनि बेटा रामचन्द्रजी साकेतहुसँ जखने आय
जनम उछाह मनाबथि राजा घर-घर बाजय अवध बधाय
लुटबथि सब सम्पत्ति, वसन-मणि-मुक्ता संगे दुधगरि गाय

43

मैथिली वन्दना

एहन पतित केर अहीं पति राखब हे महारानी सिया।
अहिँक चरणमा केर आस।।1।।
धरम करम हम किछिओ ने कैलहुँ हे महारानी सीया।
सभ दिन सोहयल सुख-विलास।।2।।
मिथिला नगरिया बिच भेल मोर जनमुआँ हे महारानी सीया।
एकरे भरोसा ओ विसवास।।3।।
विधि हरि हर सुन नर किन्नर हे महारानी सीया।

एही ठाम मेटलनि हियक पियास।।4।।
अहींपर स्नेहलता आस छथि लगौने हे महारानी सीया।
दिय सिय पगमे निवास।।5।।

44

पराती

किशोरी जी, कहिया देखब भरि नैन।
दिन भरि काज कपट मे बिताओल राति बिताओल शैन।
मकड़ीक जाल फिकिर के मारल राति दिनन नहि चैन।
सुनिअ जे अपनेक संग रहै छथि निशदिन राजिवनैन।
लतिका सनेह बहुत दिन बीतल बटिया जोहैत दिन-रैन।

45

विनय

अपना किशोरी जी के टहल बजेबइ हे हम मिथिले मे रहबइ
घरही मे हमरा चारू धाम।।
साग-पात खोंटि-खोंटि दिवस गमेबइ हे हम0
हमरा ने चाही सुख-विश्राम।।
आगू-आगू झारि-झारि फुलबा बिछेबइ हे हम0
एहि बाटे चलथिन सीताराम।।
जाहि विधि रखथिन सीया ताही विधि रहबइ हे हम0।।
सिया-सिया रटबइ आठो याम।।
सिया के चरण-रज सरबस बनेबइ हे हम0
एतबे सनेहिया मन के काम।।

46

राम वन्दना

अपन कमलपद कहिया देखायब हे रघुनन्दन स्वामी।
आब ने सहल दुःख जाय।।
परम दयालु अहाँ गरीबनेवाजू हे रघुनन्दन स्वामी।
किए देल हमरा बिसराय।।
लख चौरासी हम घुमि फिरि अयलहुँ हे रघुनन्दन स्वामी।
एखनहुँ चरणमा लिअऽ लगाय।।
जाहि विधि राखू अहाँ अपन दुअरिया हे रघुनन्दन स्वामी।
केनो ने सनेहिया के उपाय।।

47

रामसिया के मधुर मिलन में फुलवारी मुसकाये
कोयलिया कजरी गाये कोयलिया कजरीगाये-2
लोरह रहे थे फूल रामजी गिरजा पूजन चली जानकी-2
पायल की झनकार से उनके रोम रोम हर्षाये-2
कोयलिया कजरी गाये कोयलिया कजरी गाये-2
हाथ रुके न घबराएं चली बिहसने दसो दिशाएं-2
फरक उठे सब अंग राम के सुंदर सगुन जनाये
कोयलिया कजरी गाये कोयलिया कजरी गाये-2
पहली झूला लगी बाग में लगि बिहसने प्रेम राग में-2
झूल रहे थे दोनों के दिल स्नेहलता लतराये-2
कोयलिया कजरी गाये कोयलिया कजरी गाये-2

48

यहीं पर हम किशोरी जी अपन सरभाव धैने छी
जेना राखि जहां राखि सकल स्वीकार कैने छी
जखन अपनेक नैइहर में जनम छिक हे हमर बहिनी-2
जनम छिक हे हमर बहिनी-2
अहां पर अछि हमर दाबी-2
तेकर अधिकार पैयने छी-2
पहिरले मौड़ मंगटिका वहां पर लाल चंदन

जनक आंगन में छटा गुलजार कैयने छी
मिलन के प्रेम बंधन में लपेटल स्नेहलतिका से
रहू सनमुख अहां अइठां अहां इकरार कैने छी-2

49

चैन कहाँ चित प्रीत कियेते।।0।।
हटत सटत संतोष न आबत
उठत निरंतर हूक हियेते।।चैन कहाँ।।
चुगत चकोर अनल शशि कारण
मरत न बनन न बनन जियेते।।चैन कहाँ।।
मधुप सुमन पर पुनि-पुनि धाबत
तृप्त न होत पराग पियेते।।चैन कहाँ।।
प्रीत पतंग करे दीपक सौं
जरत न बनत न बनत मरेते।।चैन कहाँ।।
'स्नेहलता' मन प्रीति असल करू
चरण कमल पर राम सियेते।।चैन कहाँ।।

दरोडी गीत

50 (हिन्दी)

ग्राम डरोडी
विदेह नगर
मिथिलांचल के मधुर गोद में
जहां सियाराम की जोड़ी
सचमुच ग्राम विदेह नगर है
जहां विदेह जनक का घर है
जनक दुलारी का नैहर है,
पुरजन प्रीत न बाड़ी जहां
रस नगरी में अगहन अवाहन
रामजी आज दुलहा बनठन
नैन जुड़ाते आकर त्रिभुवन
रहते नाना जोड़ी जहां
है न जगत में ऐसी नगरी
भरी लबालब प्रेम गगरी
नित मैथिली सुमंग सरारी
प्रीत अलौकिक थोड़ी जहां
रहते नाना जोड़ी जहां।

51 (मैथिली)

मिथिलांचल केर अमर गोदमे अछि ग्राम डरोड़ी,
जहाँ सियाराम के जोड़ी।।
सरिपहुँ ग्राम विदेहनगर छै, जहाँ विदेह जनक केर घर छै,
जनकदुलारी केर नैहर छै, पुरजन प्रीति न थोड़ी।।
एहि नगरीमे अगहन-अगहन, रामजी आबथि दुलहा बनि-ठनि,
नैन जुड़ाबऽ जूमय त्रिभुवन, करयित नाता जोड़ी।।
छै ने जगतमे एहन नगरी, भरल लबालब प्रेमक गगरी,
आइ मैथिली उमगि-उमगि कऽ बान्हल प्रीतिक डोरी।।
एहिठाँ तन मन धन ममता छै, लतरल एत्तहि स्नेहलता छै,
सबकेँ सब दिन यैह पता छै, सीताराम कहू री।।

52

हम डरोड़ी लागय धाम गे बहिना
जहाँ सीताराम के विवाह।।
मखशाला केर तीन कोण पर, मठ यूनियन स्कूल गे2
ताहि बीच पोखरी ललाम गे बहिना।।जहाँ0।।
कलाकार ओ कवि-कीर्त्तनि´ा, वक्ता भक्त समाज गे2
सभहि बसत एहिठाम गे बहिना।।जहाँ0।।
दक्षिण करुआ उतर कलौंजर, पूरब परना पावन गे2
पछिम मदन विश्राम गे बहिना।।जहाँ।।
मिथिला केर पावन धरती पर उपजलि सीता बहिनी2
लतिका सनेहियाके गाम गे बहिना।।जहाँ0।।

एक गीत मे स्नेहलता अपने गाँव की गरिमा का वर्णन इस रूप में करते हैं-

53

जगत मे हमरा सन के आन।
हम सभ छी मिथिला केर वासी, मिथिला हमर महान।।
जहाँ के धरती सीता देलनि, नारि देल पाषाण।
मिथिला छाड़ि कहाँ के जगमे, दुलहा छथि भगवान।।
जहाँ जनकजी ज्ञान-दिवाकर, देल विश्वकेँ ज्ञान।
जहाँ के पक्षी वेद बँचे अछि, कौओ धरि विद्वान।।
जहाँ के भाषा मधुर मैथिली, सभ भाषा केर प्राण।
तेहि मिथिलाकेँ नित्य करै छथि, विधि हरि हर गुणगान।।
सिया स्वयंवर जहाँ के नामी, ग्रामिण सभ मतिमान।
स्नेहलता केर ग्राम डरोड़ी, मिथिलांचल केर शान।।जगतमे...।।

मिथिला महिमा

54

भूमंडल के अमर गोद में
मुसकाहट सुन्दर मिथिला के।
ममता भरल सरस रजकणमे
मचलाहट सुन्दर मिथिलाके
योग भोग मे सुगन उपासन
वेद नीतिमय राज सिंहासन
ज्ञान दिवाकर हमर जनकजी
सनक जगतमे आन भेलाके।
हरियर-हरियर जतय कुंज वन
हरियर-हरियर खेल सफल मन
वसथि वसन्त जतय निशिवासर
करथि प्रदर्शन पूर्ण कलाके।।
कुसुमित कानन सरिता निर्झर
सतत वेद ध्वनि गुजन मधुकर
क्षमा दया दम दान मानमय
कलकल-कलकल धुनि कमला के।
वर- कनिया सिंगार मनोहर
रूप बियहुती सभक धरोहर
स्नेहलता लतराय चरणपर
जनक-लली श्रीरामलला के।

55

मिथिला गौरव (लोकगीत)

माया के बजरिया मे सुन्दर नगरिया
सुन्दर लागेला, सुन्दर लगेगा।
मधुर मखान सन मिथिला के धरती
चाहे उपजाऊ होय चाहे होय परती
मैथिली मधुर भाषा, बड़ मीठ बोलिया।।सुन्दर0।।
मिथिला के गीत जेना कुहुके कोइलिया
दुल्हा के मौड़ सन आम के मंजरिया।।सुन्दर0।।

मिथिला हमर थिक ममता के नगरी
मिथिला निबासी छथि सुयश के गगरी
मिथिला के आगू जग बनल भिखरिया।।सुन्दर0।।
मिथिला में लतरल लतिका सनेहिया
मिथिला जनम भेल धन्य भेल देहिया
धरती से निकसलि सियासुकुमरिया।।सुन्दर0।।

56

मिथिला महात्म्य

मिथिला नगरीया हमर प्राण के अधार रे
मिथिला नगरीया तीनू लोक के सींगार रे
मिथिला नगरीया पर जीवन बलिहार रे
मिथिला नगरीया के कोटी नमस्कार रे
मिथिला के महिमा गावथि देव सरदार रे
मिथिला के वासी सन्त रसिक उदार रे
मिथिला न छन भर छोड़थि दुल्हासरकार रे
प्रेमनिधि मिथिला के वाजु जयजय कार रे

57

आहे मिथिला के धिया सीया जगत जननि भेली
धरनी वनल सुख धाम हे।।0।।
धन धन मिथिला के भुमि घर घर ऋषि मुनि
दुल्हा जगद्पति राम है।।0।।
कमला वहथि जतय जीव छरहथ ततय
कोशी गंगा अणक आ वलान हे
हिमगिरि के घर गौड़ी के नैहर
शिवजी जहाँ के मेहमान हे
यज्ञसँ नपल एकर कण कण मोती रचल
मगर विदेह जन्मस्थान हे
अतुलित महाबलशाली विक्रममहा
भगीना जहाँ के हनुमान हे।।0।।

58

हमरो दरोडी में आवें गे बहिना जहां सियाराम के विवाह
अहां कोनो अयलियै मिथिला नगरिया मे-2
सिया जी गिरजा पूजे जाथ तखने भेंटला दू कुमार
सिया जी सियाजी त रखि लेलखिन आंख के पुतलिया में
अहां कोनो अयलियै मिथिला नगरिया में-2
देलन धनुषा के तोड़ि, लेलन सियाजी से नाता जोड़ी
अहां त‘ बंधाये गेलिअय प्रेम के बंधनमा में
अहां त‘ बंधाये गेलिअय धनुषा के डोरिया में
अहां कोना अयलियै मिथिला नगरिया में

59

मिथिला नगरिया क‘ चिकनी डगरिया
आहि पर बिहरे लक्ष्मण राम,
आहे ताहि पर बिहरे लक्ष्मण राम
कौने रंग छथिन लक्ष्मण छयेलवा
कौने वरण छथिन राम
आहे गोरे वरण छथिन लक्ष्मण छयेलवा
आहे श्यामे वरण छथिन राम
चलू चलू आहे बहिना जनक अंगनमा
छोड़ि दिअउ घरबा के काम-2
आहे दर्शन लागि ललचे लोभी रे नयनमा
शोभय छथिन सुख धाम।

60

अपने घर के बात थिकए, कहबैय केकरा,
के सुनतै, सब लागै बहिर अकान सन।
जेकरा काने नैय
आय लगइह वैदेही क‘ नईहर बड़ झुझूआन सन
प्रसव वेदना बस मिथिला के धरती टा सहने छथिन
जनक विदेह सिया सन बेटी, शक्ति रूप पाने छथि।
एतैय छला उगना विद्यापति
शंकर मंडन वो वाचसपति

सब घर लागै सुनसान सन।
सब घर लागै सुनसान सन।
आय लगइयैह वैदेही के नईहर बर झुझुआन सन।

61

सोहर

राम जन्म

कानल शिशु नवजात, श्रवण सुनि, जुड़ भेल हे।
ललना, कौशल्या के पुरल मनोरथ, राम जनम लेल रे।।
दौड़ल नगरक नारि, नउनिया प्रथम गेल रे।
ललना, रानी देल गेल मणिहार, नउनिया बिहसि लेल रे।।
बचबा देखइते झुकि खसल, नउनिया बेहोश भेल रे।
ललना, कोरबा उठाय मुँह देखि, कौशल्या से छीनि लेल रे।।
युग-युग जीबय एहो बालक, जगत आनन्द भेल रे।
ललना, लतिकासनेह गाबय सोहर, आनन्द मगन भेल रे।।

62

कानल शिशु नवजात, श्रवण सुनि, जुड़ भेल हे।
ललना, कौशल्या के पुरल मनोरथ, राम जनम लेल रे।।
दौड़ल नगरक नारि, नउनिया प्रथम गेल रे।
ललना, रानी देल गेल मणिहार, नउनिया बिहसि लेल रे।।
बचबा देखइते झुकि खसल, नउनिया बेहोश भेल रे।
ललना, कोरबा उठाय मुँह देखि, कौशल्या से छीनि लेल रे।।
युग-युग जीबय एहो बालक, जगत आनन्द भेल रे।
ललना, लतिकासनेह गाबय सोहर, आनन्द मगन भेल रे।।

63

जखन उनल राजा दशरथ राम जनम लेल रे।
पुरब जनम सुधि आयल जनम सुफल भेल रे।।
कखन देखब हम बालक हृदय जुड़ायत रे।
राखल रघुकुल लाज कि राज लुटायब रे।।
एहन अनुप रूप बालक कहाँ हम पायब रे।
मोरा घर अयलनि ब्रह्म कि प्राण जुड़ायब रे।
धनि-धनि अवध नरेश एहन सुत पाओल रहे।
लतिकासनेह के मनोरथ विधना पुराओल रे।।
आइ आबि गेला राम अवधपुर मे।

गायब सुर-मुनि-सन्त, नाचय नवल वसन्त
नहि बजबा के अन्त, अवधपुर मे।
सब सुर समुदाइ, गाबथि फुल बरसाइ
बाजय आनन्द बधाइ, अवधपुर मे।
भेल अवधमे शोर, राम कोशिला के कोड़
सब आनन्द विभोर, अवधपुर मे।
नृप मगन महान, घर अयला भगवान
स्नेहलतिका के प्राण, अवधपुर मे।

64

बाजय अवधमे बधैया हे, दशरथजी के द्वार।।
आयल हमर रघुरइया हे, दशरथ।।0।।
अवध निवासी सभ आनन्द मगनमा
सोहर गबइत नाचय देहरी-अँगनमा
आनन्दविभोर भेली मैया हे, दशरथ।।0।।
राम के जनम सुनि उनटल नगरिया
केकरो ने चीन्है केओ दशरथ दुअरिया
खोलू-खोलू सोइरी केवड़िया हे, दशरथ।।0।।
राजा लुटाबथि अनधन सोनमा
रानी लुटाबथि दूनू हाथक कँगनमा
भरि गेल निछावर अँगनमा हे, दशरथ।।0।।
चलु-चलु सखि आइ दशरथ दुअरिया
बचबाके देखब जुड़ायब नजरिया
लतिकासनेह पमरिया हे, दशरथ।।0।।

65

प्रगटल राम धनुधरिया हो रामा, अवध नगरिया
धन धन धन एहो नवमी के तिथिया
धन धन चैत महिनमा हो रामा।
राजा दशरथ जी के पुरल मनोरथ
धन भेल कोशिला के कोखिया हो रामा।
गाम-नगर लोक आनन्द मगन भेल
नचय-गाबय प्रेम मगनमा हो रामा।

साजि-साजि अवधक महल अटरिया
बाजय लागल विविध बजनमा हो रामा।
लतिकासनेह के रकटल अँखिया
जुड़ भेल प्रेमी के नयनमा हो रामा।
अवध मे बाजय बजनमा हो रामा
चैत शुभ दिनमा।
रामजी के भेलनि जनमुआँ हो रामा
मंगल शुभ दिनमा।
आउ! आउ! आइ-माइ, पर हे पड़ोसिन
चलु देखी कौशल्या अंगनमा हो रामा।
केओ जे मांगे अन धन सोनमा
केओ मांगे हाथ के कंगनमा हो रामा।
नाउनि नाचय, पमरिया नाचय
सब नाचय आनन्द मगनमा हो रामा।।
मातु कौशल्या बलि-बलि जाइ छथि
पलना झुलाबथि ललनमा हो रामा।
लतिकासनेह सखि भाग्य सराहथि
देखि छवि आनन्द मगनमा हो रामा।

66

गोर लागु पैर पड़ु नगरक आइ-माइ
बचबा के दिअउ आशिर्वाद हे।
बूढ़ बयसमे एहन सुत पाओल
कोखिया के छल मोर भाग हे।
आइ सफल भेल हमरो मनोरथ
आइ भेल अवध सनाथ हे।
एहि पुत लागि हम जप-तप कयलहुँ
पूर्व जनम भेल याद हे।
लतिकासनेह बाबू के नजरि न लागय
एहो छथि त्रिभुवन नाथ हे।

67

साँचे आइ हम तोर रिनि॑ा हे, सुनु मोर दगरिनि॑ा।
पुरुब जनम केर एहो छल मँगनी
एहि रूप लागि भेल छल भिखमँगनी
पैर आइ तोहर सगुनिया हे सुनु0
हम शतरूपा, पति मनुजी के भेषबा
दुनू तप कैल एहो बेटा के उदेसबा
देने छला हमरो वचनिया हे सुनु0
प्रथम लगाय दिअऽ अँखिया मे कजरा
केओ ने लगाबय आबि बबुआ के नजरा
टोनमा न मारे बैरिनिया हे सुनु0
लतिकासनेह पुछू जुनि बतिया
काटि देल कोमल पुरैनिया हे सुनु0

68
हँसि हँसि बाजय डगरिनिया हो रामा, सुनु मलिकिनिया।
एहन अनूप रूप कहियो ने देखल
देखिते लागत अधनिनिया हो रामा।
नील वरण तन रूप चतुर्भुज
तकलो ने जाय चितवनिया हो रामा।
पीत वसन अंग-अंग अलंकृत
क्रीट मुकुट करघनिया हो रामा।
वदन छुबैत मोरा सुधि-बुधि बिसरल
कोना काटु कोमल पुरैनिया हो रामा।
लतिकासनेह मोरा प्रथम दरस भेल
तोहे मलिकीनी मोरा रिनिया हो रामा।

69
कर जोड़ि कोशिला कहल हे जगतपति
छाड़ि दिअऽ आब एहो रूप, माइ हे।
जनमल शिशु बनि बिलखि कऽ कानू
एहो रूप परम अनूप, माइ हे।

माइके अरज सुनि प्रभु भेला बालक
कानल ब्रह्म सम पूत, माइ हे।
लतिकासनेह शिव टोनमा लगाओल
कय देल बचबा के चूप, माइ हे।
बाजा बाजय बधैया हमर अँगना।।
राजा दशरथजी सर्वस लुटाबथि,
रानी लुटाबथि हाथ कंगना।।
केकय लुटाबथि अन धन सोनमा,
सुमित्रा लुटाबथि सकल गहना।।
फूआ-बहिन-चाची बाँटथि निछावर,
याचक के पुरल मनक कामना।।
लतिका सनेह घर किछुओ ने राखल,
हजमा नेहाल भेल नाचय बभना।।

70

गेल हकार जनकजी अयला हुनकर गतियो कहल न जाय
रामजी के मुख चूमि विकल विदेह, बचबा मुसकाय
विधि! बेटी होइत हमरा ई हमरे जमाय
तत्व रूपसँ रामकेँ जब देखल मिथिलेश
ज्ञान-योग-बल दृष्टिसँ बूझल छथि सर्वेश
यावत नहि सर्वेश्वरी राखब सुता बनाय
तावत नहि श्रीरामजी हैता हमर जमाय
हृदय बछलता राम प्रति बनल नयनमे नीर
मन चंचल चित चैन बिनु रहि-रहि पुलक शरीर।
विदा कराय जनक घर अयला, कयल जखन सभ जिज्ञासा।
सभी बजाय सुनाओल घटना, और कहल निज अभिलाषा।।
सुनि सभ कथा सभासद हर्षित, शतानन्दजी कहि उठला।
राजन विप्र बजाय पठाबू, ऋषि-मुनि सभी आबथि मिथिला।।
ज्ञानदृष्टि, तपबल सँ कहता, महाशक्ति केर भेद पता।
जेहि विधि अओती एहि मिथिलामे, अओर कहओती जनकसुता।।
जनक बजाहटि सुनि सभी अयला, ऋषि-मुनिगण ज्ञानी-ध्यानी।
कय सेवा सत्कार पूजि पद, कहल मनोरथ नृपरानी।।
सुनि-सुनि सगुन विचारि सभी कह कुम्भज हर्षाय
पुरत मनोरथ हे नृपति जौं शिव होथि सहाय

करु तप कानन जाय अब रानी सहित महीप
महाशक्ति अवतार के आयल समय समीप
ई कहि ऋषि-मुनिगण सकल गेला निज-निज वास
कयल तपस्या शम्भु हित जनक मानि विश्वास

71

सीता जन्म

जखन जनक हर धयलनि वरद टोकारल रे
ललना, महिसुर सुनि महिछेदन मंत्र उचारल रे
गगन मगन सुरवृन्द सुमन बरसाओल रे
विधि-हरि-हर सभ वेद सुमंगल गाओल रे
उठल सघन घनघोर गगन घहरायल रे
बिजुरी कड़क सुनि कान नयन चोन्हरायल रे
हरतर देखि नव ज्योति जनक झुकि ताकल रे
लतिकासिनेह के स्नेह नयन मन थाकल रे ###

72

तेज पुंज नव बालिका सुन्दर दिव्य शरीर।
देखि सिराओर मध्यमे भेला जनक अधीर।।
देखि रूप मुर्च्छित सकल ज्योतिपुंज आकाश।
कनक वरण तन तेजमय चहुदिस दिव्य प्रकाश।।
अष्ट सखी सेवित सुखद रूपक राशि अतूल।
शची शारदा इन्दिरा अगणित तेहि मँह झूल।।
विधि हरि हर सब सिद्धि जन वेद जोड़ने हाथ।
गद्गद् हिय स्तुति करथि मिथिला भेल सनाथ।।

73

जनक सुनयना सकल सुधि बिसरल,
आनन्द मगन विभोर माइ हे।
पुलकित तन सभ अंग शिथिल भेल,
अँखियासँ झहरय नोर माइ हे।
देखि दशा विधि-हरि-हर नाचथि,
जनु शशि पाबि चकोर माइ हे।

बाग वसन्तक जनु जनमंडल,
ताहि बिच जन-मन मोर माइ हे।
बरसि सुमन सुर सेन सजाओल,
जय जय धुनि चहु ओर माइ हे।
लतिकासनेह रानी लपकि उठाओल,
पुनि-पुनि चुमि-चुमि ठोर माइ हे।

74

जखन जनक हर जोतल जगत आनन्द भेल रे।
ललना, मिथिला के धरती सोगागिन जानकी जनम लेल रे।।
हरषल दशो दिकपाल सुयश-सुख सरसल रे।
ललना, जय जय होय चहुओर सुनयना मन तरसल रे।।
बहि गेल सरस समीर गगन घहरायल रे।
ललना, चमकल परम प्रकाश नयन चोहन्हरायल रे।।
रानी लेल छतिया लजगाय हमर बेटी सुन्दर रे।
ललना, लतिकासनेह गाबय मंगल राखु हिय अन्दर रे।।

75

चहु दिस जय-जयकार गूजल धरती गगन बिच
लेल शक्ति अवतार बाजन बजाय विविध विधि
गाबथि मंगल गीत नगरनारि, सुरवृन्दवधू
उत्सव परम पुनीत करथि निछावर वसन मणि
उमड़थि जनसमुदाय रहि-रहि दर्शन हेतु सभ
रानी लेथि नुकाय, नजरि न लागय दाइके।।
बचिया के कोरा लेने नाचे गाबे रनिया
आइ सखि पूर भेल शिवक वचनिया।।0।।
छल न भेरास जिया धिया एहो भेटती
स्कल निराशा दुःख-शोक मोरा मेटती
विधना सहाय भेल पुरल लगनिया ।।0।।
जनक निहारय मुँह गद्गद् छतिया
झहरय नोर मुँह आबय नहि बतिया
रामजी जमाय हेता धिया हेती कनिया।।0।।

केओ नहि जानय जग विधिक विधान की
अवधमे राम भेला मिथिलामे जानकी
मिथिला-अवध यश गाबय सारी दुनिया ।।0।।
बेटी ओ जमाय देखि रहब मगनमा
के के नहि अओता आब हमरा अंगनमा
लतिका सनेह मे सनेह के सुमनिया ।।0।।

76

सीता महिमा

संतशिरोमणि सदा सरलचित सीताराम उपासी
रामचन्द्र शुभ नाम रामप्रिय श्रद्धाभक्ति हुलासी
मठाधीश गरिमा गुण गौरव गाहर ग्राम निवासी
रामचरितमानस के मधुकर हरिपद प्रीति पियासी
भाव सुमनमय छोट पुस्तिका भक्त समाजक दर्पण
स्नेहलता लतराय चरण पर सादर कयल समर्पण ###

77

एहन पतित केर अहीं पति राखब हे महारानी सिया।
अहिँक चरणमा केर आस।।1।।
धरम करम हम किछिओ ने कैलहुँ हे महारानी सीया।
सभ दिन सोहयल सुख-विलास।।2।।
मिथिला नगरिया बिच भेल मोर जनमुआँ हे महारानी सीया।
एकरे भरोसा ओ विसवास।।3।।
विधि हरि हर सुन नर किन्नर हे महारानी सीया।
एही ठाम मेटलनि हियक पियास।।4।।
अहींपर स्नेहलता आस छथि लगौने हे महारानी सीया।
दिय सिय पगमे निवास।।5।।

ब्याह के गीत

78

घीढारी

घीढारी करथि नर नारी
सुमंगल के फूल बरसे
पुरजन परिजन कोउ बेढावे
नारि सोहागिन मंगल गावे
रोपल बांस विचारि, सुमंगल के फूल बरसे....
आनन्द मंगल सगुन सब नीचे
पुरहित धेल पोथी बांचे
आनन्द मगन नर नारी, सुमंगल के फूल बरसे.....
माली हजाम के किस्मत जागल
याचक वृन्द निछल जागल
मंगलनाचथि पौनी पसारी,सुमंगल के फूल बरसे....
बाजय विविध ढोल शहनाई
स्नेहलता उर आनन्द गाई
नाचे फुआ महतारी, सुमंगल के फूल बरसे.....।

79

सोहाग मथझप्पी

मोरा अंगना के जागल भाग,
समधी महान अयला।
आज दुलरी के पड़त सोहाग
समधीमहान अयला।
वर दुलहिन मण्डप पर राजे
बैसल माथ झुकौने लाजे
उमड़े हिया में अनुराग
समधी महान अयला।
वर दुलहिन के माथ उघारल
समधी माथ पुतौहु के झांपल
अन्तर के प्रेमक चिराग,
समधी महान अयला।
हीरा मोती देल निछावर

दुलहिन धयलन निज करतल पर
उमगल हृदय में पराग
समधी महान अयला।
स्नेहलता मथझप्पी गाओल
जन परिजन के हिय उमगाओल
समधी पहिरल पाग
समधी महान अयला।

80

नहछू-1

सोना के लहरनी नेने नाचे नऊनियाँ
हम नहछू करबई ना।।
हमरो सुदिन दिन भेल,नहछू से नेग भेल
हम नहछू करबई ना।।
एहि दिन लागि मोरा,मनसा फरल हम
मेहदी मोहिबर हाथ लेल
हमरो सुदिन दिन भेल,नहछू से नेग भेल
हम नहछू करबई ना।

81

मधु पर्क

आबू सुमुखि सहेली दाइ माइ
कहां गेली मधुपर्क करू हे,
सिया प्यारी संग सभ के भेलन्हि
आबि गेली मधूपर्क करू हे।
राखू दम्पति के लाज
आबू महिला समाज
मधुपर्क करू हे
साजि- साजि सब साज मधुपर्क करू हे
आज मड़वा के भाग
भेल सफल सोहाग

उमरल अनुराग मधुपर्क करू हे
गावे लतिका सनेह
भेल जनक विदेह मधुपर्क
भूलि गेल देह गेह
मधूपर्क करू हे।

82
धनबट्टी

धान बांटि श्री अवध से आयल
मंगल गावथि मिथिलानी
अवधक कुशल पुछति हजमा से
चतुर नारि छानी छानी।।0।।
कहु कहु हजमाँ नृप दशरथ के
रहन सहन आनी-वानी
केहन हुनैक छैन यश प्रतिष्ठा
की वैभव सुख सन मानी।।0।।
सुनि हजमा गदगद भय वाजल
कहव की हम अति अज्ञानी
अवध अवधपति के यश वैभव
भुवन चारिदश छहरानी।।0।।
स्हित सुनैना नारि जनकपुर
धिया योग्य घर वर जानी
स्नेहलता कुलदेव क आगा
शंखल धान हरष मानी।।0।।

83
कमला पूजन
अँचरा से झाँपी झाँपी
मइया सुनैना के दुलारी
अंचरा से झांपी झांपी लेलतिय गन हे
चलली शलोनी धीया कमला पुजन हे
साजी साजी अंग अंग अपन अपन हे

चली भेली सिया सखि आनन्द मगन हे
धूप दीप माला दुभी तुलसी शुमण हे
साजी लेल डाला बीच, अछत चन्दन हे
गावति सुमंगल गीत वाजत वाजून हे
मुदित स्नेह लता, धिया मन मन हे

84

मटकोर

सीया जु के छैन मटकोर चलु री आली
सवमिलि आनन्द विभोर।।0।।
वड़े भाग से पावल समईया
हरषि वजावहुं आनन्द वधैया
फुल वरषत चहुं ओर।।0।। चलु हे
सब सखियन मिलि मंगल गावति
चारू कुवंरि पर वलि वलि जावति
वजन वाजैये घनघोर।।0।।
झांझ मृदंग वो वांसुरी वाजे
चहुं दिशि जय जय आनन्द छाजे
श्रीनिधि नाचत विभोर

85
मिथिला नगरीया मे घर घर शोर
चलु सखि देखन सिया के मटकोर
वाजा गाजा संग लाये कतेक हजार
कतेक हकारीन आये पाये क्यो न पार
वजवा के शब्द करैय घनघोर।।0।।
तिनहु लोक चौदहो भुवन में
आनन्द छायल घर आंगन में
रोशनी से राति आई लागईय इजोर।।0।।
पुष्प विमान चढ़ी देव गन आये
मातु सुनैना के भाग मनाये
स्नेह विवस भेल मिथिला के ओर।।0।।

86

आजु करत विधिवत
सीया जुके छैन मटकोरवा
आजु करत विधिवत वैदेही पुजन कमला तीर हे
नारि वृन्द सब मंगल गावति के कहे कतवा भीर है।।0।।
लोक लाज से सकुचित लोचन मुख मण्डल गम्भीर हे
हियमंदिर में रघुवर राजति पुलकीत सकल शरीर हे
जिनका चरण कमल पर निर्भर जल थल गगन समीर हे
से सिया कमला जी सं मांगथि, दीन जंका तकदीर हे
विनय करथि पुनि पुनि कमला से तु अयश चहुं युग थीर हे
स्नेह लता कृपा कर वरदे होथि हमर रघुवीर हे।।0।।

87

जयमाल

मैया सुनैना के दुलारी
चली रंगमुनि दे
आजुक दिन किछु कहलो न जाइय
धिया लेल संग में लगाई री
लतिका स्नेह सिया के छोटी छोटी वहीयाँ
कर जयमाल सुहाई री

88

जयमाला लागि गरबा झुकबियो ये राम-2
धरती क‘ बेटी हथि पहिरू जयमलवा राघो जी-2
से धरती क‘ भार आब मेटियौ यो राम जी-2
जयमाला लागि गरबा झुकबियौ यो राम-2
ललिता स्नेह सिया के छोटी छोटी बहियां-2
से जयमाला लागि गरबा झुकबियौ यो राम-2

89

मैया सुनैना के दुलारी,चली रंगमुनि दे

आजुक दिन किछु कहलो न जाइये
धिया लेल संग में लगाई री।
लतिका स्नेह सिया के छोटी छोटी बहियाँ
कर जयमाल सुहाई री

90

मण्डप परिक्रमा

दुलहा मण्डप के करू परिकरमा
तिरथ भेत अपने के।
तीन वेर परिकरमा करियौ
शक्ति मिलन के सुमिरन करियो
मण्डप से सिखु कुल धर्मा-तीरथ भेल अपने के
ई मण्डप प्रभु सफल बनाओत
दम्पति के कर्तव्य सिखओत
मण्डप से सीखू कुल धर्मा, तीरथ भेल अपने के
चलू दुलहा अब देर न करियौ
तीन प्रणाम से स्वागत करियौ
गांठ जोड़ि करू भरमण, तीरथ भेल अपनेके
घुमि घुमि स्नेहलता लतराबू
स्नेह के वन्दनवार लगाबू
मंडप रचल विश्वकर्मा जी

91

कन्यादान

बाबा के दुलारी धिया रानी पोती हे-2
आरे बाबा देलन डलबा रे बिनाय ये कि
फुलवा लोरहे जाहो बगिया हे-2
बाबा देलन डलबा रे बिनाय हे कि
फुलवा लोरहे जाएब बगिया हे-2
फुलवा लोरहेते बेटी अलसाय गेलियै हे
फुलवालेल डलिया सहेलिया संग हे-2
आहे फुलवा मोराला भैरि डाला कि
गिरजा के पूजनमा करबैय हे-2

फुलवा लोरहैते बेटी अलसाय गेलय हे-2
सुतल बेटी अंचरा रे उछाय
नयनमा नींदिया आयब गेलै हे-2
घोड़वा चढ़ल अबथिन राम जी पहुनमा हे
आरे ऊपरे से डमरू रे बजाये ये कि
जागु जागु मलहोरिन बेटिया हे-2
मलहोरिन बेटिया हउवे तोहरे सुंदरि बहिनिया हे
आहे हमे छिकी जनक जी क‘ बेटी कि
फूलवा लोरहे अयली बगिया हे-2
जब रउरा छिकी जनक जी क बेटिया हे-2
आहे हमे छिकी दशरथ जी क‘ बेटा कि
फूलवा लोरहे अयली बगिया हे-2
आहे हमे छिकी दशरथ जी क‘ बेटा कि
रउरे लोभे अयली बगिया हे-2
हे पढ़ल लिखल सब भुलाय गेलिअय हे-2
पोथी मोरा छूटलैय रे बनारस
कि किशोरी आगु मूरख भेलिअय हे-2

92

ऊँचेरे मड़ऊवा चढ़ी बेठसला श्रीध्वज बाबा,
धिया लेला जाँघिया चढ़ाए गे माई।
एक दिश निरखे बाबा धिया हे श्री जानकी,
एक ओर निरखे जमाई गे माई।
मइया सुनैना के धिरजो न रहलैन,
धीया लेल हिया में लगाय गे माई।
थर थर काँपे बेटी मुँहमो न खोलय,
अँखिया से झहरत लोर गे माई।
कहत कहावत बाबा परम विरागी,
सुधि बुधि गेल बिसराय गे माई।।2।।

93

आहे सुतल बेटी अंचरा रे बिछाए
नयनमा नींदिया आबि गइला हे
आहे सुतल बेटी अंचरा रे ओछाये

रे कि नींदिया आबी गईला हे
घोड़बा चढ़ल अयलन रामजी पहुनमा हे
घोड़बा चढ़ल अयलन रामजी पहुनमा हे
बेटी उठलन चेहाय हे कि
जागो जनमल होरिन बेटिया हे
होरिन बेटिया हउये तोहरे सुंदरि बहिनिया हे।
आहे पोथी मोरा छुटलन बनारस
किशोरी आगु मूरख भेलिए हे
पढ़ल लिखल सब भुलाय गेलिये हे
किशोरी आगू मूरख भेलिये हे

94
बाबा वर के संभालल धिया भेल पिपरक पात हे
जखने कुमारी धिया बैठली मंडप पर धिया भेल पिपपरक पात हे
थर थर कांपे बेटी मुंखहूं ना बोलत नयना से झहरत लोर हे
आहे नयना से झहरय लोर हे
छतिया विहूंकरली मातू सुनैना अब बेटी भेलहो बिरान हे-2
लतिका स्नेहि मैया छाती फाटि हूंकरथी अब बेटी भेलहो बिरान हे-2

95
गे माई मोरा बगिया में अइलन दोउ भइया
एक लछुमन एक राम गे माई-2
कौने रंग रामचन्द्र कौने रंग लछुमन
कौने रंग सिया सुकुमारि गे माई-2
श्याम रंग छथिन रामचन्द्र दुल्हा
गौरे वरण छथिन लछुमन छयेलवा
गौरे वरण सिया सुकुमारि गे माई

96
गिरिजा पूजन
राम सिया के मधुर मिलन में फुलवारी मुसकाये कोयलिया कजरी गाये-2
तोर रहे थे फूल रामजी, गिरजा पूजन चली जानकी
पायल की झनकार से उनके रोम-रोम हर्षाये कोयलिया कजरी गोय-2
रामसिया के मधुर मिलन में फुलवारी मुसकाये कोयलिया कजरी गाये-2

97
मिथिला नगरिया की लाली फूलवरिया हो लाली फूलवरिया
फूलवा खिलै हय हजार कहो तो फूल ला दूं बबुआ,
कहो तो फूल ला दूं बबुआ
कहां तोहर घरबा रे कहां रे दुअरिया
कौन नूप के सुत तोहें धनुधरिया
सांवरी सुरतिया तेरी तिरछी नजरिया, बस गयी है नैना हमार
कहो तो फूल ला दूं बबुआ-4
मिथिला नगरिया के लाली फूलवरिया हो लाली फूलवरिया
फूलवा खिले हैं हजार कहो तो फूल ला दूं बबुआ
कहो तो फूल ला दूं बबुआ-2
फूलवा कोमल है तोरे रे बदनमा
काही तोरा फूलवा से काम रे सजनमा
फूलवा की डाली में कांटा चूभेला
कहीं गर गई हथवा तोहार
कहो तो फूल ला दूं बबुआ

98
मोरे लालन तनिक मुसका दे नयनमा मानी नहीं-2
सुंदर लाल भाल पर चंदन काजल कमल नयन छवि आनंद-2
मोरे लालन तनिक मुसका दे नयनमा मानी नहीं-4

99
हमरा न चाही यौ पाहुन धनुष अ वाण रे
हमरा त चाही पाहुन मंद मुस्कान रे
जेकरा लागी जोगी मुनि वन में धयलन ध्यान रे
ऐहन सलोनी सिये के मंद मुस्कान रे

100
परछावन
तोरे अंखिया के काजल जुलूम करे राम,
भइले कटीली गुलाबों डाली, जुलूम करे राम-2
नीचे उड़े भृंग पंख पसारी-2
रसिकों के रस में झूके आठो याम, जुलूम करे राम-2
तोरे अंखिया के काजल जुलूम करे राम-2

दोनों नयन बीच जादू है तोहे-2
अमृत हलाहल मद के कटोरे-2
जीवन मरण दोनों करता बेकाम जुलूम करे राम
तोरे अंखियों काजल जुलूम करे राम-2
घायल बनि बैठी मिथिला की नारी-2
कैसे बची होगी बहिनी तोहारी-2
रानी अवध की तो पहले तमाम जुलूम करे राम-2
तेरी अंखियों के काजल जुलूम करे राम-2
लालन जरा दिल पे गुस्सा न लाना-2
अपनी की करनी का फल आप पाना-2
दोषी में होगी स्नेहिया का नाम, जुलूम करे राम-2
तोरी अंखियां के काजल जुलूम करे राम-2

101
(केवने रंग मुंगवा)
(पूरबी)
कवने रंग मुंगवा, कवने रंग मोतिया, कवने रंग ना,
सिया दुलहिन के दुलहा कवने रंग ना।
लाल रंग मुंगवा सफेद रंग मोतिया में श्याम रंग ना,
सिया दुलहिन के दुलहा श्याम रंग ना।
कहाँ शोभे मुंगवा कहाँ रे शोभे मातिया कहाँ शोभे ना,
सिया दुलहिन के दुलहा कहाँ रे शोभे ना।
सिर शोभे मुंगवा, गले में शोभे मोतिया मण्डप शोभे ना,
सिया दुलहिन के दुलहा मण्डप शोभे ना।
टुटिए जैतई मुंगवा छीटाय जैतई मोयि से रूसी जैतई ना,
सिया दुलहिन के दुलहा रूसी जैतई ना।
जोड़ी लेवई मुंगवा से विछि लेवई मोयि, नाइलेवई ना,
सिया दुलहिन के दुलहा मनाई लेवई ना।

102
गाली
कोनो क दिये गारी हे सिया साजन,
जिनका जे गारी पढ़े केहन पढ़ता,
हमरा लगैयह दोसर सरोकारी,

हे सिये साजन, कोना क दिये गारी,
एक दिन क देखने मिथिला मोहित भेल,
त बचली कोना क‘ अवधपुर क नारी
कोना क दिये गारी हे सिये साजन,
ई बतिया सुनि छक द‘ लगैइह
जौ किये कहैइय हिनकर बहिनी छिनारी,
कोनो क दिये गारी हे सिय साजन,
स्नेहलता अपनौति क‘ कारण
अपने मे करि कतैक उघारी,
कोना क‘ दिय गारी हे सिया साजन

103
राम लला सन सुंदर वर के जुनि पढ़ियौ किओ गारी हे
केवल हास-विनोदक पूछियन्हु, उचित कथा दुई चारी हे।
सुनू सखी एक अनुपम घटना, अजगुत लागत भारी हे,
खीर खाए बालक जनमाओल, अबधपुर के नारी हे।
स्नेहलता किछू आब ण कहियन्हु, बिपदा पड़तन्ही भारी हे
खुशी खुसी मिथिला से जयता, भेज देता महतारी हे

104
‘खीर स गर्भ रहल जननी के अपने अहां जनै छी,
श्रृंगीक बदला दशरथ के कोना क बाप कहे छी।
हमरा बजैतो लाज लगैये यौ दुलरूआ कोना बाजू।‘

105
ओठंगर
आजु धनमा कुटाबु चारो वरबा से।
जे रघुकुल के वीर कहावथि। बान्हू सखि काँचे डोरबा से।।
की वहीया की नृपकुल बालक। बुझल सखि मुसरि ओखरबा से।।
घुमि घुमि कुटथिन धान ललन सभ। विवश भेल व्यवहरबा से।।
तिय राम गावथ गीत मधुर धुन। करथ कटाक्ष नजरबा से।
स्नेहलता एहो गावे ओठंगर। रानी विलोकथि घरबा से।। आज0।।

106
अनका कहल किए ऐला महल, चारू लालना सँ पुछियौन हे।
बान्हू सखि कसि बन्धन प्रबल, कसि लालन के बधियौन हे।।

मिथिला में घुमि घुमि शेखी देखौलनि,
आइये घुसरतैन शेखी सकल, कसि लालन के बँधियौन हे।
चौदह भुवन जे अनका बन्धैछथि,
बूझू कतेक मिथिलानी मे बल, कसि लालन के बँधियौन हे।
बान्हि दियौन तखन ओखर मुसरवा
आठ चोट गनि कूटथि सम्भल, आई धनमा कुटथियौन हे। ओठंगर गीत
स्नेहलता किए चित के चुरौलनि,
भोगथु अपन चित चोरी के फल, कसि लालन के बँधियौन हे।

(शोध के दौरान करील जी और मोदलता के भी ओठंगर गीत मिल गए, जिनहे यहाँ दिया जा रहा है-)

करील जी-

107

सरसों की कलि सिया ज्योति महान हे, तीसी फुल ना,
रंग दुलहा सुहान हे, तीसी फुल ना।
हिए के दिवहिया में नेहिया चुआन हे, रसे रसे ना,
प्रेम बतिया जड़ान हे, रसे रसे ना।
छवि रस माधुरि के छटा छहरान हे, भींगी भींगी ना,
सब सखिया नहान हे, भींगी भींगी ना।
परम स्वतंत्र प्रभु जगत जहान हे, तिनकाही,
रेशम डोरिया बन्हान हे, तिनकाही।
सब जग भरलइं अन्हरिया मशान हे,, मोरा अंगना,
उगलनि चार चार चान हे, मोरा अंगना।
जिनका लागि योगी मुनि, वन में धरथि ध्यान हे, सोइ प्रभु ना,
मोरा अंगना कुटलनि धान हे, मोरा अंगना।
पाओल करीलवा अहाँसन मेहमान हे, अब किदु ना,
मोरा हीया अरमान हे, अब किछु ना।

108

मोदलता जी का ओठंगर गीत

चित चोरबा आज बन्हौलनि हे।
सब शान गुमान गमौलनि हे।।
एहि चित चोरबाके, शिर मणि मौड़िया,
छोड़वा छवि छहड़ौलनि हे।। चित0।।
एहि चित-चोरबा के चो दृग कोरबा,

पर करेजबा कयलनि हे।।चि0।।
एहि चित चोरबा के लाली लाली ठोड़वा
मन मोरबा के लुभौलनि हे।।चित0।।

सोने के ओखरबा में मणि के मुसरबा
आठ चोट चाऊरबा छोड़ौलनि हे।।चि0।।
सेहो रे चऊरबा बन्धाये शुभ करबा,
सिय प्यारे बबरबा कहौलनि हे।।चित0।।
चाऊरबा के भाग पर भोद बलिहरबा,
शुभ ओठंगरबा गवौलनि हे।।चित0।।

109

बिलोकु (छवि दर्शन)

श्री किशोरी जी के अंगना विलोकु बहिना।
छवि शशि मुख राम, छवि निधि जानकी, रचल विधना,
कनी ओम्हरो निहारू तीनू जोड़ी तेहिना।।श्री किशोरी।।
माण्डवी चकोर संग भरत चकोरबा, विराजे दहिना,
श्रुति कीरत संग शत्रुघ्न शोभे ओहिना।।श्री किशोरी।।
बबुआ लखन संग शोभे उरमिला दाई, उपमा बिना
सखि बुझू जेना अंगूठी में शोभे नगीना।।श्री किशोरी।।
कहत सनेहलता मिथिले में राखू, तिन सौ साठियो दिना,
येहे पंचमी के तिथि अगहन के महीना।।श्री किशोरी।।

110

स्नेहलता लिखित व 'बाबा' (स्व सूर्यदेव ठाकुर) द्वारा मंच से गाया उनका अंतिम गीत -

तोहे राखूँ पियरववा, कबने विधि से।। तोहे राखूँ।।
हिया बिच राखूँ ता अँखिया तरसे,
अँखियों में राखूँ तो हिया तरस।।तोहे राखूँ पियरवा।।

111

कमर खोलाई एवं नव वस्त्र धारण

रूसल वर के कोना क मनाएब,
वर मांगे कमर खोलाइ माइ हे।
त्रिभुवन पति भेला मोराधर याचक,
आजु भेल विधना सहाय माई हे।
अई धोतिया में पाहुन सिया के महावर,
दुनिया में होयत बड़ाई माई हे।
अवधक मैया कोना धोती पहिरौती
अबध में करती सगाई माई हे।
कमर खोलौनी में देव निमन कनिया
अवध में बाजत बधाई माई हे।
लतिका स्नेह गावे कमर खोलौनि,
सुनि सुनि राम मुसकाय माई हे।

112

नूतन वसन

नूतन वसन पिताम्बर, कटि कस पावन हे।
पीत जनेऊ सुमंगल परम सुहावन हे।।
अलिगन कहि मृदु वचन करथि परतारन हे।
जकिकरू लाल मनावन उठिकरू धारन हे।।
विहँसि कहल एक नारी ललन करू लाजन हे।
छाड़ू कुलक निज रीति तखन करू चायन हे।।
लखि पुरहित असमंजस देल अनुशासन हे।
उठि उठि पहिरल वस्त्र हरष हिय लालन हे।।
स्नेहलता हँसि कहथिन कयल विचारन हे।
अहाँ मानल विप्रक बात अवश किछु कारण हे।।

113

श्रीराम की शोभा

एहन सुन्दर मुख कहियो न देखल,
टनमन नील रंग चान माई हे।

छबबा के पतिया से छिटके विजुरिया,
ताहि पाछु घटा घमशान माई हे।
ओठवा के रंग शोभे अरूण अधरबा,
तहि वीच मंद कुसुकान माई हे।
लतिका सनेह देखे मुँहके सुरतिया
बिसरल सुधि बधि ग्यान माइ हे।

114

कन्या निरीक्षण

अहाँ चिन्हियौ ओ दुलहा अपन कनिया।
वाम दहिन भय बैसलि सुन्दरि,
एके पटोर पर दुई जनियाँ। अहाँ चिन्हियौ।।
लिय कमल कर आमक पल्लव,
परखि उठावू सुन्दर धनिया। अहाँ चिन्हियौ।।
चालि चलनि एखने हम जाँचब,
कहेन अहाँ के रघुकुल बनियाँ। अहाँ चिन्हियौ।।
चतुर शिरोमणि छुवि पल्लव सौ,
विहँसि उठौलनि पटरनियाँ।

समदाओन

115

बेटी के वियोग हम कोना विधि सहबई,
हम ना करब धिया दान।
अपन करेजबा के दुधबा से पोसली,
आजु भेल दुलरी विरान।
जौं हम जनिति एहन दिन देखबई,
हति लिती अपन परान।
लतिका सनेह अब कहाँ लतरायब,
उजरल स्नेहक बगान।

116

धिया केर हाथ बाबा वर के समरपल
धिया भेली ममता विभोर गे माई।
मुसुकल सन मुँह काँपे दूनू ढ़ोरबा,
आँखिया मे रोकल लोर गे माई।
हमर अपन धिया वंश बदलि गेल,
हमरो कलेजा कठोर गे माई।
लतिका स्नेह मइया छाती दाबि हुकरथि,
धिया लेई जायब पराय गे माई।

117

जबसे कुमारी के परलेन सगुनमा से
सुधि बुधि सब विसराय गे माई।
दिन नाही चैन पड़े रातियो न निंद आवे,
घर रे आंगन न सोहाय गे माई।
भोज भात बन्द करू बन्द करू बजबा से,
गाजा बाजा लागत बलाय गे माई।
लतिका सनेह अब चुप रहू बबनी से,
जीवन के साथी मुसुकाय गे माई।

118

कोना हम बिसरव बेटी के सुरतिया
कहुना न बिसरल जाय।
असरा लगाय हम दुलरी के पासली
छतिया के दूधवा पियाय
जनि कानू अनि खीजू धीर धरू जननी
मैया कर ममता बलाय
लतिका सनेह गावे सहो समदौनि
बेटी के शुभ दिन सहाय

119

मिथिला नगर तजि सिया जब चललि,
राम सिया जब चललि
मिथिला खसल मुरछाय-2
हिलि लिअव मिलि लिअव सखि हे सहेलिया राम
सखि हे सहेलिया अब न होयत मुलुकात- 2
लतिका स्नेहिया गावल समदओनियां
राम संत जन लिअव

120

समदाउन (सुलोचना विलाप)

बिलखि-बिलखि काने, सती हे सुलोचना राम
सतीहेला हिया भेल पिपरक पात।।
बीच रे कपार पर डकि देल कगबा राम
डकि देल कगबा।
कहि देल अधखि के बात।।
आरे, खसल अंगनमा में पिया जी हथबा राम
पियाजी के हथबा
लिखि देल अपन हबाल।।
आरे हमरा वियोग में न कानू खिजू तनिको राम
कानू खिजू तनिको
रामजी से होयत मुलाकात।।

आरे 'लतिका सनेह' एहो गाबे समदौनियाँ राम,
गाबे समदौनियाँ
रानी के अमर अहिबात।।

121

भरत बिलाप - समदाउन

भाई के दरश लागी, बेकल भरत जी
रने बने करधि बिलाप।।
केनाक बिसरि गेल भइया निरमोहिया राम
भइया निरमोहिया
चलि गेला बन चुपचाप।।
केहन कपूत हम भेली भइया केकयी राम0।।
हमरे चढ़ल सिर पाप।।
अवध अनाथ लागे, मइया भेली बिधवा राम
मइया भेली बिधवा
पड़िगेल अन्हरी के श्राप।।
गोड़ लागू पैयाँ परू, माता सिया जानकी राम
माता सिया जानकी
मेटू आब बिरहक ताप।।
'लतिका सनेह' एहो गाबे समदौनियाँ राम
गाबे समदौनियाँ
एहो थिक भरत बिलाप।।

122

बिलखि-बिलखि काने, बेकल भरत जी
एखनो न अयला भगवान।।
एक दिन अवधि रहल आब बाँकी राम
रहल आब बाँकी
एहो भेल कलप समान।।
मंथरा के बात सुनि राम जी के त्यागली
राम, रामजी के त्यागली
जग भेल अयश महान।।

जौं मोरा भइया घर आइयो नहि अयता राम
आइयो नहि अयता
हति लेब अपन परान।।
'लतिका सनेह' धरू धीरज भरत जी
देखू आबि गेला हनुमान।।

123

भरत बिलाप

केकयी के पग छानी, पूछथि भरत कानी
कि आहे माता, कियक भैया बनमा मांगलरे की।।
भाई निरमोही भेला, हमरो बिसरी गेला
कि आहे माता ममता कोना क हमर त्यागल रे की।।
जानकी, लखन धन, भइया संग गेला बन
कि आहे माता हुनके दूनू के भाग जागल रे की।।
'लतिका सनेह' कहे, आँखिया से नीर बहे
कि आहे माता भाई बिनु भाई भेल पागल रे की।।

देशभक्ति गीत

124

बच्चों इस पन्द्रह अगस्त को तेरा स्वर्ण विहान हुआ
आजादी के नव प्रकाश में जगमग हिन्दुस्तान हुआ।।
देवलोक से बापू आये हमें स्वतंत्र बनाने को
सत्य अहिंसा से भूतल पर सुन्दर स्वर्ग बसाने को
अंग्रेजों का अनुशासन था पराधीन हम सारे थे
उत्पीड़न के तले दबे थे बुरी नशीहजत होती थी
संतानों की दशा देखकर भारत माता रोती थी
उसी समय भूतल से निकला करमचन्द्रमा नाम पड़ा
गाँधी बनकर चला संत वह अंग्रेजों से काम पड़ा
शांति शंदेशा लेकर गाँधी जनता का आह्वान किया
उतर पड़े सब शाँति युद्ध में, तन, मन धन बलिदान किया
क्या बीता हम करें कहाँ तक मुझसे कहा नहीं जाता
बरस रहे थे तोप के गोले इधर क्षमा की थी छाता
ऐसे समय पटेल, जवाहर डटे रहे राजेन्द्र प्रसाद
इसी बीच माउन्टबेटन ने, दिया हिन्द को सुखद स्वराज
आज के दिन ही राजभवन पर यह झंडा फहराया था
नाच उठा था देश हमारा आसमान मुस्काया था
आओ बच्चों आज शपथ लो यह दिन नहीं भुलायेंगे
जबतक तन में प्राण रहेगा राष्ट्र ध्वजा फहरायेंगे।
देश अखंड रहेगा मेरा शासन सुदृढ़ बनायेंगे।
हर भारत वासी के दिल में स्नेहलता लतरायेंगे।।

125

यह छब्बीस जनवरी मनाने खुद वसंत घर आया है,
शिशिर मिलन की खुशियाली में रंग अबीर उड़ाया है।
सरस्वती भी राज रही है जो विद्या की खानी हैं,
जीव चराचर की वाणी है ब्रह्मलोक की माया है।।यह0।।
सफल राम अवतार न होता गर तू भाग नहीं लेती
कैकेयी को मंथरा पढ़ाकर बुद्धि बदल नहीं देती।
तेरी गरिमा तुलसीदास ने रामायण में गाया है।।यह0।।
कृपा करो माँ अज्ञानी पर ज्ञान का दीप जला दो माँ।

वहाँ अविद्या फटक न सकती जहाँ तुम्हारी दाया है।।यह0।।
झंडा दिवस वसंत पंचमी कभी न भूले याद रहे
भारतवासी भाग्य सराहे गीत जिन्दावाद रहे
इसीलिए तो जन-जीवन में 'स्नेहलता' लतराया है।।यह0।।

126

राष्ट्रीय ध्वज गीत

आओ हम झंडा फहरायें, आज सभी हम खुशी मनायें
भारत का पन्द्रह अगस्त यह प्यारा पर्व महान है
आओ मिलकर खुशी मनायें गाँधी का अरमान है।
इसी खुशी के लिए देश में बड़े-बड़े बलिदान हुए
सैंतालिस इस्वी से यह दिन भारत का मेहमान है।।आओ0।।
इसी खुशी के लिए देश में संतावन का गदर हुआ
मरे देश के बीर अनेकों नाम हमारा अमर हुआ
इतिहासों में सब शहीद का भरा हुआ गुणगान है।।आओ0।।
नब्बे बरसों तक दुश्मन से लड़ते रहे हमारे बीर
प्राणों की कुर्बानी देकर, पलट दिया माँ का तकदीर
झाँसी रानी, बीर भगत सिंह, कुवँर सिंह की शान है।।आओ0।।
आजादी का प्रथम दिवस यह कभी न भूले याद रहे
'स्नेहलता' भी याद रहे यह भारत जिन्दाबाद रहे
यह खुशियाली का दिन मेरी माता का मुस्कान है।।आओ0।।

127

झंडा फहराय हमारा।।
सकल विश्व के सब झंडों में यह झंडा है न्यारा
अमर रहे पन्द्रह अगस्त यह भारत का उजियारा।।
झंडा फहराय हमारा।।
परवसता के जंजीर में जकड़ा था यह भारत सारा
इस झंडे ने आकर इससे हमें दिया छुटकारा
झंडा फहराय हमरा।।
अमर शहीदों का तपबल है गाँधीजी का प्यारा
यह झंडा है प्राण हमारा भारत भाग्य सितारा।।
झंडा फहराय हमारा।।

यह अगस्त है पुण्य हमारा कटे कष्ट के काँटा
'स्नेहलता' का यह झंडा है सबसे परम दुलारा।।
झंडा फहराय हमारा।।

128

राष्ट्रीय गान

आज प्रथम जनवरी सतासी, आया मंगल गाओगी
गले गले मिल जाओ परस्पर घर-घर खुशी मनावो जी
मंगल आज पुनीत द्वादशी मंगल होगा बारह मास
मुस्काती है दशो दिशायें महा मगन धरती आकाश
आओ-आओ मंगल गाओ मंगल कलश सजओ जी।।आज0।।
सत्य अहिंसा नीति धर्म का सबको सबक सिखायेंगे
दुश्मन पर भी दया दिखाकर अपना मित्र बनायेंगे
सकल विश्व में इस भारत का धर्म ध्वजा फहराओ जी।।आज0।।
अजय अखंड रहेगा भारत का धर्म निभायेंगे
हम सब आज सपथ लेते हैं देष की गरिमा गायेंगे
आज का शुभ दिन शुभकारक हो, हृदय से हृदय मिलाओ जी।।आज0।।
भारत माता की गोदीकी हमस ब लाज बचायेंगे
सदा सबों का भला करेंगे जग मानव ललचायेंगे
जन मंडल के हृदय बाग में 'स्नेहलता' लतराओ जी।।आज0।।

129

राष्ट्रीय गान (देश गान)

बना दो भारत का इंसान
बना दो भारत का इंसान
बना दो भारत का इंसान
भारत को समझो समियाना
बच्चे होंगे सभी सयाना
सामियाने का खम्बा बनकर लेंगे ऊंचा तान
बना दो भारत को इंसान।

130

यह भारत है देन विश्व निर्माता का
हम भी हैं एक देन दुलारू
अपनी भारत माता का।।
जितने भी अवतार हुये हैं
भारत को अधिकार हुये हैं
मुझको है अभिमान सदा से।
राम भरत सा भ्राता का।। यह भारत है देन0।।
सत्य अहिंसा कर्म हमारा
अपनापन है धर्म हमारा
जीवन का है लक्ष्य हमारा
दुनियाँ में सुख दाता का।। यह भारत है देन0।।
'स्नेहलता' लतरायेंगे हम
सबको सुखी बनायेंगे हम
अमर ध्वजा फहरायेंगे हम
मातृ भूमि से नाता का।। यह भारत है0।।

131

महाराणा प्रताप

जय-जय जय भारत माता की, जय भारत संतान की
जय-जय-जय राणा प्रताप की, जय जय उनके ज्ञान की।
दुश्मन के जब दुराचार से भारत माता रोती थी
भारत बासी के प्राणों में प्रलय की लीला होती थी
सह न सके चितौड़ के राणा, नीति बिरोधी शान की।।जय0।।
यवनो के आतंक से डर कर साथ किसी ने दिया नहीं
बरस रहे थे मृत्यु के ओले मगर समर्पण किया नहीं
मातृ भूमि के लिये आपने प्रण ठानी बलिदान की।।जय0।।
ओ सपूत भारत माता के देश को अमर बनाना है
भारत बासी के रग रग में 'स्नेहलता' लतराना है
याद करो राणा प्रताप की याद करो हनुमान की।।जय0।।

विज्ञान गीत

132

अमर हमर विज्ञान गे बहिना, अमर हमर विज्ञान
आदिकाल से हमरे भारत, अछि विज्ञान विधाता गे
काग गरूड़ पक्षी भारत के, रामायण के ज्ञाता गे
सुगना एकर परमान गे बहिना।।अमर हमर0।।

भ्रमण करैत छला नारदजी, नित पैदल सब लोग गे
क्षरण करैत छला हर जीवक, पाप, ताप, भय, शोक गे
सिन्धु कुदल हनुमान गे बहिना।।अमर0।।

लक्षुमन रेखा विश्व केआगू,सकल एक चुनौती गे
पूर्ण ब्रहम के चरण पखारल, काढक एक कठौती गे
जल में न डूबल पाषाण गे बहिना।।अमर हमर0।।

भारत के विज्ञानक आगू और केकर विज्ञान गे
मेघराग से वर्षा होइ छल, पाथर से भगवान गे
'लतिका सनेह' के गुमान गे बहिना।।अमर0।।

जागरूकता के गीत

133

राष्ट्रीय बाल कल्याण गीत

अगर भविष्य बनाना हो तो, करो बाल कल्याण,
बना दो भारत का इंसान-
भारत को समझो शमियाना, बच्चे होंगे जभी सयाना
शमियाने का खंभा बनकर लेंगे ऊँचा तान।।बना0।।
प्रेमप्यार से राह दिखाकर, नीति, धर्म आधार बनाकर
चरितवान का पाठ पढ़ाओ, बन जाये हनुमान।।बन0।।
आतंकी को भय दिखलाकर, मानवता सिखला, सिखला कर
अगर न माने निशिचर कहना, करो गदा अभियान।।बना0।।
कहना मानो 'स्नेहला' का फहराओ नित बाल पताका
बन जायेगा भारत देश, सबसे बड़ा महान।।बना0।।

134

तिलक दहेज विरोधी गीत

युवकों में संगठन बनाकर हम अनरीति मिटायेंगे।।
तिलक प्रथा उन्मूलन करके नया समाज बनायेंगे।।
पढ़े लिखे कॉलेज गये हम, एक दिन मोल बिकायेंगे।।
हँसता है संसार मगर हम और न हँसी करायेंगे।।युवकों0।।
अर्थहीन कन्यागन रोबे, होगा कन्यादान नहीं
बेटावाला बिना रूपैया कहे कि तू इन्सान नहीं
बेटी या बेटावाला हो मानवता सिखलायेंगे।।युवकों0।।
तिलक धनुष है लड़का के घर जौं कन्यागत तोड़ सके
अब उल्टी गंगा बहती है हम सीधी धार बहायेंगे।।युवकों0।।
पहले तो धनबन्ध है होता, तब होता मनबन्ध कहीं
रोता है सम्बन्ध बेचारा मेरा आदर कहीं नहीं।
करते हैं हम आज प्रतिज्ञा, तिलक दहेज हटायेंगे
जीवन का सम्बन्ध जोड़कर स्नेहलता लहरायेंगे।।युवकों0।।

135

दहेज प्रथा से प्रभावित, मर्माहत - बेटी विलाप

अगिया लगैवई हम तिल दहेजबा से रहब कुमारि
से रहब कुमारि।।
बेटी लागि बाबूजी के होयत दुरगतिया
भूख नहि दिन और राति नहि निंदिया
हमरा विवाह लागी सहता विपतिया से बनता भिखार,
से रहब कुमारि से रहब0।।
धिग-धिग भारत में बेटी के जीवनमा
जेकरा विवाह हेतु बेटी के गंजनमा
खेतबा के बेचि मोरा करता लगनमा, से मरत परिवार
से रहब कुमारि0।।
करू सम्बन्ध धन बन्धजनि जोड़ू
तिलक प्रथा के बुझि कोढ़ मुँह मोरू
बेटा बला बेटा के न बुझू बरदनमा, हँसत सनसार
से रहब कुमारि0।।
खोजि लेब जीवन साथी जोग घर बरबा
हमरा विवाह लागि करू न फिकिरबा
'लतिका सनेह' खुद करब विवाह।।
से रहब कुमारि0।।
अगिया लगैवई हम तिलक दहेजबा से कहव
कुमारि, से रहब कुमारि।।

136

पैसा

पैसा के आयल समैया हे, अरजन करू भैया।
सबके मन में पैसा बैसल,
कलि में सकल सुख दैया हे।।अरजन0।।

धरम करम मे पैसा चाही
पैसा के बल तीरथ राही
राही के राह देखबैया हे।।अरजन0 करू0।।

पैसा बिना कोई करत न आदर
बिनु पैसा सब करत निरादर
पैसा के सब पुछबैया हे।।अरजन0।।

पैसा के भगवान बनाबू
'स्नेहलता' पग पर लतराबू
कलियुग में जीवन रूपैया हे।।अरजन0।।

137

चेतावनी

रामनाम बिनु एहि कलियुग मे, बड़बड़ गंजन हेतउ रे।
कहियो जनम भरि पेट ने भरतौ, विपति पर विपति सतेतउ रे।।
वात-पित्त-कफ-माल-खजाना, सब पड़ले रहि जैतउ रे।।
माय-बाप और घर के तिरिया संग न एको जयतौ रे।
बेटा-बेटा महा दुलारू, आगिसँ मुँह झरकैतौ रे।।
एहि देहिया के कोन ठिकाना, गीध-गिदर घिसियैतौ रे।
स्नेहलता भजु राम नाम, भव सागर पार लगैतौ रे।।

138

बेटा- बेटी समानता गीत

एक माय से दूनू जनमल, एक रंग संतान छै।
कोना क बेटा अपन बुझईछी, बेटी कोना विरान छै।।
ब्रह्मरूप सब पुरूष जगत में, प्रकृति सरूपा नारी छै।
दूनू से संयोग मिलन से, चकमक सब संसार छै।।
सृष्टि प्रलय पालन मे दूनू सचमुच में भगवान छै।
ई दुनियाँ स्वारथ के मेला, स्वारथ के सब खेल छै।।
स्वारथ कारण एहि मेला मे, सबके सबसे मेल छै।।
स्वारथ के कारण त्याग-तपस्या, स्वारथ से बलिदान छै।
कोनाक बेटा अपन बुझई छी, बेटी कोना विरान छै।।
आबागमन मिलन बिछुड़न में, अस्त-व्यस्त सब जीव छै।
बेटा-बेटी सुख-दुख भोगथि, जिनकर जेहन नसीब छै।।
जीवन के संग्राम भूमि में दूनू सबल जवान छै।
कोना क बेटा अपन बुझई छी, बेटी कोना विरान छै।।
'स्नेहलता' में बेटा बेटी दूनू सुन्दर फूल छै।

दूनू एक सहोदर नाते आपस में अनुकूल छै।।
माता-पिता भेद नहिं राखू, दूनू एक समान छै।
कोना क बेटा अपन बुझई छी, बेटी कोना विरान छै।।

139
भातृ प्रेम

जिस भारत में राम राज्य हो, और भरत सा भाई हो।
दुर्दिन है कि उसी देश के, भाई-भाई में खाई हो।।
खाई से सागर होवेगा, द्वंद्व लहर लहरायेगा।
जन मंडल जल जन्तु बनेंगे, भाई-भाई को खायेगा।।
सूर्य चन्द्रमा धूमिल-धूमिल, झिलमिल-झिलमिल तारे हैं।
प्रकृति कोप भी पावे रोपकर, बैठे बीच हमारे हैं।।
सन्तानों में कलह देखकर, दुख से माता रोवेगी।
हृदय खोलकर अन्न न देगी, धरती द्रवित न होवेगी।।
ओ भारत संतान सोच लो, आज तुम्हें क्या करना है।
कैसे माता मुसकायेगी, ध्यान इसी पर धरना है।।
भाई को भाई बना के रखना, भाई के उपर निर्भर है।
जब तक भाई भाई न होगा, कुशल से जीना दुस्तर है।।
आओ हम संकल्प आज लें, स्वजनों में होबे ममता।
भाई भाई के हृदयबाग में, फिर तलराये 'स्नेहलता'।।

140
प्रकृति और किसान

घटबा उठल घनघोर निरमोहिया
घटबा उठल घनघोर।।
सावन महिनमा में सिंहकल पछिया
गुमकी बढ़ल बड़जोर।
भीतर बाहर मन चैन न पाबय

गुमकी के छतिया कठोर निरमोहिया।।0।।
कतेक किसान कहे बरसे न पानी
हाय-हाय भेल चहुँ ओर
मेघ से अरज करे विकल किसनमा

आँखि में न मेघबा के लोर निरमोहिया।।घटबा0।।
बदलल प्रकृति बदलि गेल धरती

रवि शशि कुपित न थोर
उँच भेल नीच, पहाड़ भेल डाबर
केकरा कहब कमजोर निरमोहिया।।घटबा0।।
बदलल जन मन, बदलल दुनियाँ
कोई नहि छोड़त पछोड़
लतिका सनेह हमहूँ, नहि मानब
छानि लेब हम दूनू गोड़ निरमोहिया।।घटबा0।।

अन्य सामाजिक कार्य-कलापों के गीत

141

स्वागत गान

ओ मेरे आगत मेहमान
कैसे स्वागत करें आपका, हहर रहे हैं मेरे प्राण।।ओ0।।
आप सबों ने कष्ट उठाकर
किया कृतारथ हमको आकर
मानो आज सुदामा के घर, मिले कृष्ण भगवान।।ओ0।।
आशा थी विश्वास नहीं था
पुण्य भी वैसा पास नहीं था
किसका होगा इस दुनियाँ में मेरे जैसा भाग्य महान।।ओ0।।
बड़ भागी हैं हम सब सारे
महामहिम घर आज हमारे
करते हैं हम हृदय समर्पण, सफल हुए सबके अरमान।।ओ0।।
कृपा रहे शुभ दीन दास पर
सुख सरसाये हिय हुलास पर
'स्नेहलता' को रहें सीचते, स्वाती बूँद देकर अनुदान।।ओ0।।

142

मंगलम

राम सीय सिर सिन्दूर देही
लगन पत्रिका
स्वहित श्री श्रीमान पूज्यवर समधी
रामचन्द्रजी राय
राजेश्वर का नमस्कार है, विनबौ सादर
शीष नवाय।।

143

मंगल मय से यही विनय है, उच्च पक्ष सान्नद रहें।
कुशल रहे मलिकौर मदनपुर नित मंगल आन्नद रहे।

144

गणपति गौरि महेश शारदा
मंगल करे सहाय रहें।
शकुन सुमंगल मंगल गावें,
मंगल मोद सदाय रहें,
शरणागत को आश्रय दाता,
आप है समधी परम उदार।
भेज रहा हूं लगन पत्रिका
कृप्या कर लेंगे स्वीकार।
जेठ शुक्ल द्वितिया मंगल मंच शुक्रवार दिन याद रहे।
चिरंजिबि राकेश विभा मे
सिंदूर का मर्याद रहे।

145

दोहा

हे समधी वर आइये दुल्हाजी के साथ,
आकर दर्शन दीजिए विभा को करें सनाथ।
सकल मदनपुर नारी नर

सरकारी योजनाओं आदि के गीत

146

परिवार कल्याण प्रचार गीत

बात कहता हूँ सच्ची जरा ध्यान दो,
रखना परिवार छोटा बचन मान लो।
देख घर-घर की हालत नसीहत बनी
आज बढ़ती आबादी मुसीबत बनी
पूछ लो, देख लो, अपनी संतान को।।रखना।।
सुख की टोपी तेरे सिर चढ़ेगी नहीं
क्योंकि धरती बेचारी बढ़ेगी नहीं
अन्न बस्तर हीं जीवन है इन्सान को।।रखना0।।
एक दोजख की ज्वाला उठेगी कभी

जिसमें जलकर भसम होंगे मानव सभी
आह आहों की छू लेगी आसमान को।।रखना0।।
बात मानो न मानो तुम्हारी खुशी
बनकर एक दिन रूलायेगी तेरी हँसी
'स्नेह लतिका' परिवार को छान लो।।रखना0।।

147

परिवार कल्याण प्रचार गीत

जौं परिवार बनैबे छोटा, सुख से दिनमा जयतौरे।
अन्न वसन के फिकिर न रहतौ, कखनो विपति न अयतौ रे।।
चिंता कखनो संग न छोड़तऊ, जौं परिवार बढ़ैबे रे।।
सिर पर करजा चढ़ले रहतौ कहाँ से केना सधैबे रे
जौं परिवार0।।
देखि देखि भुखमरी देश के
इन्द्रा जी घबरैलन रे
कर अपना परिवार के छोटा सरल उपाय बतौलन रे।।
।।जौं परिवार0।।
एहि मौका के अगर गमैबे
फेर पाछू पछबैबे रे
जौं परिवार नियोजित रखबे स्नेहलता लतरैबे रे।।
।।जौं परिवार0।।

148

बारह सूत्री कार्यक्रम

आओ, हाथ बंटाओ, बारह सूची काज में
इन्द्रा जी के राज में जी।।
पहला सूत्र कुआँ खोदबाना, दूसरा काम है पेड़ लगाना।
तिसरा काम है बदले रखना ध्यान अनाज में।।इन्द्रा0।।
चौथा जमा मुनाफाखोरी न्याय से करे नहीं बरजोड़।
होबे नित असहाय, सहारा दुकान, सबको मिले समान-समान
हरदम रखिये राहत, चारा के अन्दाज में।।इन्द्रा0।।
सबको हो रोटी रोजगार, पानी और अन्न भंडार।
घर-घर 'स्नेहलता' लतराओ, सुखमा साज मे।।इन्द्रा0।।

149

बीस सूत्री कार्यक्रम गान

बीस सूत्री विर्णित कार्यक्रम, इंका का आह्वान है,
आओ, मिलकर सफल बनायें, भारत देश महान है।
कीमत को संतुलित बनाना
उत्पादन उद्योग बढ़ाना
मजदूरी, आवास, सिचाई, हदबन्दी व्यवधान है।।आओ0।।
प्रथम करो परिवार नियोजन
मिले वसन परिवार को भोजन
ग्रामिण ऋण, अन्याय मिटाना
सब जन सदा समान है।।आओ0।।
काला धन घुसखोरी चोरी
महिला हरिजन पर बरजोरी
करे न कोई, रोक लगाना
सबसे 'कर्म' प्रधान है।।आओ0।।
छात्र को सुविधा, देश बचाना
घर-घर 'स्नेहलता' लतराना
कृषकों को सब साधन देना
सरकारी अनुदान है।।आओ मिलकर0।।

150

बाढ़ 1987

भारत सरकार को धन्यवाद
धन्य हमर सरकार गे बहिना, धन्य हमर सरकार
उत्तर भारत जल में डूबल
दक्षिण पड़ल सुखार
हाहाकार भेल जन जन में
रहल न एको अधार गे बहिना, रहल न एको अधार गे
दुर्लभ भेल अहार गे बहिना।।धन्य0।।

डीह घरारी सब के दहिगेल
बहि गेल भित्ती चार गे
रन-बन भटकि-भटकि सब काने,
लाख-लाख परिवार गे।

ताहु पर बरखा प्रहार गे बहिना।।धन्य0।।

कतेक जीव परलोक सिधारल
काल के भेल शिकार गे
पिघलि गेल 'राजीव' के छाती
कयल विविध उपचार गे
हिया बीच परल दरार गे बहिना।।धन्य0।।

राहत नाव, बचाव कार्य से
कयल प्रजा उपकार गे
युग-युग जिबथि देश के नेता
जिनकर नीति उदार गे।
'लतिका सनेह' के बिचार गे बहिना।।धन्य0।।

151

गजल

राम चाहे तो श्रुष्टि सम्हल जायगी।
लोग कहते हैं दुनियाँ बदल जायगी।।

जहाँ दिन रात होती है, उसी का नाम दुनियाँ है
जो सुख की बात होती है उसी का नाम खुनियाँ है।

जन्म देकर वही फिर निगल जायगी
लोग कहते हैं दुनियाँ बदल जायगी।

152

मिला हंसता जो रोता था, जो हँसता था वो रोता है
हँसाने ओ रूलाने का, यहाँ व्यापार होता है
एक नेकी बदी जग में रह जायगी
लोग कहते हैं दुनियाँ बदल जायगी।
बदलता ही रहेगा वह, बदलता जो सदा आया
न हम बदले न प्रभू बदले, बदलती है सदा माया
न रोके रूकेगा न चल पायगी
लोग कहते हैं दुनियाँ बदल जायगी।
कहे करजोड़ कर सबसे, सफल करना है जीवन को

बधा कर 'स्नेह लतिका' में, रमा ले राम को मन में
मोम बनकर मुसीबत पिघल जायगी
लोग कहते हैं दुनियाँ बदल जायगी।।

153

गजल (तर्ज- तूने प्रीत चुन्दरिया रंग डारी)

श्यामला हो जा मैं तो पै वारी।।
तेरी नयना मदन शर मारी मारी रे।।श्यामला0।।
भूल गई मैं दिन वो रतिया
देखी जब से श्याम सुरतिया
घर जाऊँ या बन जाऊँ मैं
श्याम-श्याम जग सारी सारी रे।।श्यामला0।।
छीन लिया मन तेरी न'रिया
चोखे चितबन कारी कजरिया
काम धाम तजि डारी डारी रे।।श्यामला0।।
मानो मोहन मेरी बतियाँ
ले लो अपनी 'स्नेह' की लनियाँ
तू मेरे या मैं तेरी हूँ
जान प्राण सब हारी हारी रे।।श्यामला0।।

154

शृंगार

उदित उरोज मनहुँ गिरिराज,
बाट चलइत बड़ होइ अछि लाज।
भल छल शैशव मन छल चैन,
यौवन प्रेम पियासल नैन।
युग भुज दण्ड सौ आँचर तानि,
भेल मोर बैरिन आँखिक पानि।
'लतिका सनेह' तोर तुनक बसंत,
भेटत सखि तोर रहि मास कंत।

155

ईर्ष्या

नैया डगमग-डगमग इर्षा के मजधार में
झगड़ भेल घटबार मे ना।।
ज्नमन सागर नित लइराये, बढ़ि-बढ़ि माटी मे मिलि जाय
चंदा उपरे भागल जाये निज उद्‌गार मे।।झगड़0।।
अब के करता देषक सेबा, मंगता अलगे-अलगे खेबा
सुखबा होयतई काल कलेबा, एहि तकरार में।।झगड़0।।
जहिया जेकरा माथा टनके, सुधि वुधि बिसरि जाय तन मन के
इर्षा व्यथित करत जीवन के अपन परार मे।।झगड़0।।
हमरा देशक माथा नेता, भरिसक नाहक अपयश लेता
जे नहिं स्नेहलता लतरैता एहि संसार मे।।झगड़0।।

156

तुलसी जयंती के अवसर पर (तुलसी परिचय)

I

विश्व नियंता की दुनियाँ में, जब बढ़ता है अत्याचार।
पाप ताप संताप शोक से, जब होता है हाहाकार।।
सकल जीव के प्राण-प्राण में, जब होता भय का संचार।
जब मानव मानवता खोकर, दानव सा करता व्यवहार।।
तब कीचड़ से कमल निकलता, लेकर सुन्दर सुखद सुवास।
कौन जानता था रमबोला, होगा एक दिन तुलसीदास।।

II

धर्म सनातन इस भारत का, सब दिन रहा सहारा है।
इसी धर्म के बल पर हमने, दुनियाँ को ललकारा है।।
मुगलों का सम्राज्य काल था, धर्म हमारा मुरझाया।
गरज उठा इस्लाम धर्म जब अनुशासन का बल पाया।।
हम दौलत तलबार के नीचे, कर्म छोड़कर हुए हतास
कौन जानता था रमवोला, होगा एक दिन तुलसीदास

III

छूटा धर्म कर्म सब छूटे स्वजनों से छूटी ममता
ढ़ील हुए हिन्दुत्व के बंधन, हिन्दी से छूटी नाता
राजापुर के विप्र आत्मा राम के घर आया माली
सब समाज के लिये सजाकर लाया एक फूल डाली
माँ हुलसी के गर्भ वाग में, रहा मचलता बारह मास
कौन जानता था रमबोला होगा एक दिन तुलसीदास

IV

माता से धरती पर आया, मुँह में लिए बतीसो दाँत
राम राम बोला रमबोला, नाम हुआ जग मे विख्यात
माता और पिता दोनों ने, दुनिया से दम तोड़ लिया
चुनियाँ भी कुछ पोसपाल कर, स्वर्ग से नाता जोड़ लिया
पार्वती माता बन आयी, पिता बने शंकर जी खास
कौन जानता था रमबोला, होगा एक दिन तुलसीदास

V
सोचो बच्चो तुलसी तेरा, कितना दीन बेचारा था
द्वार द्वार का बना भिखारी, कोई नहीं सहारा था
अन्न वसन का दर्द नहीं था, लगन लगी थी पढ़ने की
भारत का शिर ऊँचा करके ज्ञान शिखर पर चढ़ने की
ममता थी निज मातृ भूमि से, जन सेवा में था विश्वास
कौन जानता था रमवोला, होगा एक तुलसीदास

VI
परिवर्तन का चक्र निरंतर चलता रहता है दिन रात
नीचे का जल उपर जाकर, बन जाता सुखमय बरसात
राम ते अधिक राम कर दासा, राम से तुलसी बढ़कर है
राम का मन्दिर कहीं कहीं है तुलसी चौड़ा घर-घर है
तेरा नाम धराकर पौधा,
भी जब पाता पुण्य प्रवास
कौन जानता था रमबोला होगा एक दिन तुलसी दास
जग मंगल कल्याण भावना, कवि था तेरा लक्ष्य विराट
ग्राम्य गिरा के तू सपूत थे, अखिल विश्व के कवि सम्राट

चुका न सकता कविवर तेरा, ऋण कोई इन्सान कभी
भुला न सकता स्नेहलता का, लतराना विद्वान कभी
आज जयंती में दर्शन दो, लेकर आया हृदय हुलास
कौन जानता था रमबोला, होगा एक दिन तुलसीदास।

157

रामचरित मानस गुणगान

मानव में मानवता दायक, रामायण विज्ञान है।
पढ़ो सुनो गाओ अपनाओ, तब तेरा कल्याण है।।
त्रेता में रावण के भय से काँप रहा था जग सारा
धर्म के पथ पर चलने वाला फिरता था मारा-मारा
तभी राम अवतार हुआ था, उसी राम का ज्ञान है।।पढ़ो सुनो0।।
जैसे मजुरिम चरित से अपने, सजा रिहा पा जाते हैं
राम चरित मानस में राम हैं बैठे, वही राम भगवान हैं।।पढ़ो सुनो0।।
रामचरित मानस तुलसी ने लिखा राम से मिलने को
विश्व शाँति की फुलवारी में फूल कमल का खिलने को
राम चरित मानस दुनियाँ में भारत का अभियान है।।पढ़ो0।।
राम चरि अपना कर ही हम राम राज्य पलटायेंगे
घर घर को सम्पन्न बनाकर स्नेहलता लतरायेंगे।
ग्रंथ न समझो, ग्रंथ नहीं है, तुलसी का अरमान है।।पढ़ो सुनो0।।

158

तुलसी जयंती की सेवा में
एक उदगार
राम चरित मानस में तुलसी
मानवता छहराये राम की
गरीमा माथे।
आत्मा राम की अन्तर ज्योति
माता हूलसी शिप के मोटि
राजा पुर को अमर बनाया
जिवन ज्योति जगाये राम की
गरीमा गाये।
मदद किया हनुमान ने आकर
बन सहारा गौरी शंकर

नरहरि दास से शिक्षा पाकर
विश्व कवि कहलाये राम की
मुगलकाल के अनुसासन में
हिन्दु धर्म परा लासन में
तुलसी दास ने मानस रचकर
हिन्दू धर्म बचाये राम की
महिमा गायें।
तुलसीदास की जीवना गाथा।
स्नेहलता का हृदय बनाया।
आज जयन्ती के अवसर पर
तुलसी चरित सुनायें रामचरित

159

शब्द ही कवि का जीवन है

शब्द ब्रह्म है मूक गगन का,
शब्द है सरबस कवि के मन का
बिना शब्द के नर्क है जीवन, कवि का यही सजीवन है।
।।शब्द ही कवि0।।
सृष्टि बसी शिव के डमरू से, चौदह शब्द निकल आये
वही शब्द मानव जीवन में, चौदह भाषा बन पाये
इसके बल ही हर प्राणी है, यह समाज का दर्पण है।।
।।शब्द ही कवि0।।
शब्द ब्रह्म है, अर्थ है माया, अजर अमर अविनाशी है
सृष्टि प्रलय लौं शब्द मचलता, सत्ता इसकी दासी है
प्रलय काल भी नहीं सताता, कवि के उर का चिंतन है
।।शब्द ही कवि0।।
स्नेहलता भी मधुर शब्द है, स्नेह बिना संसार नहीं
स्नेह शब्द ही जग अधार है, स्नेह बिना करतार नहीं
स्नेह स्नेह का भरा खजाना, स्नेह शब्द ही बंधन है।
।।शब्द ही कवि0।।

160

कविता

कविता ममता की धारा है
सचमुच गंगा की धारा है।।
काव्य कला के पावन जल में
भावुकता के हृदय स्थल में
गंगा मानो मरूभूमि में अमृत बूँद उछारा है।।0।।
प्रेम की धारा नित अविरल है
प्रेम का पानी अति निर्मल है
मचल रहे है शब्द मीन सब, गलथल शुभ्र किनारा है।।0।।
जग अपना है गैर नहीं है
हृदय-हृदय में बैर नहीं है
आओ हृदय से हृदय मिलालो, हमने हृदय पसारा है।।0।।
गंगे तेरा आभारी हूं
'स्नेहलता' की फूलबारी हूँ
एक बार इस बाग में आकर, कह दो फूल हमारा है।।0।।

161

राखी

राखू एहो राखी केर लाज मेरे भइया।
राखू एहो राखी केर लाज।।
मधुर खो आय बहिनी तिलक लगाओल
गहि लेल भइया जी के हाथ
भइया एहो बहिनी के सुधि न बिसारब
एहो थिक ममता के लाथ मोरे भइया।।राखू0।।
एहि रे भरोसे भइया राखी हम बान्हल
बनल रहब सिरताज
कखनो निकट भय शोक न आओत
आदर करत समाज मोरे भइया।।राखू0।।
भाई सौ बिछुड़ि हम एक दिन जायब
धै लेब अनकर हाथ
तैयो नहिं बिसरब भाई के सुरतिया
हियरा रहत तोरे साथ मोरे भइया।।राखू0।।

लतिका सनेह एहो राखी पद गाओल
एहो थिक जगक रेबाज
खोइंछा भरल भाई अनधन सोनमा
गद्‌गद्‌ भेल समाज मोरे भइया।।राखू0।।

162

मुंडन संस्कार

यह मुंडन अतिशय सुखमय हो,
चूड़ाकरण सुमंगल मय हो।
प्रिय रजनीश अमर पदपावे,
नित विकाश का सूर्य उदय हो।
यह मुंडन।।
प्रिय परिवार का अनुपम मोती
मातु-पिता की अनंत ज्योति
तेरी प्रतिभा जगमग होगी,
गुण गरिमा का नित-संचय हो।। यह मुंडन,
सुख सम्पति निशिदिन घर आवे
ऋधि-सिद्‌धि आनन्द मनाबे
सुषमा से नित-नव परिचय हो।।यह0।।
भारत माता के सपूत हो
शान देश के राजदूत हो
ग्राम डरोड़ी के सपूत हो, तुमसे दूर विषाद हो।।यह0।।

163

आशीर्वाद

यह सम्बन्ध सदा सुखमय हो,
वर कनेयाँ में अमर प्रेम हो,
दोनो दोतन एक हृदय हो।।
दोनो के परिवार बाग में
सुमनो के सुरभित पराग में
भाव भ्रमर का मधुमय गुंजन
शुचि सुगन्ध किसलय-किसलय हो।।यह0।।

मंगल मोर मगन मन नाचे
प्रेम पपीहा पी-पी बाचे
कुशल कोकिला कुशल मनाबे, नित विकास का सूर्य उदय हो।।यह0।।
जीवन लक्ष्य रहे शुभकारी
आशीष देगी दुनियाँ सारी
'स्नेहलता' लतराय परस्पर, जग मंगल का नित अभिनय हो।।यह0।।

164

फलदान गीत

यह फलदान सुमंगल मय हो।।
स्कल सुमंगल मंगल गावे, शकुन का शकुन मनाबे
आज समाज उछाह उमंगित, गणपति, शारद सदा सदय हो।।यह0।।
उभय पक्ष परिवार वाग में, मन मधुकर के मधुर राग मे
प्रेम पपीहा पी पी झूले, शुभ वसंत का नव अभिनय हो।।यह0।।
महा मगन मन मधुरितु माली, कुशल कोकिला डाली-डाली
कूक कूक कर लगन मनाबे, शुचि सुगन्ध किसलय-किसलय हो।।यह0।।
तरूणाई के प्रथम मोड़ पर, प्रकृति पुरूष में गाँठ जोड़कर
रचते हैं संसार सुहावन, नित विकास का सूर्य उदय हो।।यह0।।
खुशिहाली है नगर-नगर में, स्नेहलता लजरे घर-घर में
सबका आशीर्वाद रहे, वर कनेयाँ मिलकर एक हृदय हो।।यह0।।

165

निवेदन

भजन
हे हरि की करू किछु न फुरइया
कर्म भूमि में अकर्म अछी
जीवन कहल लग छंट से पुत्र
जानत बल छुल
मन हलचल
हलचल से मूदित छल ये ली
भरथि अहां के हम दिगस
जमैली समुहिग होर न

166

श्री जिलाधीश का अभिनन्दन पत्र

श्रीवास्तव जी आज पधारे
पूर्ण मनोरथ हुट हमारे।।
आज आपके सुभ दर्शन से
दुरदिन हमसे हुए किनारे
श्रीवास्तव जी।।0।।
जिला समस्तीपूर के नायक
जिला की जन्ता के सुख दायक
आर.के. श्रीवास्तव जी सहसा हम
दीनों के बन सहारे
श्रीवास्तव जी।।0।।
आशा थी विस्वास नहीं था,
पुन्य भी मेटे पास नहीं था।
कैसे सबको दर्शन देकर किया
कृतारथ संकट हारे
श्रीवास्तव जी।।0।।
दुर्दिन में भी कष्ट उठायचे दीन हीन
के ग्राम मे आये
शुभागमन से विद्यालय के
चमक रहे हैं आगे सितारे
श्रीवास्तव जी।।0।।
अभिनंदन का ज्ञान नहीं है
सेवा का सामान नहीं है।
हो न सकेगा समुचित स्वागत
हम सब हैं मन हिम्मत हारे
श्रीवास्तव जी।।0।।
अब हमको अपनाना होगा
स्नेहलता लतराना होगा।
सब को गले लगाना होगा
मिलने को हैं भुजा पसारे
श्रीवास्तव जी आज पधारे।

167

स्नेहलता की छिटपुट रचनाएँ

बिन देखे नहिं चैन,
बनकर आइये प्यासे सबके नैन

आकर पूछे ध्यान
रहे सूखे नहिं स्नेहलता के नैन

168

सद्विवेक, सुषमा सरसाबे
मंगल नित नव मंगल गावे
कभी कुपथ पर पाँव न जावे,
स्नेहलता का तू ही एक
तू ही उसको रह दिखावे

169

स्नेहलताक अन्तिम अपूर्ण रचना

अहाँ के भरोसे आब हमरो जिवनमा हे किशोरीजी हे
ताकु कने पलक उठाय हे किशोरीजी हे
सकल जनम मोर स्वारथमे बीतल हे किशोरीजी हे
आब लागय दुनिया अन्हार हे किशोरीजी हे …..

7. निष्कर्ष

स्नेहलता ने उत्तर बिहार में प्रचलित लोक गीतों की सभी विधाओं- सोहर, समदाऊन, झूमर, कजरी, पूरबी, पराती, महेशवाणी, नचारी, डोमकछ, समा चकेवा, होली-फाग, चैतावर का प्रयोग प्रचूर संख्या में और सिद्धहस्त ढंग से किया है। उनके गीत हमारे सांस्कृतिक धरोहर हैं। स्नेहलता के गीत जाति साम्प्रदाय से ऊपर उठकर आत्मिक उन्नयन का मार्ग प्रशस्त करते हैं। यही कारण है कि वे सभी जाति सम्प्रदाय में समान रूप से समादृत हैं। उनके गीत मधुरोपासना का प्रतिनिधित्व करते हैं फलतः नारी पुरुष भेद से भी मुक्त है। वे हम सबके साझा सांस्कृतिक पहचान बन चुके हैं।

अबतक के शोध में सामने आए स्नेहलता के काव्य कर्म को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि-

1 स्नेहलता जनपद के कवि हैं।
2 इनकी रचनाओं में गज़ब का लोक तत्व है।
3 इनकी रचनाओं में गेयता भरपूर है और इन्हें लोक गीत, सुगम संगीत और शास्त्रीय संगीत के स्वरूपों में गाया जा सकता है।
4 ये आशु कवि रहे हैं और अपने जनपद के लोगों के अनुरोध पर निस्वार्थ भाव से उनकी आवश्यकता के अनुसार उन्हें रचनाएँ लिखकर देते रहे।
5 वे सहृदय थे और सीता व राम के प्रति समर्पित थे।
6 बावजूद इसके, मिथिला की परंपरा के अनुसार राम और सीता के अतिरिक्त इनहोने अन्य देवी-देवताओं, यथा- शंकर-पार्वती, कृष्ण, सरस्वती आदि के भी गीत रचे हैं।
7 ये आधुनिक और समसामयिक सामाजिक चेता थे। नतीजन, उस समय की सामाजिक, राजनीतिक स्थितियों को देखते हुए सामाजिक जन जागरूकता के भी गीत लिखे।
8 मिथिला के विवाह गीत और गाली गीतों को उन्होने पूरी मिथिला में सामाजिक स्वीकारोक्ति इस रूप में दिलाई कि ये गीत मिथिला के शादी-ब्याह के समय गाने के लिए अनिवार्य हो गए।
9 इनके गीतों में अद्भुत लालित्य और सरलता-सहजता है, जिसके कारण इनके गीत इतने जन-प्रसिद्ध हो सके।
10 भक्ति और शृंगार- ये दोनों ही धाराएँ साथ-साथ चलीं।
11 घर की महिलाओं, यथा अपनी बहू और बेटियों को भी गाने के लिए प्रोत्साहित किया।

ध्यान देने योग्य बातें-

1 स्नेहलता के गीत अभी भी प्रचुर मात्रा में हैं और इन्हें संकलित किया जाना अनिवार्य है। ये गीत आज देश और मिलथिला की सामाजिक व सांस्कृतिक धरोहर हैं।

2 स्नेहलता के रचनात्मक अवदान को समीक्षात्मक ग्रंथ के रूप में अभिलिखित किया जाना आवश्यक है, ताकि इनकी काला मर्मज्ञता पर आगे शोधार्थियों, संगीत और गीत के रसिकों को सामग्री मिल सके।

3 स्नेहलता के साहित्यिक अवदान और एक साहित्यकार के रूप में उनका मूल्यांकन अनिवार्य है, ताकि वे केवल जनपद के कवि और लोक गायक बनाकर न रह जाएँ।

4 स्नेहलता का अपना निजी जीवन भी एक फिल्म -कथानक की तरह आकर्षक है। एक पुरुष होते हुए भी स्त्री नाम रखना और अपने मूल नाम को उसमें विलीन कर देना आज भी बड़े साहस का काम है। इसपर कम से कम एक नाटक, एक वृत्तचित्र और एक फिल्म बनाना आवश्यक है।

5 स्नेहलता द्वारा आयोजित राम जानकी विवाह की परंपरा को डॉकयुमेंट करना।

अनुरोध-

मेरा यह कार्य संगीत नाटक अकादमी के अत्यल्प स्वीकृत अनुदान में किया गया है, जो अनुदान की स्वीकृत अत्यल्प राशि से बढ़कर है। अदाकामी से अनुरोध है कि स्नेहलता के शोध कार्य को आगे बढ़ाने के लिए और उसे एक परिपूर्णता देने के लिए इसके आगे की स्वीकृति दें। इसके लिए मैं अकादमी की अत्यंत आभारी रहूँगी।

6

आभार

स्नेहलता के कार्य को करने के लिए मैं जैसे-जैसे इसमें घुसती गई हूँ, मैं इसमें खोती गई हूँ। मैं सबसे पहले संगीत नाटक अकादमी और इसकी समस्त टीम के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होने मुझे स्नेहलता के काव्य कर्म पर शोध करने की अनुमति देकर मुझे भी स्नेहमयी कर दिया। जैसे-जैसे स्नेहलता को जान रही हूँ, इनके प्रति श्रद्धा और अपनी मिथिला की संस्कृति, साहित्य, रीति-रिवाज और इसकी माटी के प्रति गहरे आसक्ति भाव से भरती जा रही हूँ। यह अकादमी का उपकार है मुझपर कि इस पुनीत कार्य को करने की ज़िम्मेदारी मुझे देकर सार्थक कार्य कर सकने का अपना और मेरा विश्वास मजबूत किया।

मैं आभारी हूँ मुकेश सागर की, जिनके साथ के संभाषण ने मुझमें स्नेहलता को जानने की ललक पैदा की। मेरा आभार सर्वश्री योगानन्द झा, कन्हैया जी, शारदा सिन्हा सहित ग्राम दरोडी के सभी नागरिकों के प्रति है, जिनके सहयोग से यह कार्य मैं सम्पन्न कर पाई। फिल्म मेकर श्रीराम डाल्टन की आभारी हूँ, जिन्होने आरजी श्याम और राज जैसे दो युवा मुझे दिये, जो मेरे साथ-साथ स्नेहलता को अभलिखित करने में मेरे मदद करते रहे। संजय कुमार जी की आभारी हूँ, जिन्होने अपनी तमाम अस्वस्थता के बावजूद मुंबई आकर स्नेहलता के शोध कार्य को कागज पर उतारने और उसे कंप्यूटरीकृत करने में मेरी मदद की।

स्नेहलता के शोध कार्य का वह बड़ा विकट समय था। जिस दिन मैं मुंबई से पटना गई, उसी दिन शाम में मेरे पति अजय ब्रह्मात्मज का सड़क दुर्घटना में घुटना टूट गया। खुद चलकर वे अस्पताल पहुंचे, भर्ती हुए। डॉक्टर ने तुरंत मेजर ऑपरेशन की सलाह दी। परंतु, उन्होने न केवल अपने दम पर ऑपरेशन करवाया, बल्कि मुझे स्नेहलता के काम को करने के लिए दरोडी जाने, वहीं रहने और काम को पूरा करके आने की न केवल सलाह, बल्कि हिदायत दी। बीमारी और ऑपरेशन और उसके बाद की सारी देखरेख का जिम्मा उठाया अनुप्रिया वर्मा, अमित सिन्हा, अमित कर्ण, आदित्य प्रसाद, अरुणोदय प्रसाद, रघुवेंद्र सिंह, प्रणय नारायण, अनिता मण्डल, माला आदि ने। इन सबके प्रति अपना आभार व्यक्त किए बिना यह अध्याय पूरा नहीं हो सकता, जो मुझे शोध के दरम्यान घर की तमाम चिंताओं से मुक्त रखते हुए स्नेहलता के शोध कार्य को कराते रहने में मेरा मानसिक संबल बने।

मुझे यकीन है, आप मेरे बारे में जानकर खुश होंगे!

नाम : विभा रानी

वेब साइट: http://chhammakchhallokahis.blogspot.com/

संपर्क: 9820619161/ samrathvibha2019@gmail.com

1 कलात्मक व शैक्षिक पृष्ठभूमि -

- नाट्य कला में प्रशिक्षण, अभिनय, कॉस्ट्यूम एंड प्रोडक्शन-, 'अनुकृति नाट्य मंच', नई दिल्ली, 1987
- वॉयस मॉड्यूलेशन, स्क्रिप्ट राइटिंग, टूल्स एंड टेक्नोलॉजी इन ब्रॉडकास्टिंग एंड रिकॉर्डिंग के लिए ट्रेनिंग, ऑल इंडिया रेडियो, दरभंगा (बिहार), भारत, 1983
- बैचलर इन एजुकेशन (B Ed), ललित नारायण मिथिला यूनिवर्सिटी, बिहार, भारत, 1983
- मास्टर इन आर्ट्स (MA-हिंदी), ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, बिहार, भारत, 1982
- बैचलर इन आर्ट्स (BA-हिंदी ऑनर्स), ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, बिहार, भारत, 1982

2 लेखक/कलाकार के रूप में मेरी उपलब्धियां-

हिंदी और मैथिली साहित्य (कविता, कथाएं, नाटक लेखन और मैथिली से हिंदी में अनुवाद), रंगमंच, फिल्म कलाकार और मैथिली लोक कथा व लोक गीत प्रस्तोता। 'रंग जीवन' मेरा दर्शन है, जिसके तहत रंग का भारतीय परिप्रेक्ष्य में अर्थ है- जीवन के हर तत्व में आनंद के रंग खोजना, जो मानव मन के लिए सुखद है। फिल्म, टीवी और थिएटर आर्टिस्ट के तौर पर Color Yellow Productions, YRF, Sacred Grove Entertainment Pvt. Ltd, Ukey Films (Marathi), SK Media के साथ काम किया है । **ताजा रिलीज फिल्म 'लाल कप्तान' में 'लाल परी' के रूप में।**

2014 में, मैंने 'AVITOKO रूम थिएटर' शुरू किया - हाशिए पर पड़े वास्तविक जीवन के लोगों को सशक्त और रंगमंच की ओर उन्मुख करने और उन्हें वापस लाने के आग्रह के साथ, जिन्होंने अविस्मरणीय पात्रों के रूप में एक कवि, लेखक, नाटककार और गीतों के रूप में मेरे लेखन को आबाद किया है। उदाहरण के लिए, मेरे मैथिली 'गाली गीत' मंडली में मेरी अपनी घरेलू मददगार और उनके पड़ोस की अन्य मैथिल महिलाएं हैं, जो घर-घर काम करके अपनी आजीविका कमाती हैं । पारंपरिक गीत और कहानियां जो मेरे लेखन और प्रदर्शन को ईंधन देते हैं, वे मैथिली महिला गीत और मैथिली महिलाओं की कहानियां हैं।

दशकों के साहित्यिक, प्रदर्शनात्मक और मीडिया प्रयासों के बल पर बाईस से अधिक पुरस्कार प्राप्त । अपने प्रदर्शन के साथ भारत और विदेशों में व्यापक रूप से यात्राएं । चौबीस से अधिक नाटक, पांच फिल्में, दो टेलीविजन धारावाहिक लिखे और प्रदर्शित और बाईस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित। 2013-2014 में कैंसर का इलाज चला। इस अवधि में लिखी कविताएं द्विभाषी रूप में छपीं ' समरथ/CAN' और उसके बाद दूसरा संग्रह ' क्यूंकि ज़िद है/I Must ' शीर्षक से। इस संग्रहों से आई सहायता राशि का उपयोग कैंसर से जूझ रहे रोगियों की सहायता के लिए किया जाता है।

3 मेरे कुछ सबसे महत्वपूर्ण पुरस्कार और फैलोशिप/अनुदान

- संगीत नाटक अकादमी, भारत सरकार, 2016 द्वारा अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (आईसीएच) अनुदान
- सर्वश्रेष्ठ महिला अभिनेता- नाटक 'आओ तनिक प्रेम करें', महाराष्ट्र सरकार, 2013
- आचार्य विष्णुदास भावे पुरस्कार - नाटक लेखन - 'दूसरा आदमी, दूसरी औरत', महाराष्ट्र सरकार, 2011
- व्यंग्य लेखन के लिए 'लाडली मीडिया पुरस्कार, 2009' ब्लॉग chhammakchhallokahis.blogspot.com, के लिए
- मोहन राकेश सम्मान - नाटक लेखन 'आओ तनिक प्रेम करें' के लिए - साहित्य कला परिषद, नई दिल्ली, 2005
- मोहन राकेश सम्मान - नाटक लेखन- 'अगले जनम मोहे बिटिया ना कीजो' - साहित्य कला परिषद, नई दिल्ली, 2005
- क्रिएटिव राइटिंग के लिए कथा पुरस्कार - मैथिली लघु कथा 'रहथु साक्षी छठ घाट', नई दिल्ली, 1999
- माहेश्वरी सिंह 'महेश' सम्मान, पटना- मैथिली कथा संग्रह "खोह से निकसइत" हेतु

4 कविताओं, नाटकों, मैथिली गीतों, गाली गीतों के भारत और विदेशों में हुए प्रदर्शन

विदेश

- हेलसिंकी, फिनलैंड- 'नमक: स्वाद गाने और खाने का'- मिथिला के गाली गीतों की प्रस्तुति, 2017
- अबू धाबी और दुबई में एकल नाटक 'बिम्ब-प्रतिबिंब', 2012
- हेलसिंकी, फिनलैंड- एकल नाटक का प्रदर्शन 'Life is not a Dream', 2007

- पेईचिंग में हिंदी भाषा संकाय, ईचिंग विश्वविद्यालय, 1987

भारत

- 100 Thousand Poets for Change (100 TPC), 2019 में मेरे दूसरे द्विभाषी कविता संग्रह "क्यूंकि ज़िद है- I Must" का लोकार्पण और "कर फतेह हर किल्ला" शीर्षक के तहत इनकी नाट्य प्रस्तुति। विशेष उल्लेख- 2015 से 100 TPC में कविताओं की अलग-अलग मूड और शैली में प्रस्तुति।
- अक्टूबर, 2019 में लखनऊ के जनवादी लेखक संघ में काव्य पाठ, जहां अपनी हस्ताक्षर कविता "गाजर हलवा" के साथ अपनी कविता "हम हैं रेपिस्तान" का पाठ।
- आईपीपीएल, मुंबई चैप्टर के सहयोग से आयोजित विश्व काव्य महोत्सव, जून, 2019 में 'नो वॉर-हग पीस' के तहत हिंदी और मैथिली कविताओं का पाठ।
- "अमर उजाला", नई दिल्ली (हिंदी दैनिक) के "काव्या" में काव्य पाठ- मई, 2019, जहां "हम हैं रेपिस्तान", "औरत बोले तो मुसीबत" के साथ-साथ मेरी हस्ताक्षर कविता "गाजर हलवा" का पाठ।
- मार्च, 2019 में लोखंडवाला काव्य क्लब, मुंबई में "औरत बोले तो मुसीबत" के साथ-साथ मेरी हस्ताक्षर कविता "गाजर हलवा" का पाठ।
- नाटकों, कहानियों, कविताओं, गाली गीत प्रस्तुरी के अन्य स्थान- दिल्ली, कोलकाता, हैदराबाद, बैंगलोर, चेन्नई, पटना, सहरसा, मधुबनी (बिहार), इलाहाबाद, वाराणसी, लखनऊ, कानपुर (यूपी), इंदौर, खंडवा, भोपाल (एमपी), रायपुर.... और यह यात्रा जारी है।

5 **भाषा ज्ञान-**

हिन्दी, मैथिली, अँग्रेजी, बांग्ला, भोजपुरी

6 **लेखक, चिंतक, कवि, कथाकार, रंगकर्मी के रूप में आमंत्रित-**

- भोपाल के रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 'विश्व रंग-टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव, 2019' में एक लेखक के रूप में आमंत्रित, जहां अठारह खंडों में हिंदी लघु कहानियों का संकलन "कथादेश" शीर्षक के तहत जारी, जिसमें मेरी लघु कहानी 'बेमुदत' समकालीन कहानियों की 12वीं मात्रा में संकलित।

- मैथिली साहित्य महोत्सव, नई दिल्ली, 2019 में एक पैनलिस्ट के रूप में, उदय नारायण सिंह 'नचिकेता', अजीत आजाद, शिवशंकर श्रीनिवास, डॉ. बिभा कुमारी, सतीश वर्मा, मॉडरेटर- चंदन कुमार झा के साथ दो चर्चाओं में सहभागिता।

- सोई मेला, कोलकाता, 2017 में एक गाली गीत प्रस्तोता के रूप में

- बेंगेलुरू काव्य महोत्सव, 2016 में कवि व लोक प्रस्तोता के रूप में। द्विभाषी काव्य संग्रह 'समरथ/CAN का विमोचन और 'पॉपकॉर्न ब्रेस्ट्स' शीर्षक से कविताओं की नाट्य प्रस्तुति

- कथा महोत्सव, 2015, पटना (बिहार) - एकल रंगमंच कलाकार के रूप में, जहां अपने लोक एकल नाटक 'नौरंगी नटनी' का प्रदर्शन।

- रायपुर साहित्य महोत्सव, 2014- में शेखर सेन, सुभाष मिश्रा के साथ 'रंगमंच और इसकी चुनौतियों' में एक पैनलिस्ट के रूप में और नादिरा बब्बर, विनय पाठक, दर्शन जरीवाला के साथ मोडरेटर और फेस्टिवल क्यूरेटर के रूप में।

- जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल, 2013 में उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' और तरानंद वियोगी के साथ पैनलिस्ट 'एक भाषा हुआ करती है' के रूप में। मॉडरेटर- रवीश कुमार। विक्रम संपत के साथ काव्य पाठ।

- बेंगेलु साहित्य महोत्सव, 2013 में रंगमंच पर सत्र के लिए एक पैनलिस्ट व राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय कवियों के साथ कविता पाठ (मैथिली)।

- समन्वय, 2012, दिल्ली- इंडियन हैबिटेट सेंटर द्वारा आयोजित साहित्य महोत्सव में उदय नारायण सिंह 'नचिकेता', देव शंकर नवीन और गजेंद्र ठाकुर के साथ 'मैथिली- अपनी भाषा' के लिए एक पैनलिस्ट के रूप में। मॉडरेटर- अरविंद दास

- बाईस पुस्तकें प्रकाशित - मूल के साथ-साथ हिंदी और मैथिली में अनुवाद, भारतीय ज्ञानपीठ, वाणी प्रकाशन, किताबघर, समिक प्रकाशन, रेमाधव प्रकाशन (सभी नई दिल्ली) परिद्ध्या प्रकाशन (मुंबई) द्वारा प्रकाशित

- भारतीय ज्ञानपीठ से- उपन्यास- राजा पोखरे मेइन किन्नी माचलियान (प्रभास कुमार चौधरी) और पटखेप (लिली रे), मैथिली से हिंदी में अनुवादित।

- वाणी प्रकाशन से- हिंदी कथा संग्रह- बंद कमरे का कोरस (घनश्यामदास सर्राफ सम्मान, 1999 से सम्मानित), चल खुसरो घर आपने।

- 'बिल टेलर की डायरी' और 'संबंध' के शीर्षक के तहत लिली रे के दो मैथिली कथा संग्रह का अनुवाद

- 'गोनू झा के किस्से' शीर्षक से मिथिला की लोक कथाएं

- किताबघर, नई दिल्ली से अबतक प्रकाशित सभी पांच नाटक- ‘आओ तनिक प्रेम करें’, ‘अगले जनम मोहे बिटिया ना कीजो (मोहन राकेश सम्मान, 2005 से सम्मानित), ‘पीर पराई’, ‘मियाँ मुसलमान’, ‘दूसरा आदमी दूसरी औरत’ (आचार्य विष्णुदास भावे सम्मान, 2011 से सम्मानित)
- रेमाधव पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली से कथा संग्रह- 'इसी देश के इसी शहर में’, और 'कर्फ़्यू में दंगा’, लिली रे के नोवेला 'जिजीविषा’ का हिन्दी अनुवाद
- परिदृश्य प्रकाशन, मुंबई से ‘मिथिला की लोक कथाएं’ शीर्षक से मिथिला की लोक कथाओं का प्रकाशन
- NotNul.com, लखनऊ से ई-बुक - एकल नाटक 'मैं कृष्णा कृष्ण की'- 2018

आपके ताजा संदर्भ के लिए कुछ लिंक-

In conversation with Taranand Viyogi and Udaya Narayana Singh moderated by Ravish Kumar, Jaipur Literature Festival, 2013

https://www.youtube.com/watch?v=tJ5L1uOs_oE-

Gaali Singing : Vibha Rani in Hindi Studio with Manish Gupta

https://youtu.be/Z16O5yLhAo0

Tulsi Katha: Vibha Rani in Hindi Studio with Manish Gupta

https://youtu.be/UtpAHISGGS4

In conversation with Breast Cancer survivor Vibha Rani | The Lallantop

https://youtu.be/yiP1aZxXF5A

Kavya, Amar Ujala poetry recitation
https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=2315034958763585&id=1907307216203030

अनुक्रम **पृष्ठ संख्या**

1. प्रस्तावना **02**

3. स्नेहलता- एक परिचय **05**

4. स्नेहलता पर विभिन्न व्यक्तित्वों के साक्षात्कार **10**

सर्वश्री-

2. शारदा सिन्हा (पद्मभूषण)- प्रख्यात लोक गायक
2. योगानन्द झा- स्नेहलता नामक मोनोग्राफ व मैथिली के लेखक
3. कन्हैया जी - स्नेहलता के गीत गायक व स्नेहलता के पोते।
4. मुकेश सागर, रंगकर्मी व ग्रामीण । इस शोध कार्य के मूल प्रेरणा स्त्रोत।
5. मोहन भारद्वाज (मैथिली के लब्ध प्रतिष्ठ आलोचक। अब दिवंगत)
6. अशोक- (मैथिली के सुप्रसिद्ध कथाकार व संपादक)
7. मिथिलेश जी- स्नेहलता के पोते
8. सीताराम ठाकुर- (वृद्ध ग्रामीण और स्नेहलता के शिष्य व गायक)
9. धवेन्द्र
10. श्रीकांत ठाकुर- स्नेहलता के बेटे
11. शिक्षक पोता
12. दिनेश ठाकुर- स्नेहलता के पोते व गायक
13. सुनैना देवी- स्नेहलता की बहू
14. रेणु देवी, उषा देवी, किरण देवी, लावली कुमारी, शलिनी कुमारी- स्नेहलता की भतीजी व पोतियाँ
15. कई ग्रामीण बूढ़ा बाबा 1,2,3 आदि
16. दैनिक जागरण अखबार को लिखा गया कन्हैया जी का पत्र
17. तिकोने चौक पर स्नेहलता की प्रतिमा स्थापित करने के लिए लिखे गए पत्र का ड्राफ्ट

5. पत्र **61**

6. स्नेहलता के गीत **65**

1 भक्ति गीत

- गणेश वंदना
- सरस्वती वंदना
- शैव पदावली गौरी वंदन सहित

- कृष्ण लीला
- सीता राम वंदना

2 दरोडी गीत
3 मिथिला महिमा
4 सीता महिमा
5 ब्याह के गीत (अलग-अलग रस्मों के)
6 समदाओन
7 सोहर
8 देशभक्ति गीत
9 विज्ञान गीत
10 अन्य विविध गीत

7 निष्कर्ष 154
8 **आभार 157**
9 विभा रानी- एक परिचय 158
10 तस्वीरें & videos 165